उत्तर प्र
में
गांधी

उत्तर प्रदेश
में
गाँधीजी

उत्तर प्रदेश में गाँधीजी

लेखक
श्रीरामनाथ 'सुमन'

प्रकाशन शाखा
सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश
लखनऊ

गांधी जन्म शताब्दी

२ अक्तूबर १९६९

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशक : प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ
मुद्रक : जी० डब्लु० लारी एण्ड कम्पनी,
लालबाग, लखनऊ

दो शब्द

भारतीय लोक-जीवन में गाँधीजी का प्रवेश इस युग की, शायद सबसे बड़ी घटना है। वह हमारे जीवन में शतधा ज्योति-धारा के रूप में आये और आने के साथ ही उन्होंने हमें उस विराट 'स्वरूप' की झाँकी दी जिसे हम सदियों से भूले हुए थे। उन्होंने हमारी आत्मा को स्पर्श किया। जादू हुआ और मिट्टी के लोदों-से निर्जीव मानव अकस्मात् शेर बन गये। व्यक्ति और समाज पर चतुर्दिक छायी भय की रजनी छँट गयी और आत्म-विश्वास तथा निर्भय सत्कर्म का अरुणोदय हुआ। विश्व के इतिहास में ऐसी दूसरी घटना नहीं है जिसमें कोटि-कोटि मनुष्यों का असहाय समाज, इस प्रकार इतने थोड़े समय में, अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ हो।

निश्चय ही भारत में किसी भी अधिवासी के लिए गाँधीजी को विस्मृत करना सम्भव नहीं है। आप उनका विरोध कर सकते है, उनका तिरस्कार कर सकते हैं, उनकी प्रशंसा कर सकते हैं, उनके सिद्धान्तों का उपहास कर सकते हैं परन्तु किसी की शक्ति नहीं कि उनको अपने मानस की परिधि से निकाल सके।

उत्तर प्रदेश भारत का हृदय है। भारतीय संस्कारों की छाप इस प्रदेश पर बहुत गहरी पड़ी है। इसलिए स्वभावतः भारतीय नव-जागरण के इतिहास में उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख अध्याय है। इस अध्याय को लिखने में गाँधी जी की बहुत बड़ी देन है। सिवाय गुजरात के कदाचित् ही किसी और प्रदेश से गाँधी जी का ऐसा निरन्तर सम्पर्क रहा होगा, जितना उत्तर प्रदेश से रहा है। १८९६ में जो सम्पर्क आरम्भ हुआ, वह बराबर १९४६ तक बना रहा। जब भी समय मिलता था, वह इस प्रदेश में आते रहते थे और हमें कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर करते

रहते थे जब नही आ पाते थे तब भी लेख लिखकर पत्र व्यवहार करके सन्देश देकर अनेक रूपो म हमारा माग दशन करते थे

इस पुस्तिका में गाँधीजी के उत्तर प्रदेश के इसी जन-सम्पर्क के विविध रूपों का एक क्रमवद्ध संक्षिप्त विवरण मिलेगा। इससे यह भी मालूम होगा कि विविध रूपों मे उन्होंने हमारे लोक-जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है। इसमें पाठक को पीड़ित एवं त्रस्त वर्गों के प्रति उनकी गहन वेदना के भी दर्शन होंगे तथा भारतीय महत् संस्कार, पवित्रता, आत्म-बलिदान, निःस्वार्थ सेवा, निष्काम कर्म, अभय और अहिंसा इत्यादि जिन गुणों की वह हमसे अपेक्षा रखते थे तथा जिनका वह स्वयं मूर्तरूप थे, उनकी भी सहज अभिव्यक्ति दिखाई देगी।

आज हम गाँधीजी से दूर चले जा रहे हैं किन्तु हमारे उनके पास पहुँचने और उनको समझकर उनसे प्रकाश लेने की शायद कभी इतनी आवश्यकता नहीं थी जितनी आज है। हम जीवन के प्रत्येक मैदान में विशृंखल, विजड़ित और विघटित होते जा रहे हैं और जिन मूल्यों ने हमें एक दिन विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य से आँखें मिलाकर उसे निर्भय चुनौती देने की शक्ति प्रदान की थी, उन्हें भूलते जा रहे है। उनकी इस जयन्ती के समय, इस पुस्तिका द्वारा हम अतीत के उन शक्तिमान क्षणों की याद करलें तो अच्छा ही होगा, जब वह हमारे बीच थे।

पुस्तक लगभग मृत्यु-जैसी गहरी कौटुम्बिक वेदनाओं को झेलते हुए, अत्यन्त व्यस्त क्षणों में लिखी गयी है, इसलिए यदि उसमें कोई त्रुटि रह गयी हो तो सुधी जन क्षमा करेंगे। इसमें जो गुण हैं, वह बापू के हैं, जो दोष हैं, मेरे हैं।

प्रयाग **श्रीरामनाथ 'सुमन'**
१२-९-६९

तिथि-क्रम

उत्तर प्रदेश (तब संयुक्त प्रान्त) में गाँधीजी के आगमन की मुख्य तिथियाँ

१८९६

जुलाई ५ : अकस्मात् प्रयाग-आगमन, "पायोनियर"–सम्पादक से भेंट, संगम स्नान-दर्शन।

१९०२

फरवरी २२ या २३ : काशी-आगमन, पण्डे के घर टिके, विधिवत गंगा-स्नान, श्रीविश्वनाथ-दर्शन, एवं श्रीमती एनीबेसेण्ट से भेंट।

१९१५

अप्रैल ५ : कुम्भ मेले में हरद्वार पहुँचे।
अप्रैल ६ : गुरुकुल काँगड़ी में महात्मा मुंशीराम से भेंट।
अप्रैल ७ : ऋषिकेश, लक्ष्मण-झूला और स्वर्गाश्रम की यात्रा।
अप्रैल ८ : गुरुकुल काँगड़ी के ब्रह्मचारियों द्वारा स्वागत।
अप्रैल ९ : सूर्योदय के पूर्व आहार और उसमें केवल ५ वस्तुएँ लेने का व्रत।
अप्रैल १४ : मथुरा-वृन्दावन की यात्रा।

१९१६

फरवरी ३ : काशी-आगमन, श्रीविश्वनाथ-दर्शन।
फरवरी ४ : हिन्दू विश्वविद्यालय में भाषण।

फरवरी ५ काशी नागरी प्रचारिणी सभा मे भाषण ।
फरवरी ६-७ : काशी मे विविध कार्य ।
मार्च १८ : हरद्वार । गुरुकुल के अछूतोद्धार सम्मेलन में भाषण ।
मार्च १९ : हरद्वार में स्फुट कार्य ।
मार्च २० : गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में भाषण ।
मार्च २१-२२ : हरद्वार में स्फुट कार्य ।
मार्च २३ : आर्य-समाज भवन हरद्वार में भाषण ।
दिसम्बर २२ : म्योर कालेज इलाहाबाद में भाषण ।
दिसम्बर २३ : इलाहाबाद की सार्वजनिक सभा में भाषण ।
दिसम्बर २६-३० : लखनऊ कांग्रेस में शामिल हुए ।
दिसम्बर २८ : लखनऊ कांग्रेस में गिरमिटिया समस्या पर प्रस्ताव रखा ।
दिसम्बर २९ : लखनऊ। अखिल भारतीय एक-भाषा और एक-लिपि सम्मेलन की अध्यक्षता ।
दिसम्बर ३० : लखनऊ। विविध कार्य ।
दिसम्बर ३१ : लखनऊ। मुस्लिम-लीग अधिवेशन में हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य पर भाषण ।

१९१७

अक्तूबर ६ : इलाहाबाद। भारतीय कांग्रेस कमेटी और भारतीय मुस्लिम लीग की परिषद् की संयुक्त बैठक में शामिल हुए ।
नवम्बर २८ : अलीगढ़। लायल पुस्तकालय के मैदान और अलीगढ़ कालेज में छात्रों के समक्ष भाषण ।

१९१९

मार्च ११ : लखनऊ में सत्याग्रह पर भाषण ।

मार्च ११ : इलाहाबाद में सत्याग्रह पर भाषण ।

१९२०

जनवरी २० : इलाहाबाद । मोतीलाल नेहरू से भेंट ।

जनवरी २१ : कानपुर । स्वदेशी भण्डार का उद्घाटन ।

जनवरी २२ : मेरठ । जुलूस; आम जनता, नगरपालिका तथा खिलाफत कमेटी की ओर से मानपत्र । सार्वजनिक सभा तथा स्त्रियों की सभा में भाषण ।

जनवरी २२ : मुजफ्फरनगर । रात को ११ बजे सभा ।

फरवरी २० : वाराणसी । पंजाब के उपद्रवों पर कांग्रेस की रिपोर्ट का मस्विदा अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू को प्रेषित ।

फरवरी २१ : वाराणसी । हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सभा में भाषण ।

मई ३० : वाराणसी । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में भाग लिया ।

मई ३१ : वाराणसी-इलाहाबाद ।

जून १ : इलाहाबाद । संयुक्त हिन्दू-मुस्लिम सम्मेलन में भाग ।

जून २ : इलाहाबाद ।

जून ३ : इलाहाबाद । केन्द्रीय खिलाफत कमेटी की बैठक में असहयोग पर भाषण ।

अक्तूबर ११ : मुरादाबाद । संयुक्त प्रान्तीय सम्मेलन में भाषण ।

अक्तूबर १२ : अलीगढ़ । विद्यार्थियों से भेंट ।

अक्तूबर १४ कानपुर। भाषण।

अक्तूबर १५ : लखनऊ। भाषण।

अक्तूबर १७ : बरेली। नगरपालिका में अभिनन्दन।

नवम्बर २०-२१ : झाँसी। भाषण।

नवम्बर २३ : अलीगढ़। वहाँ होकर आगरा। सार्वजनिक सभा और विद्यार्थियों की सभा में भाषण।

नवम्बर २५, २६, २७ : वाराणसी।

नवम्बर २६ : काशी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सभा तथा सार्वजनिक सभा में भाषण।

नवम्बर २८ : इलाहाबाद। सार्वजनिक सभा में भाषण।

नवम्बर २९ : इलाहाबाद। महिलाओं की सभा में भाषण।

नवम्बर ३० : इलाहाबाद। विद्यार्थियों की सभा में भाषण।

दिसम्बर १ : इलाहाबाद। तिलक विद्यालय का उद्घाटन और भाषण।

१९२१

फरवरी ९ : वाराणसी। टाउन हाल के मैदान में सार्वजनिक सभा।

फरवरी १० : वाराणसी। काशी विद्यापीठ के शिलान्यास पर भाषण। फैजाबाद में भाषण।

फरवरी २६ : लखनऊ। खिलाफत सभा में भाषण।

मई ८ : इलाहाबाद। सरूपकुमारी नेहरू के विवाहोत्सव में शामिल हुए।

मई ९ : इलाहाबाद।

मई १० : इलाहाबाद। इलाहाबाद—जिला-सम्मेलन में भाषण।

अगस्त ५ : अलीगढ़।

अगस्त ६ : मुरादाबाद। सार्वजनिक सभा, महिला-मण्डल की तथा महाराजा थियेटर की सभाओं मे भाषण।

अगस्त ७ : लखनऊ। अमीनुद्दौला पार्क की महती सार्वजनिक सभा में भाषण।

अगस्त ८ : लखनऊ। काठियावाड़ के राजा-महाराजाओ के नाम अपील।

अगस्त ९ : कानपुर। महिलाओं की तथा वस्त्र-व्यापारियों की सभा में भाषण। नागरिकों-द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र के उत्तर में भाषण।

अगस्त १० : इलाहाबाद। महिलाओं की सभा में भाषण। शाम को स्वराज्य-सभा के मैदान में आयोजित सार्वजनिक सभा में भाषण।

अक्तूबर १६ : बलिया। जिला परिषद् में भाषण।

अक्तूबर १७ : वाराणसी। काशी विद्यापीठ की सभा में भाषण।

अक्तूबर १७ : लखनऊ। दो सभाओं में भाषण।

अक्तूबर १७ : सीतापुर। हिन्दू सभा और वैद्य सभा-द्वारा अभिनन्दन। नगरपालिका द्वारा मानपत्र।

अक्तूबर १८ : सीतापुर। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन में भाषण।

अक्तूबर १८ : सीतापुर। संयुक्त प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन में चरखा और खादी पर भाषण।

अक्तूबर १८ : सीतापुर। अस्पृश्यता-विरोधी सम्मेलन में भाषण।

दिसम्बर २३ : कानपुर पहुँचे ।
दिसम्बर २४ : कानपुर । स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन ।
दिसम्बर २५ : कानपुर । कांग्रेस-अधिवेशन में दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों से सम्बन्ध रखनेवाला प्रस्ताव ।
दिसम्बर २६ : कांग्रेस-अधिवेशन में भाषण । 'ज़माना' को सन्देश ।
दिसम्बर २७ : कानपुर ।
दिसम्बर २८ : कानपुर । मौन-दिवस ।
दिसम्बर २९ : कानपुर । एसोसियेटेड प्रेस आफ इण्डिया के प्रतिनिधि से भेंट ।

१९२७

जनवरी ७-८ : वाराणसी । गाँधी आश्रम के वार्षिकोत्सव में शामिल हुए ।
जनवरी ९ : वाराणसी । दशाश्वमेध घाट पर गंगास्नान तथा स्व० स्वामी श्रद्धानन्द को जलाञ्जलि ।
मार्च मध्य : गुरुकुल काँगड़ी के रजतजयन्ती महोत्सव में शामिल हुए ।

१९२९

जून १३ : बरेली । सभा में भाषण ।
जून १४ : हलद्वानी और ताकुला । भाषण । नैनीताल ।
जून १५ : नैनीताल । महिलाओं की सभा में भाषण ।
जून १५ : भवाली । सार्वजनिक सभा ।
जून १६-१८ : ताड़ीखेत । प्रेम विद्यालय के वार्षिकोत्सव में शामिल हुए ।
जून १८ : अल्मोड़ा, नगरपालिका का मानपत्र-ग्रहण

जून १८ से जुलाई २ तक : अल्मोड़ा और कौसानी में विश्राम ।

सितम्बर ११ से २० तक : आगरा, मथुरा, अलीगढ़ इत्यादि ।

सितम्बर २० : मैनपुरी

सितम्बर २१ : फर्रुखाबाद

सितम्बर २२ : कन्नौज

सितम्बर २२-२४ : कानपुर

सितम्बर २५-२६ : वाराणसी

सितम्बर २७-२९ : लखनऊ

सितम्बर ३० से अक्तूबर १ : फैजाबाद

अक्तूबर २ : बनारस

अक्तूबर २-३ : गाजीपुर

अक्तूबर ३ : आजमगढ़

अक्तूबर ४-७ : गोरखपुर

अक्तूबर ८-९ : बस्ती

अक्तूबर ९-१० : गोंडा

अक्तूबर १० : बाराबंकी

अक्तूबर १०-११ : हरदोई

अक्तूबर ११ : शाहजहाँपुर

अक्तूबर ११-१२ : मुरादाबाद

अक्तूबर १३ : धामपुर

अक्तूबर १३-१४ : नगीना

अक्तूबर १५ : हरद्वार

अक्तूबर १६-१७ : देहरादून

अक्तूबर १८ : मसूरी । १५ दिन विश्राम ।

नवम्बर ४ अलीगढ

नवम्बर ८ वृन्दावन

नवम्बर ११ : शाहजहाँपुर

नवम्बर १४ : कालाकाँकर

नवम्बर १५-१८ : इलाहाबाद

नवम्बर २४ : उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रान्त) से प्रस्थान।

१९३१

फरवरी २-१६ : इलाहाबाद

मई १६-२१ : नैनीताल

१९३४

जुलाई २२-२६ : कानपुर

जुलाई २२ : कानपुर। नगरपालिका और जिलापरिषद् के मानपत्र; सार्वजनिक सभा।

जुलाई २३ : कानपुर। मौन-दिवस

जुलाई २४ : कानपुर। तिलक हाल का उद्घाटन; हरिजन-सेवक-संघों के कार्यकर्त्ताओं से भेंट; विद्यार्थियों की सभा; सनातन धर्म कालेज के विद्यार्थियों का मानपत्र।

जुलाई २५ : कानपुर। लखनऊ जाना-आना। लखनऊ में महिला-सभा, बाल-सभा तथा सार्वजनिक सभा। कानपुर : विविध ज़िलों की थैलियाँ; ज़िला हरिजन-सेवक संघों के प्रतिनिधियों से मुलाकात; प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि सभा का मानपत्र; हरिजन-बस्तियों का निरीक्षण; गुजरातियों का मानपत्र।

जुलाई २६ : कानपुर। कांग्रेसवालों, जिले के हरिजन कार्य-कर्त्ताओं तथा संयुक्तप्रान्तीय खादी-विक्रेताओं से भेंट; महिला-सभा; हरिजन-वस्तियों का निरीक्षण।

जुलाई २७ : वाराणसी। सार्वजनिक कार्य।

जुलाई २८ : वाराणसी। सार्वजनिक कार्य; काशी विद्यापीठ द्वारा स्वागत।

जुलाई २९ : वाराणसी। जिलों के प्रतिनिधि-मण्डलों से मुलाकात; हरिजन-सेवक-संघ के केन्द्रीय बोर्ड की बैठक।

जुलाई ३० : वाराणसी। मौन-दिवस।

जुलाई ३१ : वाराणसी। हरिजन विद्यार्थियों का मानपत्र; सार्वजनिक सभा।

अगस्त १ : वाराणसी। हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का मानपत्र; हरिजन कार्यकर्त्ताओं की बैठक; हरिजनों की सभा; कांग्रेसवालों की बैठक।

अगस्त २ : वाराणसी। हरिजन-वस्तियों तथा कबीर-मठ का निरीक्षण; काशी की पण्डित-मण्डली का मानपत्र; महिलाओं की सभा।

१९३६

मार्च २८ : लखनऊ। ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन।

१२ अप्रैल तक: लखनऊ में विविध कार्य।

अक्तूबर मध्य भाग : वाराणसी। भारतमाता के मन्दिर का उद्घाटन। कला-भवन का निरीक्षण।

३ तक : इलाहाबाद । भारतीय
टी की बैठक ।

। कमला नेहरू अस्पताल का
।

। कमला नेहरू अस्पताल का
।

। हिन्दू विश्वविद्यालय के जयन्ती
।

। कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं से भेंट ।

६ जून तक मसूरी मे रहे ।

क्रम

इस पुस्तक में प्रकाशित चित्र अनेक माध्यमों से संकलित किये गये हैं। अधिकांश चित्र भारत सरकार के प्रकाशनों से लिये गये हैं। पृष्ठ ४३ और ४८ पर प्रकाशित चित्र श्रीमती देवकी साह, सलमगड़िया, नैनीताल से प्राप्त हुए। पृष्ठ ११९ पर प्रकाशित चित्र श्री गाँधी आश्रम, लखनऊ, से प्राप्त हुआ। हम इन सबके आभारी हैं।

: १ :

उत्तर प्रदेश से प्रथम सम्पर्क

प्रयाग में आगमन : १८९६

५ जुलाई १८९६। लगभग ११ बजे दिन का समय। आकाश में बादल घिरे हुए। फिर भी बेहद गर्मी। ऐसे समय अंग्रेजी पोशाक में एक आदमी जानसेनगंज के चौरास्ते के पास धूल भरी सड़क से ताँगे पर गुजर रहा है। वह चौकन्ना होकर चारों ओर देखता जा रहा है। थोड़ी देर बाद वह एक औषधि-विक्रेता की दुकान में घुस जाता है।

यह यात्री कौन है?

यही हैं मोहनदास गाँधी जो आगे चलकर हमारे देश के आधुनिक इतिहास के सर्वप्रधान नायक बन गये और पहिले "कर्मवीर गाँधी" फिर "महात्मा गाँधी" और अन्त में "राष्ट्रपिता बापू" के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा जिनकी आवाज पर कोटि चरण और कोटि बाहु एक साथ चलते और एक साथ उठते थे।

× × ×

दक्षिण-अफ्रीका में तीन वर्ष रहने के बाद गाँधीजी वहाँ के सार्वजनिक जीवन में ऐसे उलझ गये थे कि मित्रों एवं हितैषियों की राय हुई कि वह भारत जाकर स्त्री-बच्चों को भी ले आवें; क्योंकि पता नहीं उन्हें वहाँ कब तक रहना पड़े। जहाँ तक उस ज़माने के

इसलिए इस एक दिन प्रयाग में रह जाने का जो उपयोग गाँधीजी ने किया, वह उन्हीं के शब्दों में सुनिए :

"मैं केलनर के होटल में उतरा और वहीं से अपना काम शुरू करने का निश्चय किया। यहाँ (प्रयाग) के 'पायोनियर' पत्र की ख्याति मैंने सुनी थी। भारत की आकांक्षाओं का वह विरोधी है, यह मैं जानता था। मुझे याद पड़ता है कि उस समय मि० चेज़नी उसके सम्पादक थे। मैं तो सब पक्षों के आदमियों से मिलकर सहायता प्राप्त करना चाहता था। इसलिए मैंने मि० चेज़नी को, मुलाकात के लिए, पत्र लिखा। अपनी ट्रेन छूट जाने का हाल लिखकर उन्हें सूचित किया कि कल ही मुझे प्रयाग से चले जाना है।

"उत्तर में उन्होंने तुरन्त मिलने के लिए बुलाया। मुझे खुशी हुई। उन्होंने गौर से मेरी बातें सुनीं। मुझे आश्वासन दिया कि "आप जो कुछ लिखेंगे, मैं उस पर तुरन्त टिप्पणी करूँगा। परन्तु मैं आपको यह वचन नहीं दे सकता कि आपकी सब बातों को मैं स्वीकार कर सकूँगा। औपनिवेशिक दृष्टि-बिन्दु भी तो हमें समझना और देखना चाहिए न?"

"मैंने कहा—"आप इस प्रश्न का अध्ययन करें और अपने पत्र में इसकी चर्चा करते रहें, इतना ही मेरे लिए काफी है। शुद्ध न्याय के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं चाहता।"

'पायोनियर' का कार्यालय आज के आनन्द भवन से थोड़ी दूर प्रयाग स्टेशन के पास था। मि० चेज़नी से मिलने के बाद गाँधीजी त्रिवेणी-संगम गये और वहाँ स्नान-दर्शनादि किये। लौटकर होटल में भोजन-विश्राम किया तथा अपने भावी कार्य का विचार करते रहे।

दूसरे दिन ६ जुलाई को बम्बई के रास्ते राजकोट के लिए रवाना हो गये।

यह प्रयाग की उनकी प्रथम यात्रा थी।

यह उत्तर प्रदेश से उनका प्रथम सम्पर्क था।

आकस्मिक और अप्रत्याशित होते हुए भी यह उनके जीवन की एक प्रधान घटना है, क्योंकि यहीं "हरी पुस्तिका" (ग्रीन पैम्फलेट) नामक उस रचना के निर्माण का निश्चय हुआ, जिसके कारण नेटाल के गोरे इनके विरुद्ध इतने उत्तेजित हो उठे कि वहाँ लौटने पर, इन पर खुले आम मारक प्रहार किया और जिसके कारण इनकी ख्याति दूर-दूर तक हो गयी।

: २ :

उत्तर प्रदेश : द्वितीय सम्पर्क

१९०२

देखो तेरी काशी बच्चे, देखो तेरी काशी !

१९०१ के अन्तिम भाग में गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत के लिए रवाना हुए। स्वदेश में बसकर ही जीविकोपार्जन और जन-सेवा साथ-साथ करने का इरादा था। भारतीयों ने उन्हें प्रेमपूर्वक विदा किया किन्तु उनसे वचन ले लिया कि यदि उनकी आवश्यकता पड़ेगी तो उन्हें पुनः आना पड़ेगा।

१८ अक्तूबर को गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से रवाना हुए। पहिले मारीशस गये। ३० अक्तूबर को मारीशस के पोर्टलुई में उतरे। भारतीयों ने खूब स्वागत किया। १९ नवम्बर को वहाँ से भारत की यात्रा पर चल पड़े। १४ दिसम्बर को पोरबन्दर होकर राजकोट पहुँचे। कलकत्ता में कांग्रेस का सत्रहवाँ अधिवेशन होने जा रहा था, उसमें शामिल होने की उनकी प्रबल इच्छा थी। इसलिए १७ को राजकोट से बम्बई को रवाना हुए। १९ को बम्बई पहुँचे। बम्बई से वह उसी गाड़ी से कलकत्ता रवाना हुए जिसमें सर फीरोजशाह मेहता तथा मनोनीत अध्यक्ष डी० ई० वाछा थे। कलकत्ता में वह तिलक तथा अन्य प्रतिनिधियों के साथ रिपन कालेज में ठहराये गये। उस समय तक कांग्रेस केवल एक वाद-विवाद-सभा थी, स्वयंसेवकों या

कार्यकर्त्ताओं में सेवा की कोई भावना न थी। गाँधीजी
को अपनी सेवाएँ दीं और गन्दगी देख कई बार स्वेच्छ
काम भी किया। २३ तारीख से बीडेन स्क्वायर में सुस
में कांग्रेस का अधिवेशन आरम्भ हुआ और २७ दिसम्ब
रहा। गाँधीजी भी ५ मिनट के लिए बोले और उनका
सम्बन्धी प्रस्ताव पास हो गया। यहाँ गाँधीजी गोखले के
में आये और सदा के लिए उनके भक्त हो गये। प्रायः
कलकत्ता में रहकर विभिन्न नेताओं से परिचय और
करते रहे। वहीं प्रसिद्ध रसायनशास्त्री डा० प्रफुल्लचन्द्र
चय हुआ; गाँधीजी उनकी सादगी और सेवा से बड़े प्र
अपने ८०० रुपये मासिक वेतन में से केवल ४० रुपये अ
कर शेष सब सेवा-कार्यों में व्यय कर देते थे। कलकत्ता

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में महामना मालवीयजी गाँधीजी
का स्वागत करते हुए

थोड़े समय के लिए रंगून (बर्मा) गये। फरवरी १९०२ में पुनः कलकत्ता लौटे और वहाँ गोखले के साथ ही रहे। उनकी सलाह से उन्होंने भारत-भ्रमण का निश्चय किया। भारतीय जनता की ठीक-ठीक दशा जानने के लिए उन्होंने तीसरे दर्जे में यात्रा करने का संकल्प किया। गोखले ने उन्हें पूरी-मिठाई भरा एक टिफिन बक्स दिया। गाँधीजी ने एक कनवैस बैग खरीद लिया जिसमें वह अपना गर्म कोट, एक धोती, तौलिया और कमीज़ रखते थे। उनके पास एक कम्बल भी था। गोखले उन्हें हावड़ा स्टेशन पर छोड़ने आये थे। वह २१ या २२ फरवरी को कलकत्ता से राजकोट रवाना हुए और बीच में काशी, आगरा, जयपुर और पालनपुर में एक-एक दिन रुके।

काशी की गन्दगी और मन्दिरों के पास रहनेवाले भिक्षुकों का उन पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। अब काशी की इस पहली यात्रा की कहानी उन्हीं के शब्दों में सुनिए :

पण्डे के घर

"अब तीसरे दर्जे की यात्रा की चर्चा यहीं छोड़ कर काशी के अनुभव सुनिए। सुबह मैं काशी उतरा। मैं किसी पण्डे के यहाँ उतरना चाहता था। कई ब्राह्मणों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। उनमें से जो मुझे साफ-सुथरा दिखाई दिया, उसके घर जाना मैंने पसन्द किया। मेरी पसन्दगी ठीक भी निकली। ब्राह्मण के आँगन में गाय बँधी थी। घर दुमंजिला था। ऊपर मुझे ठहराया। मैं यथाविधि गंगा-स्नान करना चाहता था और तब तक निराहार रहना था। पण्डे ने सारी तैयारी कर दी। मैंने पहले से कह रक्खा था कि सवा रुपये से अधिक दक्षिणा मैं नहीं दे सकूँगा, इसलिए उसी योग्य तैयारी करना। पण्डे ने विना किसी झगड़े के मेरी बात मान

ली। कहा—'हम तो क्या गरीब और क्या अमीर, सबसे एक ही-सी पूजा करवाते हैं। यजमान अपनी इच्छा और श्रद्धा के अनुसार जो दक्षिणा दे दे वही सही।' मुझे ऐसा नहीं मालूम कि पण्डे ने पूजा में कोई कोर-कसर रखी हो। बारह बजे तक पूजा-स्नान से निवृत्त होकर मैं काशी-विश्वनाथ के दर्शन करने गया। पर वहाँ जो कुछ देखा उससे मन में बड़ा दुःख हुआ।

काशी विश्वनाथ

"सन् १८९१ ई० में जब मैं बम्बई में वकालत करता था, एक दिन प्रार्थनासमाज मन्दिर में काशी-यात्रा पर एक व्याख्यान सुना था। इसलिए कुछ निराशा के लिए तो वहीं से तैयार हो गया था, पर प्रत्यक्ष देखने पर जो निराशा हुई वह तो धारणा से अधिक थी। संकरी-फिसलनी गली से होकर जाना पड़ता था। शान्ति का कहीं नाम नहीं। मक्खियाँ चारों ओर भिनभिना रही थीं। यात्रियों और दूकान-दारों का हो-हल्ला असह्य मालूम हुआ।

"जिस जगह मनुष्य ध्यान एवं भगवच्चिन्तन की आशा रखता हो, वहाँ उनका नामोनिशान नहीं, ध्यान करना हो तो वह अपने अन्तर में कर ले। हाँ, ऐसी भावुक बहनें मैंने जरूर देखीं, जो ऐसी ध्यान-मग्न थीं कि उन्हें अपने आस-पास का कुछ भी हाल मालूम न होता था। पर इसका श्रेय मन्दिर के संचालकों को नहीं मिल सकता। संचालकों का कर्त्तव्य तो यह है कि काशी-विश्वनाथ के आस-पास शान्त, निर्मल, सुगन्धित, स्वच्छ वातावरण—क्या बाह्य और क्या आन्तरिक—उत्पन्न करें, और उसे बनाये रखें। पर इसकी जगह मैंने देखा कि वहाँ नये-से-नये तर्ज की मिठाई और खिलौनों की दूकानें लगी हुई थीं।

"मन्दिर पर पहुँचते ही मैंने देखा कि दरवाजे के सामने सड़े

हुए फूल पड़े थे और उनमें से दुर्गन्ध निकल रही थी। अन्दर बढ़िया संगमरमरी फर्श था। उस पर किसी अन्ध-श्रद्धालु ने रुपये जड़ रखे थे; रुपयों में मैल-कचरा घुसा रहता था।

"मैं ज्ञान-वापी के पास गया। यहाँ मैंने ईश्वर की खोज की। वह होगा; पर मुझे न मिला। इसमें मैं मन-ही-मन घुट रहा था। ज्ञान-वापी के पास भी गन्दगी देखी। भेंट रखने की मेरी जरा भी इच्छा न हुई, इसलिए मैंने तो सचमुच ही एक पाई वहाँ चढ़ाई। इस पर पण्डाजी उखड़ पड़े। उन्होंने पाई उठाकर फेंक दी और दो-चार गालियाँ सुनाकर बोले—'तू इस तरह अपमान करेगा तो नरक में पड़ेगा।'

"चुप रहा। मैंने कहा—'महाराज! मेरा तो जो होना होगा वह होगा, पर आपके मुँह से हलकी बात शोभा नहीं देती। यह पाई लेना हो तो लें, वर्ना इसे भी गँवायेंगे।' 'जा, तेरी पाई मुझे नहीं चाहिए' कह कर उन्होंने ज्यादा भला-बुरा कहा। मैं पाई लेकर चलता हुआ। मैंने सोचा कि महाराज ने पाई गँवाई और मैंने बचा ली। पर महाराज पाई खोने वाले न थे। उन्होंने मुझे फिर बुलाया और कहा—'अच्छा रख दे, मैं तेरे जैसा नहीं होना चाहता। मैं न लूँ तो तेरा बुरा होगा।'

"मैंने चुपचाप पाई दे दी और एक लम्बी साँस लेकर चलता बना। इसके बाद भी दो-एक बार काशी विश्वनाथ गया हूँ, पर वह तो तब, जब महात्मा बन चुका था। इसलिए १९०२ के अनुभव भला कैसे मिलते? खुद मेरे ही दर्शन करने वाले मुझे क्या दर्शन करने देते? महात्मा के दुःख तो मुझ-जैसे महात्मा ही जान सकते हैं। किन्तु गन्दगी और हो-हल्ला तो जैसे-के-तैसे ही वहाँ देखे।

"परमात्मा की दया पर जिसे शंका हो, वह ऐसे तीर्थ-क्षेत्रों को

देखे। वह महायोगी अपने नाम पर होने वाले कितने ढोंग, अधर्म और पाखण्ड इत्यादि को सहन करते हैं। उन्होंने तो कह रखा है:—

'ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहम्।'

अर्थात् जैसा करना वैसा भरना। कर्म को कौन मिथ्या कर सकता है? फिर भगवान् को बीच पड़ने की क्या जरूरत है? वह तो अपने कानून बतलाकर अलग हो गया।

श्रीमती बेसेण्ट के दर्शन

"यह अनुभव लेकर मैं मिसेज बेसेण्ट के दर्शन करने गया। वह अभी बीमारी से उठी थीं। यह मैं जानता था। मैंने अपना नाम पहुँचाया। वह तुरन्त मिलने आयीं। मुझे तो सिर्फ दर्शन ही करने थे। इसलिए मैंने कहा—

'मुझे आपकी तबियत का हाल मालूम है, मैं तो सिर्फ आपके दर्शन करने आया हूँ। तबियत खराब होते हुए भी आपने मुझे दर्शन दिये, केवल इसी से मैं सन्तुष्ट हूँ, अधिक कष्ट मैं आपको नहीं देना चाहता।'

"इसके बाद मैंने उनसे विदा ली।"

गोखले के पत्र में भी वही ध्वनि

गाँधीजी काशी, आगरा, जयपुर, पालनपुर होते हुए २६ फरवरी १९२० को राजकोट पहुँचे। वहाँ से ४ मार्च को जो पत्र उन्होंने गोपालकृष्ण गोखले को लिखा था उसमें भी काशी के सम्बन्ध में उनके मन पर पड़े बुरे प्रभाव की ध्वनि है:—

"गरीब मुसाफिरों के लिए बनारस शायद सबसे बुरा स्टेशन है। रिश्वत का दौरदौरा है। जबतक आप पुलिस सिपाहियों को

घूस देने के लिए तैयार न हों तबतक अपना टिकट पाना बहुत कठिन है। वे दूसरों के साथ-साथ मेरे पास भी कई बार आये और बोले कि अगर हमें इनाम (या रिश्वत!) दें तो हम आपके टिकट खरीद देंगे। कई लोगों ने इस प्रस्ताव का फायदा उठाया। हममें से जिन्होंने यह मंजूर नहीं किया, उन्हें खिड़की खुलने के बाद भी करीब-करीब एक घन्टे तक राह देखनी पड़ी। तब कहीं टिकट मिले। यदि हम कानून के इन संरक्षकों की एक-दो ठोकरों का उपहार लिए बिना ही वैसा कर पाये तो यह हमारा सौभाग्य ही समझिए। इसके विपरीत मुगलसराय का टिकट-मास्टर बहुत सज्जन था। उसने कहा कि मैं राजा और रंक में भेद नहीं करता।"

यह है गाँधीजी की दृष्टि में १९०२ ई० की काशी।

: २ :

हरद्वार के कुम्भ में : १९१५

शीघ्र ही दक्षिण अफ्रीका में ऐसी परिस्थिति उत्पन्न
ावम्बर १८०२ को गाँधीजी पुनः वहाँ के लिए बम्बई से
ौर तब से सत्याग्रह, जन-सेवा, आश्रम-जीवन के विविध
ों ऐसे लगे कि १९१४ तक भारत आने का अवसर
। १९१४ के अन्तिम भाग में दक्षिण अफ्रीका का प्रश्न
और गाँधी-स्मट्स समझौता हो जाने पर उन्होंने अ
ाल को वहाँ के काम देखने को छोड़ दिया और स्व
रवाना हुए । ९ जनवरी १९१५ शनिवार के दिन वह
थे ।

ी अल्मोड़ा में श्रीमती अरुणा आसफअली के साथ
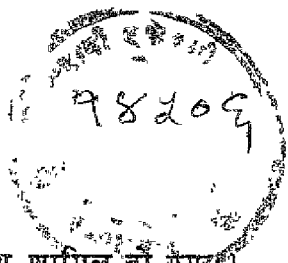
थे । मैं भी रंगून से लौटकर उनके साथ शामिल हो गया।

कलकत्ता से हरद्वार

"कलकत्ते से हरद्वार पहुँचते हुए रेल में खूब आफत उठानी पड़ी । डिब्बों में कभी-कभी तो रोशनी तक भी न होती । सहारनपुर से तो यात्रियों को मवेशी की तरह डिब्बों में भर दिया गया था। खुले डिब्बे, ऊपर से मध्याह्न का सूर्य तप रहा था, नीचे लोहे की फर्श गरम हो रही थी । इस मुसीबत का क्या पूछना ? फिर भी भावुक हिन्दू प्यास से गला सूखने पर भी इस्लामी पानी आता तो नहीं पीते । जब हिन्दू पानी की आवाज आती तभी पानी पीते । यही भावुक हिन्दू दवा में जब डाक्टर शराब देते हैं, मुसलमान या ईसाई पानी देते हैं, मांस का सत्व देते हैं, तव उसे पीने में संकोच नहीं करते । उसके सम्बन्ध में तो पूछ-ताछ करने की आवश्यकता ही नहीं समझते ।

भंगी का काम ही मेरा मुख्य काम

"हमने यह बात शान्ति-निकेतन में ही देख ली थी कि हिन्दुस्तान में भंगी का काम करना हमारा विशेष कार्य हो जायगा । स्वयंसेवकों के लिए वहाँ किसी धर्मशाला में तम्बू ताने गये थे । पाखाने के लिए डाक्टर देव ने गड्ढे खुदवाये थे, परन्तु उनकी सफाई का इन्तजाम तो वह उन्हीं थोड़े से मेहतरों से करा सकते थे, जो ऐसे समय वेतन पर मिल सकते थे । ऐसी दशा में मैंने यह प्रस्ताव किया कि गड्ढों में मल को समय-समय पर मिट्टी से ढाँकना तथा और तरह से सफाई रखना, यह काम फिनिक्स के स्वयं-सेवकों के जिम्मे किया जाय । डाक्टर देव ने इसे स्वीकार किया । इस सेवा को माँग

लेनेवाला तो था मैं, परन्तु उसे पूरा करने का बोझा
मगनलाल गाँधी।

गांधीजी १९२९ में अल्मोड़ा प्रवास के

नाभिलाषियों की भीड़

"मेरा काम वहाँ क्या था? डेरे में बैठकर जो अ
। उन्हें दर्शन देना और उनके साथ धर्म-चर्चा तथा
ा। दर्शन देते-देते मैं घबरा उठा, उससे मुझे एक मि
ात नहीं मिलती थी। मैं नहाने जाता तो वहाँ भी मु
ाषी अकेला नहीं छोड़ते और फलाहार के समय तो ए
कैसे सकता था? तम्बू में कहीं भी एक पल के लिए
ा। दक्षिण अफ्रीका में जो कुछ सेवा मुझसे हो स
ा गहरा असर सारे भारत-खण्ड में हुआ होगा, यह
ार में ही अनुभव की।

चक्की के दो पाटों के बीच

"मैं तो मानों चक्की के दोनों पाटों में पिसने लगा। जहाँ लोग पहचानते नहीं वहाँ तीसरे दर्जे के यात्री के रूप में मुसीबत उठाता, जहाँ ठहर जाता वहाँ दर्शनार्थियों के प्रेम से घबरा जाता। दो में से कौन-सी स्थिति अधिक दयाजनक है, यह मेरे लिए कहना बहुत बार मुश्किल हुआ है। हाँ, इतना तो जानता हूँ कि दर्शनार्थियों के प्रदर्शन से मुझे गुस्सा आया है और मन ही मन तो उससे अधिक बार सन्ताप हुआ है। तीसरे दर्जे की मुसीबतों से सिर्फ मुझे कष्ट ही उठाने पड़े हैं, गुस्सा मुझे शायद ही आया हो, और कष्ट से तो मेरी उन्नति ही हुई है।

पाखण्ड के दर्शन

"इस समय मेरे शरीर में घूमने-फिरने की शक्ति अच्छी थी। इससे मैं इधर-उधर ठीक-ठीक घूम फिर सका। उस समय मैं इतना प्रसिद्ध नहीं हुआ था कि जिससे रास्तों में चलना भी मुश्किल होता हो। इस भ्रमण में मैंने लोगों की धर्म-भावना की अपेक्षा उनकी लापरवाही, अधीरता, पाखण्ड और अव्यवस्थितता अधिक देखी। साधुओं के और जमातों के तो दल टूट पड़े थे। ऐसा मालूम होता था मानों वे महज मालपुए और खीर खाने के लिए ही जन्मे हों। यहाँ मैंने पाँच पाँव वाली गाय देखी। उसे देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, परन्तु अनुभवी आदमियों ने तुरन्त मेरा अज्ञान दूर कर दिया यह पाँच पैरों वाली गाय तो दुष्ट और लोभी लोगों का शिकार थी। जीते बछड़े के पैर काटकर गाय के कन्धे का चमड़ा चीर कर उसमें चिपका दिया जाता था और इस दुहरी घातक क्रिया के द्वारा भोले-भाले लोगों को दिन-दहाड़े ठगने का उपाय निकाला गया था। कौन

हिन्दू ऐसा है, जो इस पाँच पाँव वाली गाय के दर्शन के लिए उत्सुक न हो ? इस पाँच पाँव वाली गाय के लिए वह जितना ही दान दे उतना ही कम ।

"अब कुम्भ का दिन आया । मेरे लिए वह घड़ी धन्य थी । परन्तु मैं तीर्थ-यात्रा की भावना से हरद्वार नहीं गया था । पवित्रता आदि के लिए तीर्थक्षेत्र में जाने का मोह मुझे कभी न रहा । मेरा ख्याल यह था कि सत्रह लाख यात्रियों में सभी पाखण्डी नहीं हो सकते । यह कहा जाता था कि मेले में सत्रह लाख आदमी इकट्ठे हुए थे । मुझे इस विषय में कुछ सन्देह नहीं था कि इनमें असंख्य लोग पुण्य कमाने के लिए, अपने को शुद्ध करने के लिए आये थे । परन्तु इस प्रकार की श्रद्धा से आत्मा की उन्नति होती होगी यह कहना असम्भव नहीं तो मुश्किल जरूर है ।

आहार-सम्बन्धी व्रत का निश्चय

"बिछौने पर पड़ा-पड़ा मैं विचार-सागर में डूब गया—चारों ओर फैले इस पाखण्ड में वे पवित्र आत्माएँ भी तो हैं ? वे लोग ईश्वर के दरबार में दण्ड के पात्र नहीं माने जा सकते ? ऐसे समय हरद्वार में आना ही यदि पाप हो तो फिर मुझे प्रकट रूप से उसका विरोध करके कुम्भ के दिन तो हरद्वार अवश्य छोड़ देना चाहिए । यदि यहाँ आना और कुम्भ के दिन रहना पाप न हो तो मुझे कोई कठोर व्रत लेकर इस प्रचलित पाप का प्रायश्चित्त करना चाहिए, आत्मशुद्धि करनी चाहिए । मेरा जीवन व्रतों पर रचा गया है, इसलिए कोई कठोर व्रत लेने का निश्चय किया । इसी समय कलकत्ता और रंगून में मेरे निमित्त यजमानों को जो अनावश्यक परिश्रम करना पड़ा उसका भी स्मरण हो आया । इस कारण मैंने भोजन की वस्तुओं की संख्या मर्यादित कर

लेने का और शाम को अँधेरे के पहले भोजन कर लेने का व्रत लेना निश्चित किया। मैंने सोचा कि यदि मैं अपने भोजन की मर्यादा नहीं रखूँगा तो यजमानों के लिए बहुत असुविधाजनक होता रहूँगा और सेवा करने के वजाय उनको अपनी सेवा करने में लगाता रहूँगा। इसलिए चौबीस घण्टों में पाँच चीजों से अधिक न खाने का और रात्रि-भोजन त्यागने का व्रत ले लिया। दोनों की कठिनाई का पूरा-पूरा विचार कर लिया था। इन व्रतों में एक भी अपवाद न रखने का निश्चय किया। बीमारी में दवा के रूप में ज्यादा चीजें लेना या न लेना, दवा को भोजन की वस्तु में गिनना या न गिनना, इन सब बातों का विचार कर लिया और निश्चय किया कि खाने की कोई चीज़ पाँच से अधिक न लूंगा। इन दो व्रतों को आज तेरह साल हो गये। इन्होंने मेरी खासी परीक्षा की है, परन्तु जहाँ एक ओर इन्होंने परीक्षा की है तहाँ उन्होंने मेरे लिए ढाल का भी काम दिया है। मैं मानता हूँ कि इन व्रतों ने मेरी आयु बढ़ा दी है; इनकी बदौलत मेरी धारणा है कि मैं बहुत बार बीमारियों से बच गया हूँ।

शिखा-सूत्र का प्रसंग

"पहाड़-जैसे दीखनेवाले महात्मा मुंशीराम के दर्शन करने और उनके गुरुकुल को देखने जब मैं गया तब मुझे बहुत शान्ति मिली। हरद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शान्ति का भेद स्पष्ट दिखाई देता था। महात्मा जी ने मुझ पर भरपूर प्रेम की वृष्टि की। ब्रह्मचारी लोग मेरे पास से हटते ही नहीं थे। रामदेवजी से भी उसी समय मुलाकात हुई और उनकी कार्य-शक्ति को मैं तुरन्त पहचान सका था। यद्यपि हमारी मत-भिन्नता हमें उसी समय दिखाई पड़ गयी थी, फिर भी हममें परस्पर स्नेह-गाँठ बँध गयी। गुरुकुल में औद्योगिक शिक्षण का प्रवेश करने की आवश्यकता के सम्बन्ध में रामदेवजी तथा दूसरे

शिक्षकों के साथ में मेरा ठीक-ठीक वार्तालाप भी हुआ। इससे जल्दी ही गुरुकुल को छोड़ते हुए मुझे दुःख हुआ।

"लक्ष्मण-झूला की तारीफ मैंने बहुत सुन रखी थी। ऋषिकेश गये बिना हरद्वार न छोड़ने की सलाह मुझे बहुत से लोगों ने दी। मैंने वहाँ पैदल जाना चाहा। एक मंजिल ऋषिकेश की और दूसरी लक्ष्मण झूले की की।

"ऋषिकेश में बहुत से संन्यासी मिलने के लिए आये थे। उनमें से एक को मेरे जीवन-क्रम में बहुत दिलचस्पी पैदा हुई। फिनिक्स-मण्डली मेरे साथ थी ही। हम सबको देखकर उन्होंने बहुतेरे प्रश्न पूछे। हम लोगों में धर्म-चर्चा भी हुई। उन्होंने देख लिया कि मेरे अन्दर तीव्र धर्म-भाव है। मैं गंगा-स्नान करके आया था और मेरा शरीर खुला था। उन्होंने मेरे सिर पर न चोटी देखी और न बदन पर जनेऊ। इससे उन्हें दुःख हुआ और उन्होंने कहा—

'आप हैं तो आस्तिक, परन्तु शिखा-सूत्र नहीं रखते, इससे हम-जैसों को दुःख होता है। हिन्दू धर्म की ये दो बाह्य संज्ञाएँ हैं और प्रत्येक हिन्दू को इन्हें धारण करना चाहिए।'

"जब मेरी उम्र कोई दस वर्ष की रही होगी तब पोरबन्दर में ब्राह्मणों के जनेऊ से बँधी चाबियों की झंकार मैं सुना करता था और उसकी मुझे ईर्ष्या भी होती थी। मन में यह भाव उठा करता कि मैं इसी तरह जनेऊ में चाबियाँ लटकाकर झंकार किया करूँ तो अच्छा हो। काठियावाड़ के वैश्य कुटुम्बों में उस समय जनेऊ का रिवाज नहीं था। हाँ, नये सिरे से इस बात का प्रचार अलबत्ता हो रहा था कि द्विज-मात्र को जनेऊ अवश्य पहनना चाहिए। उसके फलस्वरूप गाँधी-कुटुम्ब के कितने ही लोग जनेऊ पहनने लगे थे। जिस ब्राह्मण ने हम दो-तीन सगे-सम्बन्धियों को रामरक्षा का पाठ सिखाया था, उसी ने

हमें जनेऊ पहनाया। मुझे अपने पास चाबियाँ रखने का कोई प्रयोजन नहीं था। तो भी मैंने दो-तीन चाबियाँ लटका लीं। जब वह जनेऊ टूट गया तब उसका मोह उतर गया था या नहीं, यह तो याद नहीं पड़ता, परंतु मैंने नया जनेऊ फिर नहीं पहना।

"बड़ी उमर में दूसरे लोगों ने फिर हिन्दुस्तान में तथा दक्षिण अफ्रीका में जनेऊ पहनाने का प्रयत्न किया था। परन्तु उनकी दलीलों का असर मेरे दिल पर नहीं हुआ। शूद्र यदि जनेऊ नहीं पहन सकता तो फिर दूसरे लोगों को क्यों पहनना चाहिए ? जिस बाह्य चिह्न का रिवाज हमारे कुटुम्ब में नहीं था उसे धारण करने का एक भी सबल कारण मुझे नहीं दिखाई दिया। मुझे जनेऊ से अरुचि नहीं थी। परन्तु उसे पहनने के कारण का अभाव मालूम होता था। हाँ, वैष्णव होने के कारण मैं कण्ठी जरूर पहनता था। शिखा तो घर के बड़े-बूढ़े हम भाइयों के सिर पर रखवाते थे, परन्तु विलायत में सिर खुला रखना पड़ता था। गोरे लोग देखकर हसेंगे और हमें जंगली समझेंगे, इस शर्म से शिखा कटा डाली थी। मेरे भतीजे छगनलाल गाँधी, जो दक्षिण अफ्रीका में मेरे साथ रहते थे, बड़े भाव के साथ शिखा रख रहे थे। परन्तु इस वहम से कि उनकी शिखा वहाँ सार्वजनिक कामों में बाधा डालेगी, मैंने उनके दिल को दुखा कर भी छुड़ा दी थी। इस तरह शिखा से मुझे उस समय शर्म लगती थी।

"इन स्वामी जी से मैंने यह सब कथा सुनाकर कहा—

'जनेऊ तो मैं धारण नहीं करूँगा, क्योंकि असंख्य हिन्दू जनेऊ नहीं पहनते हैं फिर भी वे हिन्दू समझे जाते हैं। मैं अपने लिए उसकी जरूरत नहीं देखता। फिर जनेऊ धारण करने के मानी हैं— दूसरा जन्म लेना अर्थात् हम विचार-पूर्वक शुद्ध हों, ऊर्ध्वगामी हों। आज तो हिन्दू-समाज और हिन्दुस्तान दोनों गिरी दशा में हैं। इसलिए

क्ष्मणेश्वर (अल्मोड़ा) की एक सार्वजनिक सभा में भाषण

ुमें जनेऊ पहनने का अधिकार ही कहाँ है ? जब
अस्पृश्यता का दोष धो डालेगा, ऊँच-नीच का भेद
ूसरी गहरी बुराइयों को मिटा देगा, चारों तरफ फै
पाखण्ड को दूर कर देगा, तब उसे भले ही जनेऊ पहनने
हो। इसलिए जनेऊ धारण करने की आपकी बात तो
रही है। हाँ, शिखा-सम्बन्धी आपकी बात पर मुझे
करना पड़ेगा। शिखा तो मैं रखता था। परन्तु श
उसे कटा डाला। मैं समझता हूँ कि वह तो मुझे फि
लेनी चाहिए। अपने साथियों के साथ इस बात क
दूँगा।'

"स्वामी जी को जनेऊ-विषयक मेरी दलील न
कारण मैंने जनेऊ न पहनने के पक्ष में पेश किये, वे
पक्ष में दिखाई दिये। अस्तु। जनेऊ के सम्बन्ध में उस
में जो विचार मैंने प्रदर्शित किया था वह आज भी

कायम है। जबतक संसार में भिन्न-भिन्न धर्मों का अस्तित्व है तबतक प्रत्येक धर्म के लिए वाह्य संज्ञा की आवश्यता भी शायद हो, परन्तु जब वह बाह्य संज्ञा आडम्बर का रूप धारण कर लेती है अथवा अपने धर्म को दूसरे धर्म से पृथक् दिखलाने का साधन हो जाती है, तब वह त्याज्य है। आज-कल मुझे जनेऊ हिन्दू-धर्म को ऊँचा उठाने का साधन नहीं दिखाई पड़ता। इसलिए मैं उसके सम्बन्ध में उदासीन रहता हूँ।

"शिखा के त्याग की बात जुदी है। वह शर्म और भय के कारण हटायी गयी थी, इसलिए अपने साथियों के साथ विचार करके मैंने उसे धारण करने का निश्चय किया। पर अब हमको लक्ष्मण-झूले की ओर चलना चाहिए।

ऋषिकेश-लक्ष्मण झूला

"ऋषिकेश और लक्ष्मण-झूले के प्राकृतिक दृश्य मुझे बहुत पसन्द आये। हमारे पूर्वजों की प्राकृतिक कला को पहचानने की क्षमता के प्रति और कला को धार्मिक स्वरूप देने की उनकी दूरदर्शिता के प्रति मेरे मन में बड़ा आदर उत्पन्न हुआ। परन्तु दूसरी ओर मनुष्य की कृति को वहाँ देख चित्त को शान्ति न हुई। हरद्वार की तरह ऋषिकेश में भी लोग रास्तों को और गंगा के सुन्दर किनारों को गन्दा कर डालते थे। गंगा के पवित्र पानी को बिगाड़ते हुए भी उन्हें कुछ संकोच न होता था। दिशा-जंगल जानेवाले आम जगह और रास्तों पर ही बैठ जाते, यह देखकर मेरे चित्त को बड़ी चोट पहुँची।

"लक्ष्मण-झूला जाते हुए रास्ते में लोहे का एक झूलता हुआ पुल देखा। लोगों से मालूम हुआ कि पहले यह पुल रस्सी का और बहुत मजबूत था। उसे तोड़कर एक उदार-हृदय मारवाड़ी सज्जन ने बहुत रुपये लगाकर यह लोहे का पुल बना दिया और उसकी कुंजी

सौंप दी सरकार को। रस्सी के पुल का तो मुझे कुछ ख्याल नहीं हो सकता, परन्तु यह लोहे का पुल तो वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को कलुषित करता था और बहुत भद्दा मालूम होता था। फिर यात्रियों के इस रास्ते की कुंजी सरकार को सौंप दी गयी, यह बात तो मेरी उस समय की वफादारी को भी असह्य मालूम हुई।

यही स्वर्गाश्रम है!

"वहाँ से भी अधिक दुख:द दृश्य स्वर्गाश्रम का था। टीन के तबेले-जैसे कमरों का नाम स्वर्गाश्रम रखा गया था। कहा गया था कि यह साधकों के लिए बनाया गया है। परन्तु उस समय शायद ही कोई साधक वहाँ रहता हो। वहाँ की मुख्य इमारत में जो लोग रहते थे उन्होंने भी मेरे दिल पर अच्छी छाप नहीं डाली।

"जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि हरद्वार के अनुभव मेरे लिए अमूल्य साबित हुए। मैं कहाँ जाकर बसूँ और क्या करूँ, इसका निश्चय करने में हरद्वार के अनुभवों ने मुझे बहुत सहायता दी।"

वृन्दावन

हरद्वार से दिल्ली गांधी जी १२ अप्रैल को पहुँचे थे। दो दिन दिल्ली देखने तथा लोगों से मिलने के बाद, १४ अप्रैल, बुधवार को सुबह वृन्दावन के लिए प्रस्थान किया। दोपहर को वहाँ पहुँचे। शीघ्रता के साथ प्रेम महाविद्यालय, ऋषिकुल, गुरुकुल, रामकृष्ण मिशन देखा। इस तीर्थ को भी उन्होंने गन्दा ही पाया। रात को मथुरा लौटकर मद्रास के लिए रवाना हो गये।

: ४ :

उत्तर प्रदेश से बढ़ता हुआ सम्पर्क

: १९१६ :

काशी विश्वनाथ-दर्शन : विश्वविद्यालय में भाषण

१९१६ में उत्तर प्रदेश से गाँधीजी का सम्पर्क बढ़ने लगा। महामना मालवीयजी यद्यपि राजनीतिक विषयों में गांधीजी से भिन्न विचार रखते थे किन्तु उनकी सरलता, सेवावृत्ति, आडम्बरहीन वेशभूषा तथा भारतीय संस्कृति में उनकी गहरी निष्ठा से इतने प्रभावित थे कि उनकी ओर खिचते गये और उन्हें भी अपनी ओर खीचते गये। गाँधीजी उन्हें सदा अपना बड़ा भाई मानते रहे, और वैसा ही व्यवहार भी करते रहे।

४ फरवरी १९१६ को भारत के वाइसराय लार्ड हार्डिंज ने काशी में हिन्दू-विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर कितने ही गण्यमान्य लोग और राजा-महाराजा एकत्र हुए थे। मालवीयजी ने भारतीय आदर्शों की रक्षा और उत्कर्ष के लिए ही विश्वविद्यालय की स्थापना, काशी जैसे पुरातन तीर्थ में गंगा-तट के समीप, की थी इसलिए उन्होंने इस अवसर पर छात्रों को सम्बोधन करने के लिए गाँधीजी से, स्वभावतः, आग्रह किया। गाँधीजी स्वयं ऐसे अवसर से बचना चाहते थे किन्तु अग्रज-स्वरूप मालवीयजी महाराज के विशेष

आग्रह की अवहेलना न कर सके। और इस अवसर पर उन्होंने जो भाषण किया उससे एक तहलका मच गया। यह भाषण ऐसे अवसरों पर किये जानेवाले परम्परावादी भाषणों से बिल्कुल भिन्न था। एक ओर उसमें भारत के पतन एवं विवश स्थिति की चर्चा थी, दूसरी ओर एक गहरी नैतिक प्रेरणा तथा भारतीय भाषा, वेश-भूषा, संस्कार और देश की दीनता को देखते हुए तदनुकूल आचरण बनाने का प्रबल आग्रह था। सार्वजनिक रंग-मंच से, जहाँ ब्रिटिश सत्ता की छत्र-छाया में पले राजा-महाराजाओं का जमघट हो, यह भाषण एक चुनौती लिये आया था। यह एक बिल्कुल ही नवीन प्रकार का भाषण था। यह उनके अत्यन्त प्रमुख भाषणों में से एक है, इसलिए यहाँ उसके महत्वपूर्ण अंश दिये जा रहे हैं।

भाषण : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में

आध्यात्मिकता बातों से नहीं आती

"...... जिनके सामने आज मैं बोल रहा हूँ वे विद्यार्थी-गण तो एक क्षण के लिए इस बात को मन में जगह न दें कि जिस आध्यात्मिकता के लिए इस देश की ख्याति है और जिसमें उसका कोई सानी नहीं है, उसका सन्देश बातें बघार कर दिया जा सकता है। .....मुझे आशा है कि किसी-न-किसी दिन भारत संसार को यह सन्देश देगा, किन्तु केवल वचनों के द्वारा यह सन्देश कभी नहीं दिया जा सकेगा। ..... मैं यह कहने की धृष्टता कर रहा हूँ कि हम भाषण देने की कला के लगभग शिखर पर पहुँच चुके हैं और अब आयोजनों को देख लेना और भाषणों को सुन लेना ही पर्याप्त नहीं माना जाना चाहिए; अब हमारे मनों में स्फुरण होना चाहिए और हाथ-पाँव हिलने चाहिए।

ताकुला (जिला नैनीताल) में

में बोलने की शर्म

. . . मैं कहना यह चाहता हूँ कि मुझे आज इस पवित्र
महान विद्यापीठ के प्रांगण में, अपने ही देशवासियों से
भाषा में बोलना पड़ रहा है। यह बड़ी अप्रतिष्ठा और
है। . . . . . मुझे आशा है कि इस विश्वविद्यालय में
उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रबन्ध
। . . . . . यदि आप मुझसे यह कहें कि हमारी
विचार अभिव्यक्त किये ही नहीं जा सकते तब तो
उठ जाना अच्छा है। क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी
है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी भी दिन भारत की
सकती है? (नहीं, नहीं की आवाजें) . . . . . पूना के

कुछ प्रोफेसरों से मेरी बात हुई। उन्होंने बताया कि चूँकि हर भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेजी की मार्फत ज्ञान-सम्पादन करना पड़ता है, इसलिए उसे अपनी जिन्दगी के बहुमूल्य वर्षों में से कम-से-कम छः वर्ष अधिक नष्ट करने पड़ते हैं। हमारे स्कूलों और कालेजों से निकलनेवाले विद्यार्थियों की संख्या में इस छः का गुणा कीजिए और फिर देखिए कि राष्ट्र के कितने हजार वर्ष बरबाद हो चुके हैं। ...... मान लीजिए हमने पिछले पचास वर्षों में अपनी-अपनी भाषाओं के द्वारा शिक्षा पायी होती, तो आज हम किस स्थिति में होते? तो आज भारत स्वतन्त्र होता, तब हमारे पढ़े-लिखे लोग अपने ही देश में विदेशियों की तरह अजनबी न होते बल्कि देश के हृदय को छूनेवाली वाणी बोलते; वे गरीब-से-गरीब लोगों के बीच काम करते और पचास वर्षों की उनकी उपलब्धि पूरे देश की विरासत होती (तालियाँ)

धुआँधार भाषण हमें स्वराज्य के योग्य नहीं बना सकते

"......... कोई भी कागजी कार्रवाई हमें स्वराज्य नहीं दे सकती। धुआँधार भाषण हमें स्वराज्य के योग्य नहीं बना सकते। वह तो हमारा अपना आचरण है जो हमें उसके योग्य बनायेगा। (तालियाँ)

विश्वनाथ मन्दिर के पास का वातावरण

"......... कल शाम में विश्वनाथ के दर्शनों के लिए गया था। उन गलियों में चलते हुए मेरे मन में ख्याल आया कि यदि कोई अजनबी एकाएक ऊपर से इस मन्दिर पर उतर पड़े और यदि उसे हम हिन्दुओं के बारे में विचार करना पड़े तो क्या हमारे बारे में कोई छोटी राय बना लेना उसके लिए स्वाभाविक न होगा? क्या यह महान मन्दिर हमारे अपने आचरण की ओर उँगली नहीं उठाता? मैं

यह बात एक हिन्दू की तरह बड़ी पीड़ा के साथ कह रहा हूँ। क्या यह कोई उचित बात है कि हमारे पवित्र मन्दिर के आस-पास की गलियाँ इतनी गन्दी हों? उसके आस-पास जो घर बने हुए हैं वे बेसिलसिले और चाहे-जैसे हों? गलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी और सँकरी हों? अगर हमारे मन्दिर भी प्रशस्तता और स्वच्छता के नमूने न हों तो हमारा स्वराज्य कैसा होगा?............

मैंने हर अँधेरे कोने को मशाल जलाकर देखा है

"..........मैंने हर अँधेरे कोने को मशाल जलाकर देखा है, और चूँकि आपने मुझे बातचीत की यह सुविधा दी है, मैं अपना मन आपके सामने खोल रहा हूँ।.........जिन महाराजा[1] महोदय ने कल की हमारी बैठक की अध्यक्षता की थी, उन्होंने भारत की गरीबी की चर्चा की।.........किन्तु जिस शामियाने में वाइसराय-द्वारा शिलान्यास समारोह हो रहा था, वहाँ हमने क्या देखा? एक ऐसा शानदार प्रदर्शन, जड़ाऊ गहनों की ऐसी प्रदर्शनी, जिसे देखकर पेरिस से आनेवाले किसी जौहरी की आँखें भी चौंधिया जातीं। जब मैं गहनों से लदे हुए उन अमीर-उमरावों को भारत के लाखों गरीब आदमियों से मिलाता हूँ तो मुझे लगता है कि मैं इन अमीरों से कहूँ—जब तक आप अपने ये जेवरात नहीं उतार देते और उन्हें गरीबों की धरोहर मानकर नहीं चलते तबतक भारत का कल्याण नहीं होता।

(हर्ष ध्वनि और तालियाँ)

अराजक दल की उत्पत्ति का कारण

"............हम क्रुद्ध होते हों, बड़बड़ाते हों, हाथ-पैर पटकते हों, या और जो चाहे सो करते हों, फिर भी यह नहीं भूलना चाहिए कि

[1]दरभंगा के महाराज सर रामेश्वरसिंह (१८६०–१९२९)

भारत में अराजक दल की उत्पत्ति का कारण उतावलेपन का नशा है। मैं स्वयं भी अराजक हूँ पर दूसरे प्रकार का। मुझे मिलने का अवसर मिले तो मैं उन अराजकों से स्पष्ट कह दूँगा कि यदि भारत को अपने विजेताओं पर विजय प्राप्त करनी हो तो आपकी अराजकता के लिए यहाँ जगह नहीं है।........अराजकों के स्वदेश-प्रेम का मैं बड़ा आदर करता हूँ, वे जो स्वदेश के लिए आनन्दपूर्वक मरने को प्रस्तुत रहते हैं उनकी मैं इज्जत करता हूँ पर मैं उनसे पूछता हूँ कि क्या किसी की जान लेना प्रतिष्ठा का कार्य है? क्या छुरे से हत्या करने के फल-स्वरूप जो मृत्यु-दण्ड प्राप्त होता है, उसे किसी भी प्रकार गौरवपूर्ण माना जा सकता है? मैं कहता हूँ—'नहीं।' कोई धर्मग्रन्थ ऐसे उपाय का अवलम्बन करने की अनुमति नहीं देता।

परस्पर प्रीति एवं विश्वास की राजनीति

"..................बम फेंकने वाला गुप्त रूप से षड्यन्त्र करता है। वह बाहर निकलने से डरता रहता है और पकड़े जाने पर अपने अयोग्य और अतिरिक्त उत्साह का फल भोगता है..................(इस स्थान पर श्रीमती बेसेण्ट ने गाँधीजी से भाषण शीघ्र समाप्त करने के लिए कहा)......................मेरा ख्याल है कि मैं जो-कुछ कह रहा हूँ वह बिल्कुल ठीक है। मुझे अपना भाषण बन्द करने को कहा जायगा तो मैं बन्द कर दूँगा (अध्यक्ष को सम्बोधित कर) महाराज! मैं आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यदि आपकी समझ में मेरी इन बातों से देश और साम्राज्य को हानि पहुँच रही है तो मुझे अवश्य चुप हो जाना चाहिए। (कहिए, कहिए का शोर। अध्यक्ष ने गाँधीजी से अपना मतलब साफ तौर पर बतलाने को कहा) ....मैं अपना मतलब स्पष्ट करता हूँ। ....मुझे

भारत को उस अविश्वास से मुक्त करना है जो राजा और प्रजा सभी के मन में उत्पन्न हो गया है। यदि अपने साध्य को प्राप्त करना हो तो परस्पर की प्रीति तथा विश्वास पर स्थापित साम्राज्य से ही हमारा काम चलेगा और अपने-अपने घरों में बैठे-बैठे दायित्वहीन ढंग से यही बातें कहने की अपेक्षा क्या इस विद्यालय के प्रांगण में खड़े होकर उन्हें खुले तौर से कहना अधिक अच्छा नहीं है? .... मैं यह भी जानता हूँ कि आज ऐसी कोई बात नहीं है जिसकी विद्यार्थियों में चर्चा न होती हो या जिसे वे न जानते हों। इसीलिए मैंने यह आत्म-निरीक्षण आरम्भ किया है। अपने देश का नाम मुझे बड़ा ही प्यारा है..............आप लोगों से मेरी नम्रतापूर्वक प्रार्थना है कि अराजकता को भारत में बिल्कुल स्थान न मिलने दीजिए।

अपने ही पुरुषार्थ से स्वराज्य मिलेगा

"यदि किसी दिन हमें स्वराज्य मिलेगा तो वह अपने ही पुरुषार्थ से मिलेगा। वह दान के रूप में कदापि नहीं मिलने का। ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास पर दृष्टिपात कीजिए। ब्रिटिश साम्राज्य चाहे जितना स्वातन्त्र्य-प्रेमी हो, फिर भी स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए स्वयं उद्योग न करने वालों को वह कभी स्वतन्त्रता देने वाला नहीं है।"

(इस समय फिर गड़बड़ शुरू हुई और श्रीमती बेसेण्ट उठकर चल दीं। उनके साथ और भी कई बड़े-बड़े लोग उठकर चले गये और व्याख्यान का अन्त यहाँ हो गया। पुलिस कप्तान ने बनारस से गाँधीजी के तुरन्त बाहर चले जाने का आदेश निकाला परन्तु मालवीयजी महाराज के हस्तक्षेप से वह वापस ले लिया गया।)

काशी-आगमन के इस अवसर पर गाँधीजी ने ३ फरवरी को श्रीविश्वनाथ-दर्शन किया और ५ को काशी नागरी-प्रचारिणी सभा

बाईसवें वार्षिकोत्सव में, जिसकी अध्यक्षता कश्मीर के महाराजा- ाराज कर रहे थे, भाषण करते हुए कहा—"जिस भाषा में लसीदास-जैसे कवि ने कविता की हो वह अवश्य पवित्र है और सके सामने कोई भाषा ठहर नहीं सकती। हमारा मुख्य काम ान्दी सीखना है, यद्यपि हम अन्य भाषाएँ भी सीखेंगे।"

७ फरवरी तक गाँधी जी काशी रहे। फिर बम्बई चले गये।

हरद्वार में

प्रायः डेढ़ मास बाद गाँधी जी फिर संयुक्तप्रान्त में आये। इस ार १८ मार्च से २३ मार्च तक वह प्रायः हरद्वार, मुख्यतः गुरुकुल रहे। १८ मार्च को वह गुरुकुल के अछूतोद्धार सम्मेलन में शामिल ए और अस्पृश्यता-निवारण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा क हिन्दुओं को प्रायश्चित्त की भावना से यह कार्य करना चाहिए, ौर उन्हें ईसाई धर्म-प्रचारकों का अनुकरण नहीं करना चाहिए।

ताकुला में

२० मार्च को गुरुकुल के पुरस्कार-वितरण समारोह में भाषण देते हुए उन्होंने कहा—"पाठशाला को ग्रामीण जीवन, ग्रामीण शिल्प, खुली हवा, आजादी तथा अपने लोगों की सेवा के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना चाहिए।"

इसी दिन (२० मार्च को) गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव में उन्होंने एक मार्मिक भाषण दिया। उन्होंने कहा—"उचित धार्मिक भावना हमारी सबसे बड़ी तात्कालिक आवश्यकता है।.............. हमारी धार्मिक भावना सुप्त है, और हम लोग इसी कारण हमेशा भयभीत बने रहते हैं। हम लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार की सत्ताओं से डरते हैं।..............निर्भयता का गुण धार्मिक चेतना के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। हम भगवान से डरना सीखें तो हमारा आदमी से डरना खत्म हो जाय।..............सच्ची स्वदेशी-भावना बिना मुक्ति सम्भव नहीं है।..............आधुनिक सभ्यता मुख्यतः भौतिकवादी है, जबकि हमारी सभ्यता प्रधान रूप से आध्यात्मिक है।..............हमारी सभ्यता ने दृढ़तापूर्वक यह कहने का साहस किया है कि अहिंसा का समुचित और सम्पूर्ण विकास सारे संसार को हमारे चरणों में लाकर डाल देता है। सक्रिय रूप में अहिंसा का अर्थ है पवित्रतम प्रेम और करुणा।..............मैं आशा करता हूँ कि आप उन शाश्वत तत्वों को अपने जीवन में स्थान देंगे।........." उन्हों ने इस भाषण में ग्रामीण उद्योगों के शिक्षण पर भी जोर दिया।

२२ मार्च को उनकी तबीयत खराब हो गयी। फिर भी २३ को आर्य समाज-भवन में उन्होंने दयानन्द स्कूल के विद्यार्थियों के सम्मुख एक छोटा भाषण करते हुए कहा कि उन्हें अपनी आत्मा के प्रति सच्चा बनना चाहिए, तभी वे देश के प्रति भी सच्चे बन सकेंगे।

इसी वर्ष दिसम्बर में जरूरी कामों से गांधीजी पुनः उत्तर

प्रदेश आये और कई दिनों (२२ से ३१ दिसम्बर) तक इलाहाबाद और लखनऊ में रहे।

२२ दिसम्बर १६१६ को म्योर सेण्ट्रल कालेज, इलाहाबाद की अर्थशास्त्र समिति के तत्वाधान में आयोजित सभा में वह बोले। पं० मदनमोहन मालवीय इस सभा के अध्यक्ष थे और डा० तेजबहादुर सप्रू, डा० सुन्दरलाल (विश्वविद्यालय के उप-कुलपति), एच० एस० एल० पोलक, सी० वाई चिन्तामणि, शिव प्रसाद गुप्त, पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा डा० ई० जी० हिल (म्योर कालेज के प्रधान अध्यापक) इत्यादि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति सभा में आये थे। व्याख्यान का विषय था—"क्या आर्थिक उन्नति वास्तविक उन्नति के विपरीत जाती है?" हम यहाँ संक्षेप में उनका व्याख्यान दे रहे हैं।

भौतिक बनाम नैतिक प्रगति

"...............मेरा ख्याल है कि आर्थिक उन्नति का अर्थ हम सीमा-विहीन भौतिक प्रगति लगाते हैं और वास्तविक उन्नति को हम नैतिक प्रगति का पर्याय मानते हैं। यह नैतिक प्रगति हमारे अन्तर में रहने वाले शाश्वत अंश के विकास के सिवा और क्या है? अतएव प्रस्तुत विषय को दूसरे शब्दों में इस प्रकार रखा जा सकता है: क्या नैतिक उन्नति उसी अनुपात में नहीं हुआ करती जिस अनुपात में भौतिक उन्नति होती है?

" . . . . यह तो आज तक किसी ने भी नहीं कहा कि अतिशय दरिद्रता नैतिक पतन के अतिरिक्त कुछ और दे सकती है। प्रत्येक मनुष्य को जीवित रहने का अधिकार और इसलिए उसे पेट भरने के लिए भोजन तथा आवश्यकतानुसार तन ढकने के लिए वस्त्र और रहने के लिए मकान जुटाने का अधिकार है। परन्तु इस बिल्कुल

मामूली से काम के लिए हमें अर्थशास्त्रियों अथवा उनके द्वारा गढ़े गये विषयों की मदद की जरूरत नहीं है। ····· किसी भी सुव्यवस्थित समाज में रोजी कमाना सबसे सुगम बात होनी चाहिए और हुआ करती है। निस्सन्देह किसी देश की सुव्यवस्था की पहचान यह नहीं है कि उसमें कितने लखपति लोग रहते हैं बल्कि यह कि जन-साधारण का कोई भी व्यक्ति भूखों तो नहीं मर रहा है। अब केवल यही बात देखनी रह जाती है कि क्या भौतिक उन्नति का अर्थ ही नैतिक उन्नति है?

"आइए, कुछ दृष्टान्त लें। भौतिक उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचते ही रोमन लोगों का नैतिक पतन आरम्भ हो गया। मिस्र देश में भी यही हुआ। और कदाचित् उन सभी देशों में भी, जिनका इतिहास हमें उपलब्ध है, ऐसा ही हुआ है। ······ दक्षिण अफ्रीका में मुझे अपने हजारों देशवासियों के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त था, मैंने वहाँ लगभग सदा यही देखा कि आर्थिक दृष्टि से जो जितना ही सम्पन्न होता था उसका नैतिक स्तर उतना ही गया-गुजरा होता था। ······ सत्याग्रह के हमारे नैतिक संघर्ष को गरीबों से जितना बल मिला, उतना अमीरों से नहीं। ······

"······ आज जिस प्रश्न की हम चर्चा कर रहे हैं वह नया नहीं है। दो हजार वर्ष पूर्व ईसा से भी वही प्रश्न पूछा गया था। ······ एक जिज्ञासु हाँफता हुआ आता है; घुटने टेक कर नमन करता और पूछता है:—'हे कृपासिन्धु प्रभु, बताइए मैं किस रास्ते चलूँ कि अविनाशी जीवन की विरासत पा जाऊँ?' ईसा ने उससे कहा: 'तुम मुझे कृपासिन्धु क्यों कहते हो? एक को छोड़ और कोई कृपासिन्धु है ही नहीं और वह है परमात्मा। तुम धर्मानुशासनों से परिचित हो। व्यभिचार मत करो, जीव-हत्या मत करो, चोरी

मत करो, झूठी गवाही मत दो, किसी के साथ कपट का व्यवहार मत करो, अपने माता-पिता का आदर करो।' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—'प्रभो! इन सब उपदेशों पर मैंने युवावस्था से ही आचरण किया है।' इस पर ईसा ने उस पर स्नेह की वर्षा करते हुए कहा—'तुममें एक बात की कमी रह गयी है : लौट जाओ, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच डालो और इस प्रकार प्राप्त धन को गरीबों में बाँट दो, तो तुम्हें स्वर्ग की निधि प्राप्त होगी। ......' यह सुनकर वह व्यक्ति उदास हो गया और चल दिया, क्योंकि उसके पास बहुत बड़ी जायदाद थी। ईसामसीह ने........शिष्यों से कहा—'जिनके पास दौलत है वे ईश्वर के राज्य में किस प्रकार प्रवेश पा सकते हैं?' यह सुन-कर शिष्यगण अचम्भे में आ गये। परन्तु ईसा ने उनसे बार-बार कहा—'बच्चो! जो लोग अपनी दौलत पर भरोसा करते हैं, उनके लिए ईश्वर के राज्य में प्रवेश पाना कितना दुष्कर है। सुई के छेद से होकर ऊँट का गुजर जाना आसान है, परन्तु धनाढ्य व्यक्ति के लिए ईश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना कठिन है।' इस दृष्टान्त में जीवन का शाश्वत नियम अत्यन्त सुन्दर शब्दों में व्यक्त है। परन्तु शिष्यों को प्रतीति नहीं हुई। आजकल भी ऐसा ही देखने में आता है।......

संसार के उपदेशकों के उदाहरण

"...... प्रस्तुत प्रश्न के इस उत्तर के अनुमोदन के लिए सबसे अधिक विश्वसनीय और जोरदार प्रमाण संसार के सबसे बड़े उपदेशकों के जीवन-चरित हैं। ईसा मसीह, मुहम्मद, बुद्ध, नानक, कबीर, चैतन्य, शंकराचार्य, दयानन्द, रामकृष्ण ऐसे व्यक्ति थे जिनका लाखों नर-नारियों के हृदयों पर प्रभाव था और जिन्होंने असंख्य

व्यक्तियों का चरित्र गढ़ा है। ······ ध्यान रहे कि ये सब ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जान-बूझ कर गरीबी को अपनाया था।

"यदि मेरा यह विश्वास न होता कि जिस हद तक हम आधुनिक भौतिकवाद के पीछे दीवाने बने रहेंगे उस हद तक हम उन्नति के मार्ग से दूर रह कर अवनति की दिशा में अग्रसर होते जायेंगे, तो मैंने आज जो इस प्रकार विस्तारपूर्वक अपनी बात आपके सामने रखने का प्रयास किया है सो कदापि न करता। मेरी धारणा है कि आर्थिक उन्नति ······ वास्तविक उन्नति के विरुद्ध पड़ती है। यही कारण है कि हमारा प्राचीन आदर्श धन-सम्पत्ति में वृद्धि करने-वाली गतिविधियों पर नियन्त्रण रखता रहा है।······ परमेश्वर और माया दोनों को एक साथ नहीं साधा जा सकता। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण आर्थिक सत्य है। हमें इन दोनों में एक को चुन लेना है। आज पाश्चात्य देश भौतिकवाद रूपी राक्षस के पाँवों तले पड़े हुए कराह रहे हैं। उनकी नैतिक उन्नति को जैसे लकवा मार गया है; वे अपनी उन्नति का मानदण्ड रुपया, आना, पाई बनाये हुए हैं।····

यहाँ देवताओं का निवास असम्भव है

"······ हमें बताया गया है कि हमारे इस देश में कभी देवता निवास करते थे। जिस देश को मिलों की चिमनियों से निकलनेवाला धुआँ और कारखानों का कर्कश स्वर भयानक बनाये हुए है; जिसकी सड़कों पर ऐसे मुसाफिरों से भरी गाड़ियाँ तेजी से इधर-उधर दौड़ रही हैं, जो नहीं जानते कि उनका लक्ष्य क्या है और जो प्रायः भ्रान्तचित्त रहते हैं, ······ उस देश में देवताओं के निवास की कल्पना करना असम्भव है। मैं इन बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ कि ये भौतिक उन्नति की प्रतीक मानी जाती हैं किन्तु इनसे हमारे

सुख में एक कण की भी वृद्धि नहीं होती। ......

"ब्रिटिश छत्रछाया में हमने बहुत कुछ सीखा है, किन्तु मेरा यह निश्चित मत है कि ब्रिटेन यथार्थ नैतिकता की दिशा में कुछ भी देने मे असमर्थ है।........हम उस सम्बन्ध से उसी दशा में लाभ उठा सकते हैं जब हम अपनी सभ्यता और अपनी नैतिकता से विचलित न हो।.........हमें सर्वप्रथम दैवी सम्पद् की, परम पिता के राज्य और उसकी पवित्रता की कामना करनी चाहिए। जो ऐसा करेगा उसे यह अमोघ वचन मिला हुआ है कि उसके पास सब वस्तुएँ आ जायेंगी। सच्चा अर्थशास्त्र यही है।........."

सार्वजनिक सभा में शिक्षा पर भाषण

२३ दिसम्बर को गाँधीजी ने इलाहाबाद की एक बहुत बड़ी सार्वजनिक सभा में, जो मुंशी राम प्रसाद के बाग कटघर रोड में मालवीयजी महाराज की अध्यक्षता में हुई थी, प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा-नीति पर भाषण करते हुए अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने की आधुनिक प्रणाली पर गहरा प्रहार किया और प्राचीन शिक्षा-प्रणाली की प्रशंसा की और कहा—"उसका आधार सयम और ब्रह्मचर्य था। यह इसी शिक्षा-प्रणाली का प्रताप था कि हजारों वर्षों से अनेक प्रकार के आघात सहने पर भी भारतीय सभ्यता आजतक जीवित है।............भारतीय सभ्यता का प्रधान आधार आध्यात्मिक बल है। वह भौतिक बल से कहीं बढ़कर है। भारतवर्ष प्रधानतः धर्मभूमि है। उसे धर्मभूमि बनाये रखना भारतवासियों का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है।............"

कांग्रेस के लखनऊ-अधिवेशन में

२६ से ३० दिसम्बर (१९१६) तक लखनऊ में कांग्रेस का

ाँ अधिवेशन हुआ। कांग्रेस एवं भारतीय राष्ट्रीयता के
में यह अधिवेशन अनेक दृष्टियों से बड़ा महत्वपूर्ण माना
। १९०७ की सूरत कांग्रेस के बाद तिलक और उग्रवादियों
बिल्कुल अलग हो गया था और कांग्रेस केवल उदारदलीय
राजनीतिज्ञों की संस्था रह गयी थी। इस अधिवेशन में
ापने साथियों के साथ शामिल हुए; कांग्रेस के दोनों पक्ष
मच पर आये। मुस्लिम लीग के साथ कांग्रेस का समझौता
'लखनऊ पैक्ट' के नाम से प्रसिद्ध है और जिसमें मुसलमानों
ा प्रतिनिधित्व देने का निश्चय हुआ। इस प्रकार बिखरी
नयाँ पुनः एकत्र हुईं, कांग्रेस का बल बढ़ा। कांग्रेस के
ाम्बिकाचरण मजूमदार ने खुल कर नौकरशाही पर प्रहार

ाीजी ने इस कांग्रेस में प्रमुख रूप से भाग लिया और
म्बर के अधिवेशन में गिरमिटिया मजूरों के सम्बन्ध में एक
ाखा, अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में। प्रस्ताव पास हो गया।

इलाहाबाद की एक सार्वजनिक सभा में नेहरूजी भाषण करते हुए। मंच पर गांधीजी के साथ आचार्य कृपलानी, पं० मोती लाल नेहरू तथा महामना मालवीय जी भी हैं।

भारतीय एक-भाषा और एक-लिपि सम्मेलन में

२९ दिसम्बर को भारतीय एक-भाषा और एक-लिपि सम्मेलन लखनऊ में हुआ। गाँधीजी ही उसके अध्यक्ष थे। वह टूटी-फूटी हिन्दी में बोले। कहा—"यदि राष्ट्रभाषा का प्रचार करना है तो उसके लिए भगीरथ प्रयत्न करना होगा। आप लोग लाट साहब को या सरकार के दरबार में जो प्रार्थनापत्र भेजते हैं, वह किस भाषा मे लिखकर भेजते हैं ? यदि हिन्दी भाषा में नहीं भेजते तो हिन्दी मे लिखकर भेजिए। आप लोग कहेंगे कि हिन्दी में लिखकर भेजने से वे हमारी बात नहीं सुनेंगे। मैं कहता हूँ कि आप अपनी भाषा मे बोलें, अपनी भाषा में लिखें। उनकी मरजी होगी तो वे हमारी बात सुनेंगे। मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको ग़रज होगी, वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे तो हिन्दी का दर्जा बढ़ेगा।............"

मुस्लिम लीग के सम्मेलन में

३०-३१ दिसम्बर को सबेरे लखनऊ में मुस्लिम लीग की बैठक हुई। ३१ को गाँधीजी भी उसमें शामिल हुए और अनुरोध करने पर छोटा-सा भाषण दिया जिसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता और मिल-जुलकर काम करने की अपील की गयी थी।

इस प्रकार १९१६ में उत्तर प्रदेश (तब संयुक्तप्रान्त) से गाँधी-जी का सम्पर्क और सम्बन्ध काफी बढ़ गया। वह एकाधिक बार यहाँ आये और अपने नैतिक आदर्शों से यहाँ के जन-जीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया।

१९१७ में

१९१७ में गाँधीजी चम्पारन के निलहे गोरों के अत्याचार से

वहाँ के किसानों को राहत दिलाने और उस सम्बन्ध में सत्याग्रह की तैयारी करने में लगे रहे। और कहीं जाने की फुर्सत उन्हें मिली नहीं। जब तक उस समस्या का समाधान नहीं हो गया, वहीं रहे।

इसलिए वह संयुक्तप्रान्त की यात्रा नहीं कर सके। बड़ी कठिनाई से केवल दो बार आये। एक दिन के लिए इलाहाबाद आये और ६ अक्तूबर, १९१७ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की परिषद् की जो संयुक्त बैठक वहाँ हुई, उसमें शामिल हुए।

अलीगढ़ में

२८ नवम्बर को अलीगढ़ पहुँचे। छात्रों की भारी भीड़ ने उनका स्वागत किया और स्टेशन से लायल पुस्तकालय के मैदान तक उनका जुलूस निकाला। वहाँ गाँधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण करते हुए कहा कि "दोनों को अपने झगड़े पारिवारिक झगड़ों की तरह तय कर लेने चाहिए।"

इसी दिन उन्होंने अलीगढ़ कालेज में सत्य और मितव्ययिता पर भाषण दिया और मुसलमानों से कहा कि वे देश के उत्थान की दिशा में उस लगन से काम नहीं कर रहे हैं, जिस लगन से उनके हिन्दू भाई कर रहे हैं।

कालेज से वह ख्वाजा अब्दुलमजीद के घर गये और वहाँ से कलकत्ता की ट्रेन पकड़ने के लिए स्टेशन चले गये।

: ५ :

रौलट विधेयकों का विरोध

: १९१९ :

१९१८ में गाँधीजी, अन्य कार्यों में व्यस्त हो जाने के कारण एक बार भी संयुक्तप्रान्त न आ सके। इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में वह प्रायः अस्वस्थ रहे। जरा अच्छा होते ही फिर बीमार पड़ जाते। कई बार तो हालत गम्भीर हो गयी। १९१९ के प्रथम तीन महीनों में भी उनका स्वास्थ्य खराब ही रहा। २० जनवरी को बम्बई में डा० दलाल ने उनका बवासीर का आपरेशन किया।

उधर देश की हालत तेजी से बिगड़ रही थी। महायुद्ध के अनन्तर स्वतन्त्रता देने की बात तो दूर रही उलटा सरकार दमन पर उतारू हो गयी। शासन को दमन-सम्बन्धी अधिक अधिकार देने के लिए रौलट विधेयक पेश किया गया जिसका देश के सभी वर्गों ने तीव्र विरोध किया। परन्तु सरकार तो कुछ सुनने की मनःस्थिति में ही नहीं थी। इसलिए स्वास्थ्य की परवा न कर गाँधीजी ने सत्याग्रह की तैयारी का आन्दोलन चलाया। सत्याग्रह की प्रतिज्ञा लेने वाले चुने हुए सत्याग्रही स्वयंसेवकों की भरती होने लगी।

लखनऊ तथा इलाहाबाद में

इसी सिलसिले में अपनी अस्वस्थता के बावजूद १० मार्च १९१९

लखनऊ पहुँचे। ११ की सुबह साढ़े आठ बजे सत्याग्र
की एक सभा रिफाहे-आम हाल में हुई। कमजोरी के क
ड़े शब्दों में उन्होंने लोगों को सत्याग्रह का मर्म समझा
आदमियों ने सत्याग्रह के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये

कालाकां

सी दिन वह इलाहाबाद आ गये और पं० मोतीलालजी वं
इलाहाबाद से उन्होंने वाइसराय के निजी सचिव श्री मैफ
बिलों के स्थगन और उनपर जनता की तीव्र प्रतिक्रि
में पुनर्विचार करने के लिए तार दिया और फिर प
उन्होंने वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री को भी पत्र लि
येयकों का विरोध और जनता की भावना व्यक्त करने का
ग्या।

सत्याग्रह में पीछे मुड़ना नहीं हो सकता

इसी दिन इलाहाबाद में भी एक सार्वजनिक सभा हुई। अँग्रेजी दैनिक 'इण्डिपेण्डेण्ट' के सम्पादक सय्यद हुसेन अध्यक्ष थे। बीमारी के कारण गाँधीजी स्वयं भाषण न कर सके। उनका लिखित भाषण अँग्रेजी में स्वयं सभाध्यक्ष सय्यद हुसेन ने और हिन्दी में गाँधीजी के निजी सचिव महादेव देसाई ने पढ़कर सुनाया। इस भाषण में उन्होंने बताया कि जो "व्यक्ति सत्याग्रह की शपथ लेना चाहता है, उसे शपथ लेने के पूर्व उस पर सांगोपांग विचार कर लेना चाहिए। उसे रौलट विधेयकों की मुख्य-मुख्य बातों को भी समझ लेना चाहिए और तसल्ली कर लेना चाहिए कि वे कितने आपत्तिजनक हैं। हर प्रकार का शारीरिक कष्ट सहन करने की क्षमता भी उसमें होनी चाहिए। सत्याग्रह में एक बार शामिल हो जाने पर पीछे मुड़ना हो ही नहीं सकता। सत्याग्रह में पराजय की कल्पना ही नहीं है। सत्याग्रही मरते दम तक संघर्ष करता रहता है।............सत्याग्रही को उचित है कि अपने साथ शरीक न होनेवालों के प्रति सहनशीलता से काम ले ...... सत्याग्रह में हम आत्म-बलिदान अर्थात् प्रेम के द्वारा अपने विरोधियों को जीतने की आशा रखते हैं।............यदि हम प्रतिदिन अपनी शपथ का पालन करते रहेंगे तो हमारे आस-पास का वातावरण शुद्ध हो जायगा।............हिंसा-मार्ग के समर्थकों की समझ में भी आने लगेगा कि............गुप्त या प्रकट हिंसा की अपेक्षा सत्याग्रह कहीं अधिक समर्थ साधन है।............"

: ६ :

आँधी आने के लक्षण

१९२०

पंजाब में जो हत्याकाण्ड हुआ उसके तथा तुर्की के शाह के अधिकार-हनन के फलस्वरूप देश में चारों ओर बड़ी बेचैनी नजर आ रही थी। राष्ट्रीयता करवट लेने लगी थी और तेजी के साथ सामूहिक जन-आन्दोलन के रूप में बदलती जा रही थी। मुसलमानों में खिलाफत को लेकर बड़ी उग्र भावनाएँ फैल रही थीं। गाँधीजी ने उनका साथ देकर उन्हें अपने ढंग के आन्दोलन की ओर मोड़ लिया था। १९२० आते ही गाँधीजी सारे देश में घूमकर भावी आन्दोलन की भूमिका के लिए लोगों को तैयार करने लगे।

इलाहाबाद

वाइसराय से भेंट करने के बाद २० जनवरी को वह मोतीलालजी नेहरू से मिलने इलाहाबाद आये। मिलकर जब लौट रहे थे तब उनसे कानपुर कुछ घण्टे ठहरने के लिए कहा गया। वहाँ के नागरिकों का बड़ा आग्रह था। वे गाँधीजी के हाथों से स्वदेशी भण्डार का उद्घाटन कराना चाहते थे। इस यात्रा में गाँधीजी न केवल कानपुर, बल्कि मेरठ और मुजफ्फरनगर भी रुके थे। यात्रा का वर्णन उन्हीं के शब्दों में यहाँ देना उचित होगा :-

कानपुर

"दिल्ली से मुझे प्रयाग तो जाना ही था। वहाँ पण्डित मोतीलाल से मिलकर वापस लौट रहा था तभी मुझ पर कानपुर जाने के लिए जोर डाला गया। कानपुर के नागरिकों का आग्रह था कि वहाँ मुझे मात्र कुछ घण्टे ही रुकना होगा। स्वदेशी भण्डार का उद्घाटन करके मैं दूसरी गाड़ी से वहाँ से विदा ले सकूँगा। मैं उन्हें निराश नहीं कर सका।

"प्रयाग से दिल्ली जाते हुए कानपुर रास्ते में पड़ता है और प्रयाग से मेल गाड़ी से केवल चार घण्टे का रास्ता है। कानपुर बम्बई की तरह ही व्यापार का और कपड़ा मिलों का केन्द्र है। वहाँ की जलवायु भी बहुत अच्छी है। इस नगर में स्वदेशी भण्डार खोलने का यह पहला ही प्रयत्न है और उसमें मुख्य हाथ हसरत मोहानी साहब का है। इस भण्डार के उद्घाटन के समय हजारों आदमी एकत्र हुए थे; उनके उत्साह की सीमा नहीं थी।

एक दुःखद घटना

"मेरे वहाँ पहुँचने के पहले अली भाई भी पहुँच चुके थे। उनके सम्मान में एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया था। उनकी गाड़ी का घोड़ा भड़का और लातें मारने लगा। भीड़ बहुत ज्यादा थी। गाड़ी के पास ही अब्दुल हफीज नाम का एक हृष्ट-पुष्ट युवक खड़ा हुआ था। पिछले कुछ दिनों से वह सार्वजनिक सेवा का काम करने लगा था। घोड़े की लात से उसकी छाती पर चोट लगी और वह गिर पड़ा। जिसके मरने की कभी कल्पना ही नहीं की जा सकती थी ऐसा वह युवक क्षण-मात्र में चल बसा। अली भाई तुरन्त गाड़ी से उतरे।

उन्होंने एक खाट मँगवायी। उसके ऊपर युवक का शव रखा गया और दोनों भाइयों ने उसमें अपना कन्धा दिया। कुछ दूर तक वे स्वयं उसकी इस शव यात्रा में गये, बाद में कंधा बदलने पर अपने काम पर गये। जो जुलूस खुशी का था वह इस घटना के बाद शोक का हो गया और शव के साथ गया। सारा दिन शोक की इस छाया से मलिन हो गया।

"इस घटना को घटित हुए चार घण्टे हुए होंगे कि इतने में मैं पहुँचा। मुझे यह दुःखद संवाद स्टेशन पर ही मिल गया था। मैंने माँग की कि मेरे लिए आयोजित जुलूस स्थगित कर दिया जाय, मुझे सीधे भण्डार ले जाया जाय। और उद्घाटन की क्रिया पूरी कराने के बाद वहाँ ले जाया जाय जहाँ अब्दुल हफीज़ का शव है। नगर के नेताओं ने मेरा अनुरोध स्वीकार किया। भण्डार का उद्घाटन करने के बाद हम कुछ लोग भाई अब्दुल हफीज़ का शव देखने के लिए जा पहुँचे। दृश्य अत्यन्त हृदय-द्रावक था। उसकी हृष्ट-पुष्ट देह और सुन्दर चेहरा देखकर मुझे गहरा दुःख हुआ। आस-पास खड़े हुए मुसलमान भाइयों की हिम्मत से मैंने धैर्य धारण किया। वहाँ मैंने कोई रोनाधोना नहीं देखा। मानों घोर निद्रा में सोये हुए किसी भाई के आसपास बातचीत हो रही हो, इस प्रकार वे लोग निर्भयतापूर्वक बातचीत कर रहे थे और मुझे सुना रहे थे कि युवक की मृत्यु कैसे हुई। इस दृश्य से मैं बहुत प्रभावित हुआ। ऐसे अवसर पर हिन्दुओं में कितना रोना-धोना होता है, इस बात की याद आयी। मन में विचार आया, कितना अच्छा होता यदि हम इस पाप से बचते। यदि हम मृत्यु का डर छोड़ दे तो अनेक अच्छे कार्य कर सकते हैं। जिस धर्म के अनुयायियों मे मृत्यु का भय सब-से-कम होना चाहिए उन्हीं में वह सबसे ज्यादा है। यह विचार कई बार मेरे मन में आया है और उससे बड़ी लज्जा का

अनुभव हुआ है। आत्मा अमर है, देह क्षणभंगुर है, कोई कार्य ऐसा नहीं जिसका परिणाम न होता हो,—बचपन से यह सब हम सीखते हैं। तो फिर मृत्यु का भय क्यों होना चाहिए ? अब्दुल हफीज़ का एकमात्र पुत्र मेरे पास खड़ा हुआ था; वह भी निर्भयतापूर्वक बात कर रहा था। भगवान् अब्दुल हफीज़ की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

मेरठ

"शाम की गाड़ी से मैंने कानपुर छोड़ा। दूसरे दिन सुबह यानी तारीख २२ को सुबह मैं मेरठ पहुँचा। जी० आई० पी० लाइन से लाहौर जाते हुए, मेरठ रास्ते में पड़ता है। मैंने वहाँ कुछ घण्टे बिताने का वचन दिया था। मेरठवासियों ने बड़ी तैयारी कर रखी थी। हिन्दू-मुसलमानों के बीच वहाँ मेरे प्रति प्रेम-प्रदर्शन की होड़-सी चल रही थी। अली भाई वहाँ कुछ ही दिन पहिले गये थे। उन्हें एक हिन्दू सज्जन के घर ठहराया गया था। मुझे मेरठ के प्रसिद्ध मुसलमान बैरिस्टर भाई इस्माइल खाँ के घर ठहराया गया। स्वागत-समारोह में ७५० स्वयंसेवक उपस्थित थे जिनमें कई प्रतिष्ठित परिवारों के लोग थे। घोड़ों पर सवार स्वयंसेवकों का दल भी था। तीन मील लम्बे रास्ते पर झण्डों से सजाये हुए खम्भे लगाकर रस्सी बाँधी गयी थी। जुलूस रस्सियों के भीतर-भीतर चल रहा था और बाहर दर्शक-समुदाय था। जुलूस में बाजे, ऊँट-गाड़ियाँ, घुड़सवार, फैन्सी ड्रेसवाले आदि थे। मेरा अनुमान है कि वह एक मील लम्बा तो रहा होगा। आस-पास के गाँवों से हजारों लोग आये थे। किन्तु व्यवस्था बहुत सुन्दर थी। मुझे नगरपालिका, खिलाफत कमेटी, साधारण जनसमाज, हिन्दू स्त्रियों और मुसलमान स्त्रियों की ओर से मानपत्र दिये गये। स्त्रियों की एक अलग सभा आयोजित की गयी थी। उनका हर्ष और

उत्साह छलका पड़ रहा था। लगभग हजार स्त्रियाँ आयी होंगी। मैं तो बहुत असमंजस में पड़ गया। यह सारा प्रेम यदि मैं स्वीकार करूँ तो उसे पचाऊँगा कैसे? मैंने तो सब वहीं कृष्णार्पण कर दिया।

"खिलाफत के सम्बन्ध में मेरी स्पष्टवादिता मुसलमान भाइयों को बहुत प्रिय लगी है। जब तक उनकी बात को न्याय का आधार प्राप्त है और वे किसी प्रकार की हिंसा किये बिना लड़ते रहते हैं तब तक मैं उनके लिए अपने प्राण अर्पित करूँगा किन्तु यदि वे कोई अनुचित माँग करते हैं तो मैं उन्हीं के खिलाफ सत्याग्रह करूँगा— मेरे ये वाक्य उनको पसन्द आये हैं। मेरे इस कथन से वे शक्ति और प्रेरणा ग्रहण कर सके हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों को सत्य के आग्रह की बात, फिर चाहे वे उसका पालन करें या न करें, पसन्द आयी है। और इसलिए वे मेरे ऊपर प्रेम की वर्षा कर रहे हैं। सत्य का मेरा आग्रह जिस समय उनके खिलाफ होगा तब वे मेरा तिरस्कार भी करेंगे। जो प्रेम करता है उसे तिरस्कार करने का अधिकार है ही।

मुजफ्फरनगर

"मेरठ से मुझे रातोंरात मोटर में मुजफ्फरनगर ले आया गया। यहाँ हिन्दू-मुसलमानों के बीच कुछ मनोमालिन्य हो गया था। मुझे यहाँ उसे मिटाने के लिए ही ले जाया गया था। मोटर रात को ९ बजे पहुँची। लोग उत्साह से पागल हो गये थे। कोई किसी की बात सुन ही नहीं रहा था। घुड़सवार तो यहाँ भी थे किन्तु मेरठ जैसी सुव्यवस्था नहीं थी। लोगों ने मोटर को घेर लिया। उसमें से बड़ी मुश्किल से निकाल कर मुझे घोड़ागाड़ी में बिठाया गया। लोगों का हर्षनाद सहन करने की शक्ति मुझमें बिल्कुल नहीं रह गयी थी। सच तो यह है कि मैंने अपने कानों में रुई के फाहे ठूँस रखे थे। एक

भाई के पाँव में चोट लगी। मुझे अब्दुल हफीज़ की याद आयी। जिस भाई को चोट आ गयी थी उसे मैंने गाड़ी में बिठा लिया। लोगों से दूर होने की प्रार्थना की। कौन किसकी सुनता ? तब मैंने अपना शस्त्र बाहर निकाला। मैंने कहा कि यदि लोग दूर नहीं होंगे और गाड़ी चलायी जायगी तो मैं नीचे कूद पड़ूँगा। मैं यह नहीं सह सकता कि किसी को भी चोट लगे। मेरे इस चमत्कारपूर्ण शस्त्र का बिजली-जैसा प्रभाव हुआ। लोग शान्त हुए, घबराये और हट गये। मैंने तुरन्त गाड़ी चलाने को कहा। अब तो नियन्त्रण मेरे हाथ में आ गया था। इसमें काफी समय गया। रास्ते में लोगों ने दीपावली कर रखी थी। उसमें से निकलते-निकलते समय बीत गया। अभी सभा होनी बाकी थी। मेरी गाड़ी का समय हो गया था। दूसरे दिन सुबह तो लाहौर पहुँचना ही था। लेकिन लोग समझ गये थे कि अब किसी प्रकार का शोर-गुल करना या मेरे आसपास भीड़ करना ठीक नहीं होगा। रात को ११ बजे मण्डप पर पहुँचे। वहाँ सभा में अपने-आप अद्‌भुत व्यवस्था हो गयी थी। चार हजार या उससे भी ज्यादा लोग रहे होंगे। मेरा गला कुछ बैठ गया था। किन्तु लोगों ने ऐसी शान्ति रखी कि सब लोग दूर तक मेरी आवाज सुन सके। अपने भाषण में मैंने कहा कि यदि हम लाखों लोगों में काम करना चाहते हैं तो हमें व्यवस्था करना सीखना चाहिए। फिर स्थानिक झगड़े की चर्चा करते हुए उन्हें एक-दूसरे की बात सहन करने और झगड़ा शान्त करने की सलाह दी। और फिर लोगों से बिदा ली। इस तरह भाग-दौड़ करते हुए इन दोनों शहरों के दर्शन करके तारीख २३ की सुबह मैं लाहौर पहुँच गया।"

खिलाफत और हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य

२० फरवरी को गाँधीजी काशी आये। इसी दिन तीसरे पहर

' बजे टाउनहाल के मैदान में खिलाफत की एक आम सभा
' सभा में मौलाना शौकत अली, मौ० अबुलकलाम आजाद,
मोहन मालवीय, पं० मोतीलाल नेहरू, लाला हर किशनलाल
·ाब के कई अन्य नेता उपस्थित थे। गाँधीजी गगनभेदी
के बीच उठे। उन्होंने खिलाफत के प्रश्न तथा हिन्दू-मुस्लिम
र अपने विचार प्रकट करते हुए इस पर जोर दिया कि ये
तियाँ अपने-अपने धर्म के आदेशों का पालन करते हुए भी
. के प्रति शुद्ध और सच्चा प्रेम-भाव रख सकती हैं। उन्होंने
से जोरदार शब्दों में अपील की कि वे खिलाफत के आन्दोलन
मानों की मदद करें।

डॉ० भगवान दास के साथ

विद्यार्थियों की सभा में भाषण

दूसरे दिन २१ फरवरी को हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी में छात्रों की एक सभा उपकुलपति की अध्यक्षता में हुई। इस सभा में गाँधी-जी ने हिन्दी में भाषण करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को राजनीति का अध्ययन करना चाहिए परन्तु उसमें सक्रिय भाग नहीं लेना चाहिए। उनका आदर्श संयम, न कि स्वेच्छाचारिता, होना चाहिए। उन्होंने भरत के जीवन से संयम के दृष्टान्त प्रस्तुत किये और कहा कि विद्यार्थियों के लिए उचित है कि अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धाभाव रखना सीखें। उन्होंने मालवीयजी की सेवाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका जीवन अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए दृष्टान्त-रूप है।

पुनः काशी और प्रयाग में

३० मई को असहयोग-आन्दोलन पर विचार करने के लिए, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक काशी में हुई। गाँधीजी ने उसमें भाग लिया। वहाँ से वह इलाहाबाद गये जहाँ १ और २ जून को हिन्दुओं और मुसलमानों का एक संयुक्त सम्मेलन हुआ। गाँधीजी उसमें शामिल हुए। ३ जून को इलाहाबाद में ही अखिल भारतीय केन्द्रीय खिलाफत कमेटी की बैठक हुई। उसमें गाँधीजी ने बड़ा सारगर्भित भाषण दिया जिसे लोगों ने बड़े ध्यान और शान्ति के साथ सुना। उन्होंने कहा—"हम यह युद्ध नैतिक बल के जोर पर ही जीतना चाहते हैं। असहयोग-आन्दोलन चार चरणों में किया जायगा।............पहिला चरण वाइसराय को एक महीने का समय देने के बाद शुरू किया जायगा।" उन्होंने बहिष्कार को अव्यवहार्य बताते हुए उसके प्रति अपनी असहमति प्रकट की और उसके बदले

स्वदेशी अपनाने को कहा। उन्होंने लोगों से किसी भी रूप में हिंसा न करने का अनुरोध किया।

संयुक्त प्रान्तीय सम्मेलन, मुरादाबाद

इसी साल अक्तूबर में गाँधीजी ने पुनः संयुक्त प्रान्त (अब के उत्तर प्रदेश) में ५ दिनों तक कई शहरों का दौरा किया। सबसे पहिले वह ११ अक्तूबर को संयुक्त प्रान्तीय सम्मेलन के मुरादाबाद अधिवेशन में शामिल हुए। इस सम्मेलन में बोलते हुए उन्होंने कहा—"मुझे अपने भाई पं० मदनमोहन मालवीय से भिन्न मत रखने पर गहरा दुःख है।............बहुत गम्भीर चिन्तन के बाद भी मैं यही मानता हूँ कि देश की स्वतन्त्रता का एक मात्र मार्ग असहयोग ही है।..............भारत को आजादी दिलाने के लिए दो बातें आवश्यक हैं। पहिली तो यह कि हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता हो।............दूसरी शर्त है असहयोग-आन्दोलन को सफल बनाना। ....सरकार खिलाफत के सम्बन्ध में अपने वादों से मुकर गयी है। उसने पंजाब पर कहर बरपा किया है।............ऐसी सरकार से सम्बन्ध बनाये रखना अपराध है।............मेरे विचार से ऐसी सरकार के साथ सहयोग करना, इसकी विधान-परिषदों में बैठना या अपने बच्चों को इसके स्कूलों में भेजना हराम है।"

अलीगढ़ में

१२ अक्तूबर को गाँधीजी अलीगढ़ पहुँचे और शौकत अली तथा मुहम्मद अली के साथ यूनियन हाल में विद्यार्थियों से मिले। इस अवसर पर किसी के द्वारा उनके कार्यक्रम की आलोचना के उत्तर में उन्होंने कहा—"यह काम डिस्ट्रक्शन (विनाश) का अवश्य है,

किन्तु फिलहाल जो खराब घास उग आयी है उसे जड़मूल से उखाड़ने की ही जरूरत है जिससे कि अच्छे अनाज की बुवाई की जा सके।"

कानपुर में

१४ अक्तूबर को वह कानपुर पहुँचे। वहाँ परेड मैदान की एक आम सभा में असहयोग पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा—"यूरोप की सबसे बड़ी ताकत से हमारी यह लड़ाई चल रही है। ऐसी लड़ाई में अगर हम विजय चाहते हैं तो हमें उसकी आवश्यक शर्तें समझ लेनी चाहिए। इनमें से एक शर्त है—संगठन की क्षमता।............दूसरी शर्त है—हिन्दू-मुस्लिम एकता। यह एकता जबानी जमा-खर्च की नहीं बल्कि हृदयों की एकता होनी चाहिए। हिन्दुओं और मुसलमानों की समझ में ज्योंही यह बात आ जायगी कि उनके सहयोग के बिना ब्रिटिश शासन असम्भव है, और ज्योंही वे उन्हें अपना सहयोग देना बन्द कर देंगे, त्योंही विजय हमारे हाथ में होगी।............" उन्होंने यह भी कहा कि बलिदान ही सचाई की सच्ची कसौटी है और सचाई तबतक विजयी नहीं होती जबतक उसके पीछे बलिदान की सच्ची भावना न हो। लोगों से उन्होंने मार्मिक अपील करते हुए कहा कि वे अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों से निकाल लें, अदालतों और कौंसिलों के चुनावों का बहिष्कार करें तथा विलासिता का जीवन छोड़कर स्वदेशी को अपनायें।

लखनऊ में

१५ अक्तूबर को सुबह मौ० मुहम्मद अली और शौकत अली के साथ गांधीजी लखनऊ पहुँचे। एक पत्र-प्रतिनिधि के प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा—"मैंने पिछले तीस वर्षों से लगातार सरकार से

सहयोग करने का प्रयत्न किया है, किन्तु अब मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

इसी दिन सार्वजनिक सभा में गाँधीजी ने बड़ा ओजस्वी भाषण दिया जिसमें उन्होंने कहा—"·········ब्रिटिश हुकूमत इस समय शैतान की प्रतिमूर्ति है और जो खुदा के बन्दे हैं वे शैतानियत के साथ मुहब्बत नहीं रख सकते।············इस हुकूमत ने इतने घोर अत्याचार किये हैं कि यह खुदा और हिन्दुस्तान आगे तोबा न करे, तो जरूर मिट्टी में मिल जायगी। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि जबतक वह तोबा न करे, तबतक उसे मिटाना हर भारतीय का कर्तव्य है। सरकार की रंगरूटी में जाना नरक में जाने के समान है—यह कहना यदि अपराध हो तो अवश्य ही यह अपराध करके पवित्र बनना प्रत्येक व्यक्ति का फर्ज है।

"·········गुलामी में रहने से समुद्र में डूबना बेहतर है।········ यह सरकार डाकू से भी बुरी है। उसने हमारा सब छीन लिया है। इतना ही नहीं, वह तो हमारी आत्मा पर भी अधिकार करना चाहती है।············हमें उससे इतना-भर कह देना है कि जबतक हमारा वित्त-मात्र ही नहीं, बल्कि हमारी इज्जत, हमारी आजादी वापस नहीं मिलती, तबतक तुमसे मुहब्बत रखना हराम है।"

बरेली में

१७ अक्तूबर को गाँधीजी बरेली पहुँचे। वहाँ की नगरपालिका ने उनका अभिनन्दन किया। अभिनन्दन-पत्र के उत्तर में भाषण करते हुए गाँधीजी ने कहा—"·········आप लोग इसी प्रकार निडर बने रहें। अमृतसर में नगरपालिका से सरकार ने बहुत नीच कृत्य करवाये हैं, यहाँ तक कि लोगों को जल देना बन्द करवा दिया है।

इससे घोर कृत्य और क्या हो सकता है? आप पर कितने ही अत्याचार क्यों न किये जायँ, आप अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखने का प्रयत्न करें।............दूसरी बात मैं यह कहता हूँ कि यदि आप में शक्ति हो तो आप अपने स्कूलों की स्वतन्त्रता बनाये रखें। यदि आप सरकार से मिलनेवाला अनुदान लेना बन्द कर दें तो आपके स्कूल स्वतन्त्र हो जायँगे।............"

यद्यपि इसके बाद १९२० में वह संयुक्त प्रान्त में नहीं आये किन्तु उसकी समस्याओं में उनकी रुचि बराबर बनी रही और वह बराबर पत्रादि लिखकर, निर्देश देकर उसे राह दिखाते रहे।

: ७ :

असहयोग के तूफानी दिनों में !

१९२०--२१ के वे तूफानी दिन ! ऐसा लगता था मानो बादल जल-थल एक करके छोड़ेंगे । सदियों से सोया राष्ट्र एकाएक जग उठा था । गाँधीजी सारे देश में त्याग, बलिदान और अहिंसात्मक असहयोग का अलख जगाते घूम रहे थे । एक छोटा-सा आदमी मानो विराट हो गया था । आज यहाँ, कल वहाँ; जहाँ जाते, मुर्दों में प्राण फूंक देते, मिट्टी उनके स्पर्श से शेर हो उठती थी । अदालतों का रोब-दाब उठ गया; स्कूल-कालेज खाली होने लगे । सब में एक नया जोश, एक नयी प्राण-भावना दिखाई देने लगी ।

इन दिनों गाँधीजी कितनी ही बार संयुक्तप्रान्त में आये और दिन-दिन इस प्रदेश से उनका सम्बन्ध प्रगाढ़ होता गया ।

अक्तूबर में तो उन्होंने मुरादाबाद, अलीगढ़, कानपुर, लखनऊ और बरेली का दौरा किया ही था । नवम्बर में वह पुन: संयुक्त प्रान्त में आये । वह मालवीय जी महाराज से, जिनकी तबीयत उन दिनों खराब थी, मिलने काशी जाना चाहते थे किन्तु कहीं उन पर और बोझ न पड़े और उनकी तबीयत ज्यादा खराब न हो जाय इसलिए स्व० शिवप्रसाद गुप्त (काशी) तथा मोतीलालजी नेहरू को उनकी स्थिति जानने के लिए तार भेजे ।

झाँसी

२० नवम्बर (१९२०) को वह झाँसी पहुँचे। इस अवसर पर झाँसी नगर और हार्डीगंज को, जहाँ यह भाषण हुआ था, गाँधीजी के स्वागत के लिए बहुत अच्छी तरह सजाया गया था और खूब रोशनी की गयी थी। गाँधीजी के साथ मौलाना शौकत अली भी आये थे।

गाँधीजी ने रोशनी और सजावट की आलोचना करते हुए कहा कि "जबतक खिलाफत का सवाल हल नहीं होता, पंजाब में किये गये अत्याचारों का इन्साफ नहीं किया जाता और स्वराज्य नहीं हासिल हो जाता, तबतक किसी को भी खुशियों में शामिल नहीं होना चाहिए। हमारे उद्देश्य केवल हिन्दू-मुस्लिम एकता और हिंसा-रहित असहयोग से ही पूरे हो सकते हैं।" इसके बाद उन्होंने असहयोग-कार्यक्रम के विविध अंगों पर बल दिया और कहा कि किसी को भी सेना में भरती नहीं होना चाहिए।

अन्त में उन्होंने सरस्वती पाठशाला के लिए चन्दे की अपील की।

आगरा

२३ नवम्बर १९२० को गाँधीजी अलीगढ़ में थे। उसी दिन वह आगरा पहुँचे। गाँधीजी तथा अन्य नेता एक जुलूस में, सभास्थल तक ले जाये गये। जुलूस के साथ बैण्ड बज रहा था और रास्ता खूब सजाया गया था। सभा-स्थान तक पहुँचने में दो घण्टे लगे। यह विशाल जन-सभा मौ० अबुलकलाम आजाद की अध्यक्षता में हुई थी। गाँधीजी जुलूस तथा भीड़भाड़ की अव्यवस्था देख बड़े दुखी हुए और भाषण में हाल में ही आगरा में हुए हिन्दू-मुस्लिम दंगों का उल्लेख किया और अधिकारियों की मध्यस्थता के बिना ही विवाद सुलझा लेने

के लिए जनता को बधाई दी। उन्होंने कहा कि "मुझे सभा की अनुशासनहीनता देखकर दुःख होता है, क्योंकि इससे तो स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता। जुलूस में समय नष्ट होता है। बड़ी सभाओं से वह उद्देश्य पूरा नहीं होता, जिसके लिए उनका आयोजन किया जाता है। दोनों में समय व्यर्थ जाता है। शायद मुझे यह व्रत लेना पड़े कि मैं जुलूसों और बड़ी सभाओं में नहीं जाऊँगा। भारत जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के लिए शोक मना रहा है। शोक के समय संगीत और जुलूस का विचार मुझसे सहन नहीं होता।" उन्होंने इस बात पर भी खेद व्यक्त किया कि सजावट और झण्डियों आदि में विदेशी कपड़े और विदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल किया गया है, और रोशनी में विदेशी मोम-बत्तियों और लैम्पों का। उन्होंने कहा—"मैं इस सरकार को शैतानी सरकार कहता हूँ। मैं समझता हूँ कि यदि लोग सच्चाई पर रहें और नेक आचरण करें तो एक साल में स्वराज्य मिल सकता है। सरकार मुझे पागल कहती है परन्तु मैं जानता हूँ कि मैं पागल नहीं हूँ। ………" उन्होंने वकीलों से वकालत छोड़ देने, उम्मीदवारों से कौंसिलों का बहिष्कार करने और मतदाताओं से मत न देने का आग्रह किया।

विद्यार्थियों की सभा में

इसी दिन उन्होंने आगरा के विद्यार्थियों की सभा में भाषण करते हुए कहा—"गुलामी की जंजीर की चमक से हमारी आँखें चौंधिया रही हैं और हम हैं कि उसे अपनी स्वतन्त्रता का चिह्न माने बैठे हैं। यह हमारी अत्यन्त हीन गुलाम अवस्था का सूचक है। ………प्रचलित शिक्षा-पद्धति हमें कायरता सिखाती है। ………जो तालीम हमारे भय को पुष्ट करती है वह किस काम की ? जिस शिक्षा में सचाई से

चलने का अवकाश नहीं, देश-भक्ति को अवकाश नहीं, वह कैसी शिक्षा है ?

"………जिनके दिल से यह आवाज आये कि साम्राज्य द्वारा संचालित इन स्कूलों में आजादी की शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती; जिन्हें यह ईश्वरीय निर्देश प्राप्त हो कि आजादी पाने के लिए इस गुलामी से छूटना चाहिए, उन्हें माता-पिता को विनयपूर्वक समझाना चाहिए। यदि आपको यह जान पड़े कि यह घर जल रहा है और इसे तत्काल छोड़ने में ही छुटकारा है तो उसे छोड़ देना चाहिए। ……… बिना शर्त स्कूलों का त्याग करना स्वतन्त्रता का पहिला पाठ है। ………यह शिक्षा नास्तिकता की शिक्षा है।………"

काशी में

२४ नवम्बर (१६२०) को गाँधीजी दिल्ली से काशी के लिए रवाना हुए। २५, २६ और २७ नवम्बर को वह काशी में मालवीय जी महाराज के पास रहे। इस अवसर पर उन्होंने काशी में कई व्याख्यान दिये।

विद्यार्थियों की सभा में

२६ नवम्बर को उन्होंने विश्वविद्यालय के अहाते के बाहर विद्यार्थियों की एक सभा में भाषण किया। यह भाषण अत्यन्त मार्मिक और महत्वपूर्ण है। इसमें उन्होंने कहा—"………आजकल यह कहा जा रहा है कि मैं विद्यार्थियों को बहका रहा हूँ। ………मैं किसी को बहकाना नहीं चाहता। मैं विद्यार्थियों को बहका ही नहीं सकता। मैं भी एक विद्यार्थी था और विद्यार्थी अवस्था में हर काम विनयपूर्वक करता था। मैं चार बच्चों का पिता हूँ और ऐसे सैकड़ों लड़के मेरे पास

आ चुके हैं, मैं आज भी जिनके पिता-स्वरूप होने का दावा करता हूँ। ऐसी हालत में मेरे मुँह से बहकाने की बात निकल ही नहीं सकती।

"परन्तु आज तो जो-कुछ मैं कर रहा हूँ, उसके कारण बुजुर्ग लोग ऐसा मानते हैं कि मैं उनके साथ अन्याय कर रहा हूँ। उनका खयाल है कि जिस सत्य के आग्रह का मैं दावा करता हूँ, उससे भी थोड़ा डिग गया हूँ, और जिस विवेक का दावा करता रहा हूँ, मेरी आजकल की भाषा में वह भी नहीं बचा है। इन सब बातों को मैं सोचता हूँ, और मेरी आत्मा कहती है कि ऐसा नहीं है। ·········मैं जो कुछ कहता हूँ, शान्ति से, सोच-समझ कर कहता हूँ। मैं पिछले दिसम्बर तक जिस भ्रम में था, वह भंग हो गया है, और इस कारण आज मेरे मुँह से जो भाषा निकलती है, वह कुछ अलग है। ·········जो चीज जैसी है उसे वैसा ही बताने में विवेक का भंग नहीं है और सत्य का पालन है।

अपनी अन्तरात्मा की बात मानिए

"पण्डित जी (मालवीय जी महाराज) का एक व्याख्यान (इलाहाबाद के दैनिक) 'लीडर' में छपा है। उसके एक वाक्य की ओर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ। वाक्य है : 'सब-कुछ सोच-समझकर जो तुम्हारी अन्तरात्मा कहे, सो करो।' मैं भी यही कहना चाहता हूँ। यदि आपको अपनी अन्तरात्मा की सच्ची आवाज के विषय में कुछ भी सन्देह रह जाय और आप स्वयं मन में निर्णय न कर पायें तो मेरी न मानें, दूसरे की भी न मानें, केवल मेरे पूज्य भाई साहब, पण्डित जी, की ही मानें। मालवीय जी से बड़े धर्मात्मा मैंने नहीं देखे। जीवित भारतीयों में मुझे उनसे ज्यादा भारत की सेवा करनेवाला भी कोई दिखाई नहीं देता। ···········मैंने अपने दुःख अनेक बार उनके आगे रोये हैं और उनसे आश्वासन प्राप्त किया है। वह तो मेरे बड़े भाई के

समान हैं। ·········इसलिए मैं तो यह कह सकता
कहे-अनुसार तभी करें जब आपके दिल से यह आर
जो गाँधी कहता है वही सत्य बात है। किन्तु यदि आप
दोनों हमारे नेता हैं, दोनों में से एक को चुनना है तो आ
ही कहना मानें।

"यह सही है कि विश्वविद्यालय पण्डितजी का प्रा
समझ से, उससे भी अधिक भारत उनका प्राण है।····
का यह खयाल है कि आपमें से कुछ लोग बिना विचारे
हैं और बिना विचारे आप कुछ भी करेंगे तो स्थान-
परन्तु यदि आप लोगों को ऐसा लगे कि इस संस्था में
आप इसे तुरन्त छोड़ दें, पण्डितजी आपको आशीर्वा
यदि आपकी आत्मा प्रज्वलित नहीं है तो आप मेरे
की ही सुनें।

...के साथ

काशी की सार्वजनिक सभा में

उसी दिन (२६ नवम्बर को) टाउनहाल के मैदान में एक सभा बा० भगवानदास जी की अध्यक्षता में हुई। इस सभा में पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहर लाल, मौ० अबुलकलाम आजाद और देशबन्धु चित्तरंजनदास इत्यादि अनेक बड़े-बड़े नेता उपस्थित थे। बड़ी भीड़ थी, बड़ा जोश-खरोश था लोगों में। लगता था कि राष्ट्रीय भावनाओं का एक सैलाब चारों तरफ बढ़ता जा रहा है। मैं स्वयं भी इस सभा में उपस्थित था और गाँधीजी के व्याख्यान का गहरा प्रभाव मुझ पर पड़ा था। गाँधीजी ने देश के युवकों, विशेषत: विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा—"·········यह सल्तनत राक्षसी सल्तनत है। हमारा कर्त्तव्य है कि या तो उसे ठीक करें या मिटा दें। ·········आज तक हमने केवल बातों से काम लिया है। अब प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह काम करे। ·········उसे (सरकार को) दुरुस्त करने का तरीका कांग्रेस, मुस्लिम लीग, सिख लीग सबने बता दिया है। यह तरीका असहयोग का तरीका है अर्थात् न सरकार से मदद लें, न सरकार को मदद दें; खिताबों को छोड़ दें।·········फिर हमें अदालतें छोड़नी चाहिए,·········वकीलों को वकालत छोड़ देनी चाहिए।············ माँ-बाप को चाहिए कि मदरसों और विश्वविद्यालयों से अपने लड़कों को हटा लें। ·········कांग्रेस ने यह भी कहा है कि कौंसिलों में नहीं जाना चाहिए। ३० तारीख को कौंसिलों का चुनाव है। यह हमारी परीक्षा का दिन होगा। ·········फिर सिपाहीगिरी हराम है। आप भरती के सिपाही न हों, आपको हिन्दुस्तान की आजादी का सिपाही बनना चाहिए।

"दूसरा सवाल स्वदेशी का है। जो कपड़ा यहाँ तैयार हो उसी को इस्तेमाल करना चाहिए। स्वदेशी तुम्हारा फर्ज है। खद्दर पहिनो;

समान हैं। ....इसलिए मैं तो यह कह सकता हूँ कि आप कहे-अनुसार तभी करें जब आपके दिल से यह आवाज निकले जो गाँधी कहता है वही सत्य बात है। किन्तु यदि आपको ऐसा लगे दोनों हमारे नेता हैं, दोनों में से एक को चुनना है तो आप पण्डितजी ही कहना मानें।

"यह सही है कि विश्वविद्यालय पण्डितजी का प्राण है, परन्तु समझ से, उससे भी अधिक भारत उनका प्राण है।...........पण्डि का यह खयाल है कि आपमें से कुछ लोग बिना विचारे कदम उठ हैं और बिना विचारे आप कुछ भी करेंगे तो स्थान-भ्रष्ट हो जाये परन्तु यदि आप लोगों को ऐसा लगे कि इस संस्था में पढ़ना पाप है आप इसे तुरन्त छोड़ दें, पण्डितजी आपको आशीर्वाद देंगे। प यदि आपकी आत्मा प्रज्वलित नहीं है तो आप मेरे बजाय पण्डि की ही सुनें।

महामना मालवीय जी के साथ

आप शान्त कैसे बैठ सकते हैं ?

"………आप जिन परिस्थितियों में पढ़ते हैं, उनमें ऐसी ही शिक्षा मिलती है कि मन में मनुष्य का डर रखना पड़े। परन्तु मैं तो उसे सच्चा एम०ए० कहूँगा जिसने मनुष्य का डर छोड़कर ईश्वर का डर रखना सीखा हो। ………अंग्रेज इतिहासकार कहते हैं भारत में तीन करोड़ लोगों को दिन में दो बार पेट-भर खाने को नहीं मिलता। बिहार में अधिकांश लोग सत्तू नामक निःसत्व खुराक खाकर रहते हैं। जब भुनी हुई मक्की का यह आटा, पानी और लाल मिर्चों के साथ गले के नीचे उतारते हुए मैंने लोगों को देखा तो मेरी आँखों से आग बरसने लगी। ………ऐसी स्थिति में आप निश्चिन्त होकर कैसे बैठ सकते हैं ? ………यदि हमें आजादी से खाने को न मिले तो हममें भूखों मरकर आजाद होने की ताकत आनी चाहिए। ………मैं कहता हूँ कि यह हुकूमत राक्षसी है, इसलिए उसका त्याग करना हमारा धर्म है। ………शान्तिमय असहयोग करने की ताकत आप में न आये, तो भारत नष्ट हो जायगा।

जयनाद से स्वराज नहीं मिलेगा !

"………पंजाब में अत्याचार करनेवाली, छः-छः सात-सात वर्ष के बालकों को धूप में चलानेवाली, स्त्रियों का लाज लूटनेवाली ………हुकूमत के अधीन पाठशालाओं में पढ़ना मेरे खयाल से सबसे बड़ा अधर्म है। ………मेरी आत्मा कितनी जल रही है, उसका मैं आपको अन्दाज नहीं करा सकता। ………इस राज-प्रथा के मातहत हमारी गुलामी बढ़ती ही जा रही है। और गुलाम जब गुलामी की जंजीर की चमक देखकर मुग्ध हो जाय तब उसकी गुलामी सम्पूर्ण हुई कहलाती है। मैं कहता हूँ, पैंतीस वर्ष पहले जो गुलामी थी, उससे

अधिक गुलामी अब हममें है।

"............आज तो आप ऐसी शिक्षा पा रहे हैं जिससे बेड़ियाँ और अधिक मजबूत हो जायँ। ....देश में जहाँ कितनों को पूरा खाना नहीं मिलता, जहाँ की स्त्रियाँ बदलने को दूसरे कपड़े न होने के कारण कई-कई दिनों तक स्नान नहीं कर पातीं, वहाँ आप लोगों को पढ़ने-लिखने के लिए बड़े-बड़े महल चाहिए? ....देश के लिए दर्द हो, मेरे अन्दर जो आग जल रही है, वही आपके भीतर जल रही हो तो मकान-वकान की बात भूल जाइए और जैसा मैं कहता हूँ वैसा असहयोग कीजिए। ....मैं बार-बार कहता हूँ कि स्वराज्य तभी मिलेगा जब आप अपना धर्म पहिचानेंगे। जय-नाद करने से वह नहीं मिल सकता। ....मैं कहता हूँ, आप इस धधकती आग से दूर हो जायँ, ...बिना किसी शर्त के विद्यालय छोड़ें। सात हजार बार गरज हो तो छोड़ें, नहीं तो वापिस चले जायँ। और छोड़ कर वापिस जाना हो तो छोड़ें ही नहीं। ......अन्त में मैं आपसे कहता हूँ कि काशी विश्वनाथ आपको निष्कलुष बनायें, धैर्य दें और वह सभी कुछ दें जिसकी आपको आवश्यकता है।" ⊙

⊙ गाँधीजी की इस मर्मस्पर्शी अपील से प्रभावित होकर जिन व्यक्तियों ने शिक्षा-संस्थाओं का बहिष्कार किया उनमें से अनेक आगे चलकर देश के सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण योग देने में समर्थ हुए। आचार्य कृपालानी ने अध्यापन कार्य त्याग कर बहिष्कार किया और छात्र रूप में शिक्षा-संस्थाओं का बहिष्कार करने वालों में से प्रमुख थे—श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री विचित्र नारायण शर्मा, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री अलगू राय शास्त्री, श्री त्रिभुवन नारायण सिंह, इस पुस्तक के लेखक श्रीरामनाथ 'सुमन', प्रो० राजाराम शास्त्री, श्री राजाराम शास्त्री आदि।

काशी की सार्वजनिक सभा में

उसी दिन (२६ नवम्बर को) टाउनहाल के मैदान में एक सभा बा० भगवानदास जी की अध्यक्षता में हुई। इस सभा में पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहर लाल, मौ० अबुलकलाम आजाद और देशबन्धु चित्तरंजनदास इत्यादि अनेक बड़े-बड़े नेता उपस्थित थे। बड़ी भीड़ थी, बड़ा जोश-खरोश था लोगों में। लगता था कि राष्ट्रीय भावनाओं का एक सैलाब चारों तरफ बढ़ता जा रहा है। मैं स्वयं भी इस सभा में उपस्थित था और गाँधीजी के व्याख्यान का गहरा प्रभाव मुझ पर पड़ा था। गाँधीजी ने देश के युवकों, विशेषत: विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा—"·········यह सल्तनत राक्षसी सल्तनत है। हमारा कर्त्तव्य है कि या तो उसे ठीक करें या मिटा दें। ·········आज तक हमने केवल बातों से काम लिया है। अब प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह काम करे। ·········उसे (सरकार को) दुरुस्त करने का तरीका कांग्रेस, मुस्लिम लीग, सिख लीग सबने बता दिया है। यह तरीका असहयोग का तरीका है अर्थात् न सरकार से मदद लें, न सरकार को मदद दें; खिताबों को छोड़ दें।·········फिर हमें अदालतें छोड़नी चाहिए,·········वकीलों को वकालत छोड़ देनी चाहिए।············ माँ-बाप को चाहिए कि मदरसों और विश्वविद्यालयों से अपने लड़कों को हटा लें। ·········कांग्रेस ने यह भी कहा है कि कौंसिलों में नहीं जाना चाहिए। ३० तारीख को कौंसिलों का चुनाव है। यह हमारी परीक्षा का दिन होगा। ·········फिर सिपाहीगिरी हराम है। आप भरती के सिपाही न हों, आपको हिन्दुस्तान की आजादी का सिपाही बनना चाहिए।

"दूसरा सवाल स्वदेशी का है। जो कपड़ा यहाँ तैयार हो उसी को इस्तेमाल करना चाहिए। स्वदेशी तुम्हारा फर्ज है। खद्दर पहिनो;

यही असहयोग है। तलवार मत खींचो, उसको म्यान में रखो। तलवार से हमारा ही गला कटेगा। हिन्दू-मुसलमानों में जबानी नहीं, दिली एकता होनी चाहिए।.........अगर हम साफ दिल से काम करेंगे और पवित्र भाव से ईश्वर के चरणों में अपने को अर्पित कर देंगे,.........तो हमें स्वराज्य फौरन मिल जायगा। यही स्वराज्य राम राज्य है।"

पुनः काशी के विद्यार्थियों की सभा में

यद्यपि गाँधीजी एक दिन पहिले विश्वविद्यालय के अहाते के बाहर विद्यार्थियों को सम्बोधित कर चुके थे किन्तु मालवीयजी के आग्रह पर दूसरे दिन, २७ नवम्बर को उन्होंने फिर यूनिवर्सिटी हाल में भाषण दिया। सभा की अध्यक्षता स्वयं मालवीयजी ने की थी। इस सभा में गाँधीजी ने कहा—".........जब मैं आप लोगों को देखता हूँ, बड़ी-बड़ी इमारतें देखता हूँ तो मेरा हृदय रोता है। लेकिन आज ज्यादा रो रहा है, क्योंकि विश्वविद्यालय के प्राण मेरे पूजनीय बड़े भाई मालवीयजी हैं। मैं उनको छोड़कर कोई काम नहीं करता। जब से मैं हिन्दुस्तान वापिस आया, तबसे यही खयाल था कि उन्हीं के साथ अपना जीवन व्यतीत करूँगा। ....इसलिए मैं इस भय से काँप रहा हूँ कि कहीं मेरे मुँह से कोई ऐसी बात न निकल जाय जिससे मेरे आदरणीय भाई को कोई दुःख हो। किन्तु मेरा धर्म मुझे सिखाता है ....कि जिस बात को मैं धर्म समझता हूँ उसके लिए प्यारी-से-प्यारी वस्तु को भी त्याग दूँ। मैं आज ऐसा ही कर रहा हूँ।.........

धर्म के लिए देह छोड़ी जा सकती है

".........मैं तो अधर्मी के हाथ से स्वर्ण-दान भी नहीं ले सकता। इसी तरह जहाँ उसकी ध्वजा फहराती है, वहाँ विद्या लेना दोष समझता

हूँ। ....सच तो यह है कि मैं इस सल्तनत में ही नहीं रहना चाहता। अगर एकदम त्याग सकता तो त्याग देता किन्तु तब मैं यहाँ कैसे आता और यह पैगाम आपको कैसे दे पाता। इसी कारण इस असह्य स्थिति में भी जी रहा हूँ। ......मैं २४ घण्टे एक ही जप करता हूँ कि इसे कैसे हटाऊँ। इसी से मैं यहाँ हूँ। विद्यार्थियों से मैं कहता हूँ कि इस सल्तनत से सहकार छोड़ना ही हमारा परम धर्म है। जितना आपसे सम्भव है, उतना कीजिए। आपके लिए सबसे बड़ी चीज यही है कि यहाँ जो विद्या-दान आपको मिलता है, उसका त्याग कर दें। ......यदि आपका इस सल्तनत के बारे में वही खयाल है जो मेरा है तो अपना धर्म समझ कर इसे छोड़ दीजिए। ....मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह आजीविका की बात नहीं है, मनुष्यत्व की बात है। मनुष्यता के बाद ही आजीविका की बात आ सकती है। स्वतन्त्रता धर्म है। धर्म के पीछे देह है। देह के लिए धर्म नहीं छोड़ा जा सकता लेकिन धर्म के लिए देह छोड़ी जा सकती है। हमें आर्थिक, मानसिक, आत्मिक किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं है। ....यहाँ पर करोड़ों के पास न वस्त्र है, न अन्न। ....इस विश्वविद्यालय में कई बातों की सुविधा है। इंजीनियरी की तालीम मिलती है, और बातों की भी आसानी है। किन्तु हिन्दुस्तान के लाभ के लिए इसका बलिदान करना चाहिए। यदि ऐसा थोड़ा-थोड़ा लाभ हम स्वीकार करते रहे तो यह राज्य चलता रहेगा।

हिन्दू धर्म असहयोग सिखाता है

"........हिन्दू धर्म असहयोग सिखलाता है। ....असहयोग ही एक उपाय है जिससे या तो स्वतन्त्रता मिल जायगी या सल्तनत की खराबियाँ मिट जायँगी। ....जो कुछ मालवीयजी कर रहे हैं, अपना धर्म समझ कर कर रहे हैं। मतभेद के कारण मेरा उनका परस्पर

का स्नेह कम नहीं हो सकता । ....उनके प्रति आप लोगों का पूज्यभाव भी कम न होगा । ....मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी सभ्यता और नम्रता न छोड़िएगा । ......जो विद्यार्थी आपके साथ न हों उनसे घृणा या द्वेष न कीजिएगा, उन्हें न सताइएगा । ....जो इसे छोड़ने के बाद देश की सेवा न करेंगे, स्वार्थी और व्यसनी हो जायेंगे तो उससे मुझे बड़ा क्लेश होगा । उनको भी पाप होगा और मुझे भी पाप लगेगा । जो कुछ आपको करना हो, सोच-समझ कर कीजिए । ....अगर आपका दिल स्वीकार करे तो आप अपना धर्म समझ कर असहयोग कर सकते हैं । मेरे भाई साहब आपको अवश्य आशीर्वाद देंगे ।

संयम आपका धर्म है

"..........मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिन्दुस्तान में जो सल्तनत चल रही है, वह जो अत्याचार कर रही है उसके कायम रहने का बड़ा भारी सबब यह है कि हमको उसकी तालीम के असर ने मुग्ध कर लिया है । ....इस शिक्षा-प्रणाली से हम और पराधीन हो गये । .... जिस सल्तनत को हम राक्षसी समझते हैं ....उसकी छाया में शिक्षा लेना मैं अधर्म समझता हूँ । यदि ऐसा ही आपको भी निश्चय हो तो आप इसको छोड़ दीजिए । ....जो कोई इस शिक्षण को छोड़ना चाहता है, वह एक बड़ा भारी काम कर रहा है । इसी में स्वतन्त्रता है । ....बाहर जाकर आप उद्धत न हों । ....संयम आपका धर्म है । ....शान्त चित्त से सब काम कीजिएगा । ....यह आपकी परीक्षा है । अपने विनय से असहयोग को सुशोभित कीजिए । ... हमें बड़े आत्म-बलिदान की आवश्यकता है । ....ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह आपको स्वच्छ भाव दे, बल दे । ...."

२७ नवम्बर को ही हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति आनन्द

के तूफानी दिनों में !

पुभाई ध्रुव की अध्यक्षता में रामघाट के समीप एक सार्व
जिसमें गाँधीजी ने हिन्दू धर्म की दृष्टि से गोरक्षा का
और फिर कहा कि केवल असहयोग ही स्वराज्य-प्रा
हायता कर सकता है। उन्होंने लोगोंसे स्वदेशी-धर्म अपन
ो और व्यापारियोंसे विदेशीमाल का व्यापार न करने को

इलाहाबाद : असहयोग पर भाषण

८ नवम्बर को गाँधीजी इलाहाबाद पहुँचे। यहाँ पं० मो
ी अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई। इस सभा में
वेजउड, मौलाना आज़ाद और शौकत अली भी शामि
ा में हिन्दी में बोलते हुए गाँधीजी ने कहा—"......यह
ने का है, भाषणों और सभाओं का नहीं। यह सरकार
रावण-राज्य जैसी है। इसने मुसलमानों के साथ
, पंजाब में अत्याचार किये हैं किन्तु आज भी उसे

द में श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित के साथ

पछतावा नहीं है।......यदि आप इन सबको अनुभव नहीं करते तो मुझे आपसे कुछ कहना नहीं है।........."

इसके बाद उन्होंने एकता पर जोर देते हुए कहा—"आप लोग एक हो जायँ तो खिलाफत और पंजाब के अन्यायों को दूर कर सकते हैं और स्वराज्य ले सकते हैं।......आपको चाहिए कि वर्तमान सरकार को सुधार दें या समाप्त कर दें। इसके लिए एकता बहुत जरूरी है।.........यदि हिन्दू और मुसलमान आज एक हो जायँ तो संसार की कोई भी शक्ति हमें दबा नहीं सकती।.........हमें शैतान को सजा देने के लिए शैतानी साधनों का उपयोग नहीं करना है।.........जैसे उजाला अँधेरे को दूर करता है, वैसे ही हम झूठ को सत्य से और बुरी शक्तियों को आत्म-बल से नष्ट कर सकते हैं।" इसके बाद गाँधीजी ने स्वदेशी की आवश्यकता पर जोर दिया और इलाहाबाद में एक राष्ट्रीय कालेज की स्थापना के लिए धन की अपील की।

इलाहाबाद : महिलाओं की सभा

दूसरे दिन, २९ नवम्बर को, महिलाओं की सभा हुई। इस सभा में उन्होंने जोर देकर कहा—"आप अपने पतियों और पुत्रों से अनुरोध करें और उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे अपने कर्त्तव्य के पथ पर चलें तथा स्वयं स्वदेशी को अपनाकर स्वतन्त्र भारत के निर्माण में प्रबल और प्रभावकारी सहायता दें। रावण के राज्य में सीता को भी चौदह साल तक वल्कल-वसन पहिनकर रहना पड़ा था। इसी तरह भारतीय महिलाओं को भी हाथकते-हाथबुने खद्दर का कपड़ा पहिनना अपना पुनीत कर्त्तव्य बना लेना चाहिए।.........स्वदेशी स्वराज्य प्राप्त करने का एक अमोघ उपाय है और उसके प्रचार का मुख्य भार भारतीय स्त्रियों पर ही है।"

इस भाषण का स्त्रियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। कई महिलाओं ने अपने आभूषण उतारकर राष्ट्रीय कार्य के निमित्त दे दिये और स्वदेशी की शपथ लेने में भी बहुत उत्साह दिखाया।

इलाहाबाद : सभा में फिर भाषण

२९ नवम्बर को गाँधीजी ने इलाहाबाद की एक दूसरी सभा मे बोलते हुए कहा—"उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तान का केन्द्र है, इसलिए उससे देश के अन्य भागों से आगे रहने की आशा की जाती है।........ उन्होंने झाँसी का उदाहरण देकर कहा—"वहाँ हिन्दू और मुसलमान छात्रों ने गीता और कुरान हाथ में लेकर शपथ ली है कि वे सरकार द्वारा नियन्त्रित संस्थाओं को छोड़ देंगे।"

हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रश्न पर बोलते हुए उन्होंने खेदपूर्वक कहा—"उत्तर प्रदेश में सरकार की चाल सफल हो गयी है और उसने फूट डालकर दोनों जातियों को पौरुष-हीन बना दिया है।......" उन्होंने इस आरोप की भी चर्चा की कि गाँधीजी ने अलीगढ़ कालेज तो खाली करा दिया किन्तु काशी विश्वविद्यालय खाली नहीं कराया। "यह सब इस बात का द्योतक है कि हममें अभी तक पारस्परिक विश्वास और सद्भाव की कमी है।.........यह तो अपने-अपने कर्त्तव्य का प्रश्न है और इसमें जो आगे आता है वही सफल है।.........यदि कोई अपने कर्त्तव्य के पालन में यह सोचता है कि पहिले दूसरे लोग आगे बढ़ें तब हम बढ़ेंगे तो इससे उसकी दुर्बलता ही प्रकट होती है। ......इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप पराक्रमी बनें और कायरों के दिलों में पैदा होनेवाली शंकाओं को निकाल बाहर करें।"

गाँधीजी के झाँसी पहुँचने पर बहुत से विद्यार्थियों ने गीता और कुरान की शपथ लेकर अपने-अपने विद्यालय छोड़े थे किन्तु चन्द दिनो

फर्क हो भी तो वह इतना ही है कि रावण के हृदय में कुछ दया होगी, कुछ कम दगा होगी । ·········रावण को ईश्वर का भय तो था परन्तु हमारी हुकूमत तो खुदा को घोलकर पी गयी है । उसका खुदा तो उसका अहंकार, उसकी दौलत और उसकी दगा है । युरोपीय संस्कृत शैतानियत से भरी है परन्तु उसमें भी अंग्रेजी हुकूमत सबसे अधिक शैतानियत से भरी है । ·········मैं इसके आश्रय में एक क्षण भी नहीं रहना चाहता । ·········आपको सरकार में मेरी तरह बुराई न दिखाई देती हो तो आप बेशक अपनी पाठशालाओं में पढ़ते रहें किन्तु यदि आप मेरे विचार के हैं तो इस हुकूमत की पाठशाला में गीता पढ़ना भी व्यर्थ है । ·········इस सारी शिक्षा में जहर भरा है क्योंकि वह हमें और पक्का गुलाम बनाने के लिए है । हमारी लड़ाई धर्म की है, सरकार की अधर्म की है । ·········उसके साथ सम्बन्ध रखना अधिक हैवान बनने और ज्यादा पक्का गुलाम बनाने के बराबर है ।

"·········मैं आपको कोई नशा नहीं देना चाहता । आपकी तालीम का नशा आपके लिए काफी है । मैं आपमें शान्त साहस फूंकना चाहता हूँ । मैं यह चाहता हूँ कि आपका हृदय कुर्बानी और तपश्चर्या के योग्य पवित्र बने ।"

इलाहाबाद : तिलक विद्यालय का उद्घाटन

इलाहाबाद के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं ने एक राष्ट्रीय हाई स्कूल खोल रखा था, जो स्वराज्य-सभा के कार्यालय में चलाया जाता था । इसे ही तिलक विद्यालय का रूप देने का निश्चय हुआ । गाँधीजी ने १ दिसम्बर को विद्यालय का उद्घाटन करते हुए कहा—"········· स्वराज्य के लिए जितना आत्म-त्याग तिलक ने किया है उतना किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं किया । इसलिए उस महान देशभक्त के नाम पर

उठा लें तो उससे अपना ही गला काटेंगे ।·········यह ठण्डी हिम्मत और अमन की लड़ाई है । यदि हमने तलवार उठाकर अंग्रेज का या अपने भाई का गला काटा तो हमारा पतन हो जायगा । फैजाबाद के किसानों ने क्या किया ? मदोन्मत्त होकर उन्होंने दूकानें लूटीं, अपने भाइयों का माल लूटा । वहाँ हमारी शक्ति का पतन हो गया । सल्तनत देख रही है कि हम लोगों ने इतना भारी आन्दोलन आरम्भ कर दिया है पर वह कुछ बोल नहीं रही है । क्यों ? सरकार देख रही है कि हम शान्ति से काम कर रहे हैं ।·········इस दशा में सरकार हमारा कुछ नहीं कर सकती । यदि आज हम शस्त्र उठा लें तो उसकी ताकत बढ़ने लगेगी ।·········स्वराज्य केवल शान्ति रखने से मिल सकता है ।·········लोग कहते हैं कि हम शान्ति भंग नहीं करना चाहते, सरकार और खुफिया वाले हम लोगों को इसके लिए बाध्य करते हैं । मैं कहता हूँ, यह पागलपन की बात है । मैं आप लोगों से कहूँ कि आप अपना दीन छोड़ दीजिए तो क्या आप इसके लिए तैयार हैं ? कभी नहीं । इसी तरह जब हम कोई बात करने के लिए तैयार नहीं हैं तो सरकार हमसे वैसा कुछ नहीं करा सकती । गुस्से में तो कुछ भी नहीं करना चाहिए । क्रोध किया तो स्वराज्य नामुमकिन है । मैं सब बातें छोड़ देने के लिए तैयार हूँ—वकीलों का प्रश्न न उठाऊँ, छात्रों को न छेड़ूँ, पर मैं शान्ति कभी नहीं छोड़ सकता । जब हम परदेशी राज्य नहीं चाहते तो हमें परदेशी लिबास और विदेशी वस्त्र भी छोड़ देना चाहिए । यदि हम लोग यह नहीं कर सकते तो एक क्या, दस बरसों में भी स्वराज्य नही मिल सकता ।·········संस्कृत के विद्यार्थी हमसे पूछते हैं कि उनका क्या कर्त्तव्य है । अब कर्त्तव्य का प्रश्न नहीं रहा । सरकारी विद्यालयों का त्याग ही एक एक मात्र कर्त्तव्य है ।···········स्वदेशी वस्त्र का प्रचार भी अत्यावश्यक है ।

जलसों से थक गया हूँ

"..........मैं जलसों से थक गया हूँ। ....सितम्बर मास से मैं यह अनुभव कर रहा हूँ, मैं घबरा उठा हूँ। हम इतने छोटे जलसों में भी शान्ति नहीं रख सकते। गोरखपुर में प्राय: डेढ़ लाख जन उपस्थित थे और बड़ी शान्ति से काम हुआ। पर हमारा काम केवल इससे नहीं चल सकता। यदि काम चलाना है तो चरखा ले लो। ....जितना समय जलसों में नष्ट किया जाता है, यदि उतने ही समय में हम सूत कातें तो कितने नंगों को ढक सकते हैं ? ....यदि आपने चरखे के मन्त्र को समझ लिया है तो स्वराज्य निकट है। .... शान्ति रहिए, काम करते चलिए। जेल से मत घबराइए। उसे महल समझिए।........."

काशी विद्यापीठ का शिलान्यास

दूसरे दिन १० फरवरी (१९२१) तो काशी विद्यापीठ का शिलान्यास करते हुए गाँधीजी ने अपने भाषण में कहा—".......... हमारी लड़ाई ऐसी है कि पिता को पुत्र के, पति को पत्नी के, पत्नी को पति के वियोग का दु:ख सहना पड़ेगा। बाबू भगवानदास ने मधुर शब्दों में बताया है कि यह लड़ाई धर्म-युद्ध है। मुझे इस बात में जरा भी संशय नहीं रह गया है, नहीं तो मैं उस संस्था को कभी न छूता जिसके प्राण मालवीय जी हैं। मेरी आत्मा यही कहती है कि या तो वह संस्था मेरी हो जाय या नष्ट हो जाय। ....जब हमें निश्चय हो गया कि इन विद्यालयों में शिक्षा लेना पाप है तो उन्हें त्यागना ही उचित होगा। यही असहयोग—तर्के मवालात—है। हमारे बिस्तरे के नीचे पचासों वर्ष से साँप छिपा है। हमें उसका पता नहीं था। आज हमें

एकाएक इसका पता लगता है । हम उस बिस्तरे पर अब नह
सकते । ………जितने विद्यालय सरकार के असर में हैं, उनस
विद्या नहीं लेनी चाहिए । जिस विद्यालय पर उसकी ध्वजा फह
है, वहाँ विद्यादान लेना पापकर्म है । यदि आप उसे पाप सम
तो यहाँ चले आइए । ………झोपड़ी में रहकर काम करना अच
महल में झण्डे की सलामी बुरी है । ………मैं यहाँ आ गया हूँ,
कारण यह है कि बाबू भगवानदास और बाबू शिवप्रसाद के दि
असहयोग की प्रतिष्ठा हो गयी है । असहयोग को बढ़ाने के लिए ह
विद्यापीठ की स्थापना की गयी है । असहयोग ही हमारे लिए
ज्ञान शास्त्र हैं । ………हमको राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए ।
के लिए हम सब काम करेंगे । हमें व्यापार को जुआ नहीं बनान
हम हिन्दुस्तान को पुण्यभूमि बनायेंगे ।………हम सबको प्रतिज्ञा
चाहिए कि विदेशी वस्त्र धारण करना महापाप है ।
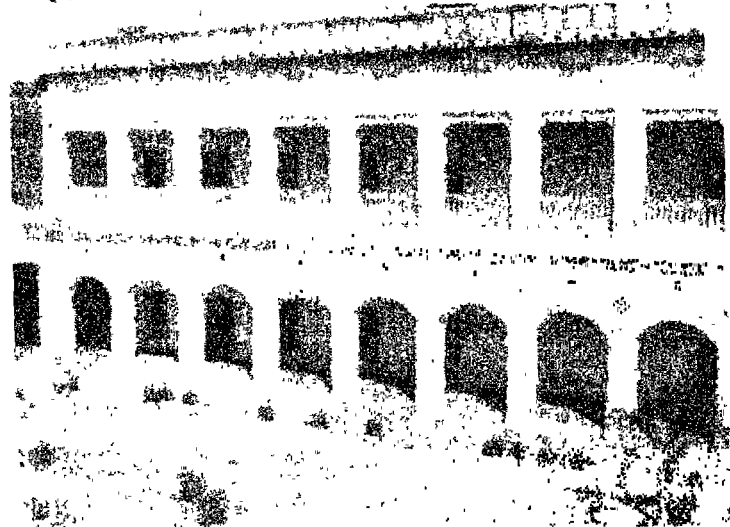
काशी विद

"………दूसरा कर्त्तव्य अपनी मातृभाषा को विकसित करना है। ………जो कुछ तालीम अंग्रेजी में मिली है उसे मातृभाषा मे हजम कीजिए। ………गुरु विद्यार्थी को खींच सकता है। बाबू भगवानदास ऐसे गुरु हैं। ………काशी अब ऐसी होनी चाहिए कि सारे भारत की इस पर दृष्टि हो। ………प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि दिन-प्रतिदिन इस विद्यापीठ की वृद्धि हो और यह विद्यालय इस राक्षसी सल्तनत को मिटाने या इसे दुरुस्त करने में हिस्सा ले।"

फैजाबाद में

इसी दिन, १० फरवरी (१९२१) को गांधीजी ने फैजाबाद की एक सभा में किसानों द्वारा की हुई हिंसा की चर्चा की और उसके लिए खेद प्रकट किया। उन्होंने हिंसा की अत्यन्त तीव्र और स्पष्ट निन्दा की और कहा कि ऐसा करना ईश्वर और मानव के प्रति पाप है। उन्होंने जमींदारों और किसानों के बीच झगड़ा कराने के समस्त प्रयत्नों की भर्त्सना की और किसानों को सलाह दी कि वे इस प्रकार लड़ने के बजाय स्वयं कष्ट सहें। उन्होंने लोगों से अपील की कि अपने हृदयो को शुद्ध करें, मन से भय निकाल दें और दृढ़ एवं निर्भय होकर आगे बढे।

उन्होंने अपने दक्षिण अफ्रीका में किये गये सत्याग्रह और उसकी सफलता का स्मरण कराते हुए उनके स्वागत में तलवारें लेकर निकाले गये जुलूस की निन्दा की। उन्होंने कहा—"हिंसा कायरता का लक्षण है। ………तलवार तो कमजोर का हथियार है।" उन्होने सगठित होने, विदेशी वस्त्र का त्याग करने और चरखा चलाने की अपील की और छात्रों से सरकारी स्कूलों का बहिष्कार करने के लिए कहा।

लखनऊ : खिलाफत की सभा में

२६ फरवरी को गाँधीजी लखनऊ पहुँचे और खिलाफत की सभा मे हिन्दुस्तानी में भाषण करते हुए कहा कि आप लोग तलवार तो नही खीच सकते किन्तु स्वराज्य प्राप्त हो जाने पर तलवार खींचने की शक्ति उत्पन्न कर सकते हैं। उन्होंने लोगों को ब्रिटिश माल का बहिष्कार करने और विदेशी वस्त्र का त्याग करने की सलाह दी।

इलाहाबाद : ८, ९ और १० मई

८, ९ और १० मई (१९२१) को वह इलाहाबाद में रहे। ८ को सरूप कुमारी नेहरू (अब विजयलक्ष्मी पण्डित) के विवाहोत्सव मे शामिल हुए। १० मई को इलाहाबाद जिला-सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में प्रतिनिधियों और किसानों के अलावा कस्तूर बा, लाला लाजपतराय, मौलाना शौकत अली, पण्डित रामभजदत्त चौधरी, मौ० हसरत मोहानी, डा० किचलू, स्वामी श्रद्धानन्द, पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरोजिनी नायडू और जवाहरलाल जी उपस्थित थे। सौभाग्य-वश लेखक स्वयं भी सभा में उपस्थित था। इस सम्मेलन में नागरिकों की ओर से गाँधीजी को एक मानपत्र दिया गया। इसका हवाला देते हुए उन्होंने कहा—"·········प्रयाग तो अब मुझे अपना घर-सा ही प्रतीत होता है। मानपत्र का अर्थ यही है कि मानपत्र देनेवाले असहयोग आन्दोलन से सहमत हैं और स्वराज्य-संग्राम में हमारे साथ हैं।········· हम लोगों को इसी वर्ष स्वराज्य लेना तथा खिलाफत और पंजाब के अन्यायों का परिमार्जन करना है। परन्तु यह केवल सम्मेलनों, भाषणों, कविताओं और अभिनन्दन-पत्रों से नहीं होगा।·········समय बदल गया है और लोगों को अपने ही प्रयत्नों से अपना उद्देश्य पूरा करना है।"

"………अपने अभिनन्दन-पत्र में आप लोगों ने कहा है कि इलाहाबाद का एक नाम और है—फकीराबाद। मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह नगर पूरी तरह उस नाम के योग्य हो। इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए हमें फकीरों की ही आवश्यकता है और मैं आशा करता हूँ कि इसमें आपका नगर अगुआई करेगा।

"कांग्रेस ने तीन काम निश्चित कर दिये हैं—एक करोड़ सदस्य बनाना, तिलक-स्वराज्य-कोष के लिए एक करोड़ रुपया इकट्ठा करना और भारत के घरों में बीस लाख चर्खे चलवाना। मैं जानना चाहता हूँ कि आपने इसमें कितना काम किया है। मुझे यह जानकर खेद हुआ कि प्रयाग से तिलक-फण्ड में अभी काफी चन्दा जमा नहीं हुआ है।……… यदि हर आदमी दो-दो पैसे भी दे तो इलाहाबाद का हिस्सा काफी हद तक पूरा हो जायगा।"

इसके बाद उन्होंने आन्दोलन को हर हालत में अहिंसक बनाये रखने और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया और कहा कि भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि वह हम लोगों को कांग्रेस के नेतृत्व में चलने की शक्ति दे।

अगस्त का दौरा

५ से १० अगस्त (२१) तक गाँधीजी ने पुनः उत्तर प्रदेश के कुछ भागों का दौरा किया। ५ अगस्त को वह अलीगढ पहुँचे और प्रमुख लोगों से मिले। वहाँ से ६ को मुरादाबाद आये।

मुरादाबाद में भाषण

६ अगस्त को उन्होंने मुरादाबाद की तीन सभाओं में भाषण किया—

सार्वजनिक सभा में, महिला-मण्डल में तथा महाराजा थियेटर में आयोजित एक सभा में । इन सब सभाओं में उन्होंने लोगों को अहिंसात्मक असहयोग का रहस्य समझाया और स्वदेशी अपनाने तथा विदेशी वस्त्र का त्याग करने पर ज़ोर दिया ।

लखनऊ में

७ अगस्त को गाँधीजी लखनऊ पहुँचे और अमीनुद्दौला पार्क की एक महती सार्वजनिक सभा में भाषण किया । इस सभा में लगभग एक लाख आदमी उपस्थित थे । अपने भाषण में गाँधीजी ने अहिंसात्मक असहयोग तथा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य पर बहुत बल दिया । उन्होंने कहा कि "किसी प्रकार का असन्तोष तथा उद्दण्डता हम लोगों के मन्तव्य में बाधक होगी ।·········आप लोग संयुक्त प्रान्त की सरकार की ज्याद-तियों का विचार कीजिए । यह सूबा इस दमन-नीति में और सूबों से आगे है किन्तु फिर भी मैं आप लोगों से शान्तिपूर्वक रहने के लिए कहूँगा । यदि आप लोग पचास हजार ऐसे कार्यकर्त्ताओं की एक फौज तैयार कर लें जो स्वतन्त्रता की रक्षा का फाटक बनने को तैयार हों तो मैं आशा करता हूँ कि संसार की कोई फौज इसे न हरा सकेगी ।" अन्त में उन्होंने हर हालत में हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाये रखने की अपील की ।

लखनऊ से ही ८ अगस्त को उन्होंने काठियावाड़ के राजा-महाराजाओं के नाम एक अपील निकाली जिसमें उन्हें सादगी से रहने, चर्खे का प्रचार करने, शराब की दुकानें बन्द करने और जनता की गरीबी पर ध्यान देने को कहा ।

कानपुर में

९ अगस्त को वह कानपुर पहुँचे । वहाँ महिलाओं की सभा में

स्वदेशी तथा विदेशी वस्त्र-त्याग पर भाषण किया। वहाँ से वह मारवाड़ी विद्यालय में आयोजित वस्त्र-व्यापारियों की सभा में गये और उन्हें विदेशी वस्त्र-वहिष्कार की आवश्यकता समझायी। कानपुर के नागरिकों द्वारा दिये गये अभिनन्दन-पत्र के उत्तर में उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की परम आवश्यकता पर बल दिया और कहा— "शान्ति और अहिंसा की बड़ी आवश्यकता है। हमें अपना क्रोध जीतना चाहिए और इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। ·········स्वदेशी के बिना स्वराज्य नहीं मिल सकता। महिलाओं का धर्म है कि वे खादी ही पहिनें। हम लोग स्वावलम्बन भूल गये हैं। हमें सीखना है कि मरना किस तरह चाहिए। यदि गोली चले तो उसे हमें अपनी छाती पर रोकना चाहिए न कि उसे पीठ देनी चाहिए। यदि अंग्रेज हमारे देश में रहना चाहते हैं तो उन्हें सहयोगी तथा सेवकों की तरह रहना सीखना पड़ेगा। वे अब मालिकों की हैसियत से यहाँ नहीं रह सकते।"

इलाहाबाद की सभा में भाषण

गाँधीजी १० अगस्त की सुबह इलाहाबाद पहुँचे। पहिले उन्होंने महिलाओं की सभा में स्वदेशी पर भाषण दिया और उनसे विदेशी वस्त्र त्याग कर खादी पहिनने और चरखा चलाने की अपील की। शाम को पं० मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में, स्वराज्य-सभा के मैदान में, सभा हुई। इसमें दस हजार से ज्यादा लोग शामिल थे। इस सभा में गाँधीजी के अतिरिक्त मौ० मुहम्मद अली और श्री स्टोक्स ने भी भाषण दिये थे। गाँधीजी ने अपने भाषण में कहा—" ·········मैं उन कार्यकर्त्ताओं को बधाई देता हूँ जो जेल गये हैं किन्तु उनके जेल जाने से हमारे स्वराज्य के कार्य में ढिलाई नहीं आनी चाहिए। यदि आप इसी वर्ष स्वराज्य प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको जेल और मृत्यु का

: देना चाहिए, बल्कि अनुभव करना चाहिए कि निर्दोष व्यक्ति क जेल-यात्रा और मृत्यु स्वराज्य को अधिकाधिक निकट ले । जबतक आप ऐसा अनुभव नहीं करते तबतक मैं समझूँगा अहिंसा और असहयोग के अर्थ को भलीभाँति नहीं समझ सके हयोग का अर्थ निष्क्रिय बैठे रहना नहीं है ।"

ुक्त प्रान्त की स्थिति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा— ाटे बालक जेल भेजे जा रहे हैं और तिस पर भी यह घोषित ा रहा है कि संयुक्त प्रान्त में कहीं कोई दमन नहीं हो रहा है । ान्त की सरकार पंजाब-सरकार से कहीं अधिक चालाक है । ड़े-बड़े नेताओं को नहीं छुआ, क्योंकि उसे डर था कि उनकी ी से प्रान्त में अशान्ति फैल जायगी, किन्तु वह छोटे बालकों ाकोठरी में बन्द करने की सजा दे रही है । यह दमन का तरीका है । ·········किसानों पर भी दबाव डाला जा रहा है

ााहाबाद की एक सभा में पं० मोती लाल नेहरू तथा टंडनजी के साथ

तथा असहयोग-आन्दोलन से अलग रहने को मजबूर किया जा रहा है। ·········फिर भी मैं चाहता हूँ कि आपमें शान्ति की भावना का प्रसार हो। सरकार लोगों को जेल में डाले या गोली से मारे तब भी आपको सरकारी अधिकारियों को बुरा-भला न कहना चाहिए, न उनका सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए। जब आप अपने ऊपर इतना नियन्त्रण प्राप्त कर लेंगे तब समझिए कि स्वराज्य आपका है। किन्तु ऐसा तबतक सम्भव नहीं जबतक कि हिन्दू और मुसलमान एक नहीं हो जाते।"

इसके बाद उन्होंने सबसे स्वदेशी अपनाने, विदेशी वस्त्र का त्याग करने और चरखा चलाने की अपील करते हुए कहा—"अब मैं यहाँ एकत्र विदेशी वस्त्रों की ढेर में आग लगाने जा रहा हूँ। इसमें किसी के प्रति दुर्भावना की कोई बात मेरे मन में नहीं है। प्रेम, अहिंसा और शान्ति मेरा धर्म है। अन्त में मैं आशा करता हूँ कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ इस दिशा में अधिक कार्य करेंगी।"

: ८ :

घोर दमन के युग में

१९२१ के उत्तरार्द्ध में जब सरकार ने देखा कि देश के सामूहिक जागरण का स्वर दिन-दिन तीव्र और प्रबल होता जा रहा है, तब उसने ऊपर से दिखाऊ शान्ति का जो चोला पहिन रखा था, उसे भी उतार फेंका और घोर दमन तथा उत्पीड़न पर उतर आयी। गाँधीजी पंजाब, पश्चिमी भारत तथा मद्रास का दौरा करते रहे। सितम्बर में अलीबन्धु गिरफ्तार कर लिये गये। नवम्बर में भारत में युवराज के आगमन पर उनके स्वागत का बहिष्कार किया गया। बम्बई में उनके आने पर दंगा हो गया। गाँधीजी ने इस दंगे की गहरी निन्दा की और प्रायश्चित्त-स्वरूप उपवास किया। युवराज के आगमन के बहिष्कार से सरकार और चिढ़ गयी। सार्वजनिक विरोध को दबाने के लिए उसने कड़ी कारंवाइयाँ कीं। इलाहाबाद के जिलाधीश ने तो २५ नवम्बर को कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के नाम सविनय अवज्ञा सम्बन्धी सभाएँ न करने का आदेश तक जारी कर दिया। दिसम्बर में लाला लाजपतराय, के० सन्तानम्, मोतीलालजी, जवाहरलाल नेहरू, चितरंजनदास की गिरफ्तारी हुई। इलाहाबाद के 'इण्डिपेण्डेण्ट' के सम्पादक जार्ज जोजेफ को १८ मास की सजा दी गयी। गाँधीजी के पुत्र हरिलाल वगैरह गिरफ्तार कर लिये गये। बाबू भगवानदास, श्री स्टोक्स, जयरामदास दौलतराम, श्यामसुन्दर चक्रवर्ती इत्यादि देश के अनेक गण्य-मान्य नेता गिरफ्तार करके जेल भेज दिये गये।

१९२२ की जनवरी के अन्त में बारडोली ताल्लुका सम्मेलन में बारडोली सत्याग्रह का निश्चय किया गया।

इस समय ऐसा तीव्र दमन हो रहा था कि उसके आवेश में जनता का एक भाग यह भूल गया कि इस आन्दोलन में अहिंसा एक केन्द्रीय सिद्धान्त है और घोर उत्तेजना की स्थिति में भी उससे हटना नहीं है। संयुक्तप्रान्त में सरकार का दमन पाशविक सीमा तक पहुँच गया था। गोरखपुर जिले के चौरीचौरा स्थान पर पुलिस की ज्यादतियों से उत्तेजित होकर एक क्रुद्ध भीड़ ने ४ फरवरी १९२२ को थाना घेर लिया; उसमें आग लगा दी। इस काण्ड में २१ सिपाही तथा चौकीदार मारे गये। इस घटना से गाँधीजी को मार्मिक क्लेश हुआ और उन्होंने इसे ईश्वर की ओर से चेतावनी समझा। १२ फरवरी को उन्होंने इस काण्ड के प्रायश्चित्त-स्वरूप ५ दिन का उपवास आरम्भ किया और उनके आग्रह पर कांग्रेस कार्य-समिति ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित करने का प्रस्ताव पास किया जो २५ फरवरी की भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में मंजूर कर लिया गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित हो जाने से भारत सरकार ने भी दमन नीति में ढिलाई करने की घोषणा की परन्तु प्रान्तों में किसी-न-किसी बहाने से बराबर दमन होता रहा। अब सरकार ने आन्दोलन के सूत्रधार गाँधीजी को ही १० मार्च को गिरफ्तार कर लिया। १८ मार्च को उन्हें ६ वर्ष की कैद की सजा सुनायी गयी। दमन की प्रतिक्रिया हुई और ११ नवम्बर को भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अपनी कलकत्ता की बैठक में सविनय अवज्ञा का प्रस्ताव पास कर दिया।

गाँधीजी यरवदा जेल में रखे गये थे। २१ अप्रैल १९२३ को उन्हें पेट में जोरों का दर्द हुआ। ५ और १५ मई को कर्नल मैडक ने उनकी परीक्षा की। २ जुलाई की रात बड़े कष्ट से बीती

इलाज से दर्द में कमी हुई परन्तु यह क्रम थोड़ी-बहुत मात्रा में चलता ही रहा। ८ जनवरी १९२४ को उन्हें फिर जोरों का पेट-दर्द हुआ। १२ जनवरी को सैसून अस्पताल (पूना) में कर्नल मैडक ने उनके अपेण्डिक्स का आपरेशन किया। ४ फरवरी को हुक्म निकाल कर सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया किन्तु वह अस्पताल में ही रहे। अच्छे होने पर भी बहुत दिनों तक कमजोरी बनी रही। १९२४ में यों भी उनके सक्रिय नेतृत्व के अभाव में आन्दोलन शिथिल पड़ गया। हिन्दू-मुसलमानों के वे सम्बन्ध नहीं रह गये जो १९२०-२१ के असहयोग के दिनों में थे। कांग्रेस में भी मत-भेद के चिह्न दिखाई पड़े जिसके फलस्वरूप आगे जाकर परिवर्त्तनवादी और अपरिवर्त्तनवादी नामक दो दल हो गये।

गाँधीजी ने मोतीलालजी के स्वराज्य दल को एक प्रकार से कांग्रेस की बागडोर सौंप दी और अपने अनुयायियों से रचनात्मक सेवा-कार्य में लग जाने को कहा। परन्तु देश की स्थिति बिगड़ती गयी, हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों में बराबर तनाव आता गया। दंगे हुए। १७ सितम्बर (१९२४) को गाँधीजी ने मुहम्मद अली के घर पर दिल्ली में, प्रायश्चित्त और प्रार्थना के लिए २१ दिनों का उपवास किया। अच्छे होने पर वह बराबर हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न को सुलझाने का प्रयत्न करते रहे परन्तु वह उलझता ही गया।

स्पष्टतः इन २-३ वर्षों में गाँधीजी को संयुक्त प्रान्त में आने का अवसर नहीं मिला परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उसके विषय में उनकी दिलचस्पी कम हो गयी थी। वह संयुक्त प्रान्त की विविध घटनाओं पर अपने साप्ताहिक पत्रों में बराबर टिप्पणी करते रहे, पत्र लिख-लिखकर वहाँ के लोगों का मार्ग-दर्शन करते रहे। उनको इस बात की बड़ी वेदना हुई कि जो संयुक्त प्रान्त जागरण और

आन्दोलन में इतना आगे था, वही चौरीचौरा काण्ड के कारण समस्त भारत की उन्नति और आन्दोलन में मुख्य अवरोध बन गया। इस बीच 'नवजीवन', 'यंग इण्डिया' तथा 'हिन्दी नवजीवन' में वह बराबर इस प्रान्त की दमन-नीति के बारे में लिखते रहे।

: ९ :

रचनात्मक क्रान्ति की दिशा में

१९२५ के उत्तरार्द्ध में गाँधीजी ने पुनः देशव्यापी दौरों की शुरुआत की। जुलाई के अन्त में वह कलकत्ता पहुँचे। बंगाल और बिहार का दौरा करते हुए १६ अक्तूबर को संयुक्तप्रान्त आये। उसी दिन बलिया की जिला परिषद् में उनका भाषण हुआ।

बलिया का भाषण

बलिया की सभा में बड़ी भीड़ थी, अनुशासन का अभाव था और व्यवस्था-शक्ति की कमी स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। परन्तु लोगों में गाँधीजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। इस सभा में कई संस्थाओं की ओर से उन्हें मानपत्र दिये गये। गाँधीजी ने इन मानपत्रों के लिए लोगों को धन्यवाद देते हुए कहा—"मैं १९२१ में ही बलिया आना चाहता था पर न आ सका था। अब ४ साल बाद आप लोगों के बीच आकर बहुत खुश हूँ। समयाभाव न होता तो मैं आप लोगों के साथ अधिक समय तक रहता। एक बात का दुःख मुझे जरूर है। बलिया के निवासियों की शक्ति में तो मुझे पूरा विश्वास है किन्तु मैं मानता हूँ कि कार्यकर्त्ताओं की संगठन-क्षमता से ही शक्ति को नियन्त्रण में रखा जा सकता है। चूँकि मैं अब कमज़ोर और अशक्त हो गया हूँ और भीड़भाड़ तथा शोरगुल को नहीं सह पाता हूँ, इसलिए मैंने आशा की थी कि इस प्रकार की सभाओं से मुझे जो तकलीफ़ होती है उसका

अवसर यहाँ नहीं आयेगा।..............बलिया के कार्यकर्त्ताओं ने जो रचनात्मक कार्य किया है, उसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है और उसके लिए मैं उनको बधाई देता हूँ। मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई है कि यहाँ दोनों कौमें मिल-जुलकर रह रही हैं। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि आपकी मित्रता की यह टेक पूरी हो और आप इस दिशा में दूसरों के लिए आदर्श स्थापित कर सकें।" फिर भारतवर्ष की गरीबी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा—"इसे दूर करने के लिए चरखे से बढ़कर और कोई उपाय नहीं है। खादी पहनो और चरखे की शक्ति बढ़ाओ।"

अन्त में गाँधीजी ने देशबन्धु कोष के लिए चन्दा देने की अपील की। लोगों ने बड़े उत्साह से कोष में धन दिया।

काशी विद्यापीठ में

१७ अक्तूबर को बलिया से लखनऊ जाते हुए बनारस में गाडी बदलनी थी। इसमें ५ घण्टे काशी में ठहरना पड़ता था। बा० भगवान-दासजी ने इसका लाभ उठाकर विद्यापीठ के विद्यार्थियों की एक सभा कर ली। गाँधीजी ने इसमें बोलते हुए कहा—"......मैंने अपने कार्यक्रम में चरखे को प्रधान स्थान दिया है।......मेरे निकट देश को दरिद्रता से मुक्ति दिलानेवाली चरखे को छोड़ दूसरी कोई वस्तु नहीं है। जहाँ चरखे चलने लगे हैं वहाँ लोगों के जीवन में परिवर्त्तन हो रहा है।...... आप ईश्वर और खुदा का नाम लेकर चरखा चलायें तो देखेंगे कि इसमें से कैसी शक्ति का निर्माण होता है।......मैं देहात का अर्थशास्त्र जानता हूँ।......मैं चरखे का दीवाना हूँ। चौबीस घण्टों में भले ही आधा घण्टा ही चरखा कातें परन्तु अनिवार्य रूप से कातें।"

इस थोड़े समय में गाँधीजी म्युनिस्पल मिडिल स्कूल में कताई-

काशी विद्यापीठ में वृक्षारोपण

नाई का जो उत्तम काम किया गया था उसे देखने भी गये अ
ामदास गौड़ के घर बड़ी पियरी मुहल्ले में जाकर श्रीराम
र्ति का दर्शन भी किया।

लखनऊ में : १७ अक्तूबर

उसी दिन (१७ अक्तूबर) वह लखनऊ पहुँचे। वहाँ ती
कुछ ही ज्यादा समय तक ठहरना था किन्तु इसी अल्प स
होंने नगरपालिका का अभिनन्दनपत्र स्वीकार किया और सार्व
भा में भी बोले। नगरपालिका की सभा शाम को ५ बजे
र उसमें मोतीलालजी तथा जवाहरलालजी उपस्थित थे
नपत्र अरबी-फारसी-बहुल उर्दू में लिखा गया था और ऐसा
ता था कि उसमें से एक-एक संस्कृत शब्द निकाल दिया गय

इस पर गाँधीजी ने राष्ट्रभाषा के रूप की व्याख्या करते हुए कहा—"वह लखनवी उर्दू या संस्कृतमय हिन्दी नहीं हो सकती, हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। आप लोगों ने मानपत्र में अपनी त्रुटियाँ स्वीकार नही की हैं। जब मैं मोटर में आ रहा था तब पं० मोतीलालजी ने बताया था कि यहाँ की सड़कें कैसी हैं ? सो मैं आप लोगों से कहता हूँ कि जैसी अच्छी आप लोगों की लखनवी उर्दू ज़बान है वैसी ही अच्छी आप यहाँ की सड़कों को भी बना दें। मैं आपको इसके लिए मुबारकबादी देता हूँ कि पिछले बोर्ड की अपेक्षा आपने अच्छा काम किया है।… यह शर्म की बात है कि यहाँ के हिन्दुओं और मुसलमानों में बहुत अनबन है। इस वक्त सारे हिन्दुस्तान की हवा खराब हो गयी है। मैं कहता हूँ कि यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों को लड़ना है तो लड़ ले पर आखिर इसका अंजाम क्या होगा ? दोनों को यहीं रहना है। न हिन्दू हिन्दुस्तान छोड़ सकते हैं, न मुसलमान। आखिर में दोनों को यहीं रहना होगा, दोनों को मिलना होगा।…मैं अभिनन्दनपत्र नही चाहता। मैं प्रशंसा सुनते-सुनते थक गया हूँ। पर मैं आप लोगों को यह जिम्मेदारी सौंपना चाहता हूँ कि जब मैं दूसरी बार लखनऊ आऊँ तो आप कह सकें कि इस बीच यहाँ झगड़ा नहीं हुआ और हिन्दू-मुसलमानों में मेल है। ईश्वर यहाँ के रहनेवालों को समझ दें।"

लखनऊ : सार्वजनिक सभा में भाषण

इसी दिन लखनऊ के प्रसिद्ध वकील श्री हरकरणनाथ मिश्र की अध्यक्षता में अमीनुद्दौला पार्क में सार्वजनिक सभा भी हुई। इसमें भाषण करते हुए गाँधीजी ने कहा—"मुझे बहुत दु:ख है कि लखनऊ, जिसके बारे में मेरा खयाल बहुत अच्छा था, साम्प्रदायिक झगड़ों का अखाड़ा हो गया है। जब मैं दिल्ली में २१ दिन का उपवास कर

रहा था तब मुझे लखनऊ के हिन्दू और मुसलमान नेताओं का एक पत्र, मामले में बीच-बचाव करने के लिए, मिला था। मैं उसके लिए तैयार हो गया, लेकिन फिर कोई आया ही नहीं। अच्छा हो यदि आप मेरी सहायता के बिना खुद ही अपने झगड़े सुलझा लें। यदि आप समझते हैं कि उसका एक मात्र समाधान तलवार ही है तो उसी को आजमाकर देख लीजिए।···पर श्रोताओं से मेरा निवेदन है कि अपने मतभेद दूर करके यथासम्भव शीघ्र एकता प्राप्त कर लीजिए। हाँ, वह एकता असली हो, नकली नहीं।

"यदि मैं लखनऊ के फैशनपरस्त नागरिकों से खद्दर के लिए अपील करूँ तो यह आशंका ही है कि आप उसे अनसुनी कर दें। किन्तु मैं अपने इस भय के बावजूद भारत के गरीबों की ओर से यह अपील करता हूँ।···खद्दर का मतलब है, प्रत्येक सात आने में से पाँच आने गरीबों को मिलना। और मिल के कपड़े का मतलब है हर पाँच आने में से एक पैसा गरीब को मिलना। लेकिन विदेशी कपड़े से इंग्लैण्ड के गरीबों को भी फायदा नहीं होता। उसका सारा लाभ पूँजीपतियों को मिलता है। भारत के ऊँचे सामाजिक दर्जे के लोगों को चरखे का उपयोग करना चाहिए ताकि गरीबों को इस बात की प्रतीति हो जाय कि चरखे में हमारा सच्चा विश्वास है और हम जो कहते हैं, उसके लिए ईमानदारी से प्रयत्न भी करते हैं।"

इसके बाद उन्होंने अस्पृश्यता की निन्दा करते हुए कहा—"यह हिन्दू धर्म का भाग नहीं है। यह अधार्मिक और ईश्वर के विरुद्ध है। हमें भारत के इस कुत्सित कलंक को दूर कर देना चाहिए।"

सीतापुर में

उसी दिन (१७ अक्तूबर) रात १० बजे मोटर से गांधीजी

सीतापुर पहुँचे। पहिले उन्हें हिन्दू-सभा और वैद्य सभा के अभिनन्दनपत्र ग्रहण करने के लिए ले जाया गया। वहाँ उन्होंने कहा—"इन दो सभाओं द्वारा अभिनन्दनपत्र पाने के योग्य मैं नहीं हूँ, क्योंकि इनकी टीका-टिप्पणी के सिवा मैंने कुछ नहीं किया है।......हिन्दू सभा की सच्ची सेवा करने के लिए सच्चा हिन्दू होना जरूरी है। हिन्दू धर्म सनातन-धर्म है। वेदों तथा हिन्दू धर्म को मैं अनादि मानता हूँ। सत्य भी अनादि है। इसलिए हिन्दू धर्म और सत्य में कोई अन्तर नहीं। जो असत्य है, उसका हिन्दू-धर्म से सम्बन्ध नहीं हो सकता। मैं किसी भी दशा में सत्य का त्याग नहीं कर सकता। चाहे कितना भी विरोध हो,...मैं सत्य ही कहूँगा। सत्य और अहिंसा में कोई अन्तर नहीं है। एक हिन्दू के रूप में मैं किसी के विरुद्ध अपने हृदय में द्वेष-भाव पनपने नहीं दे सकता। मैं अपने शत्रु को भी प्यार से ही जीतूँगा। यदि हिन्दू अपने धर्म को आगे बढ़ाना चाहते हों और उसकी सेवा करने के इच्छुक हों तो उसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि वे अहिंसा के मार्ग पर चलें। अपने धर्म का पुनरुद्धार करने के लिए अवश्य कार्य करें किन्तु अपने मुसलमान भाइयों के प्रति उनके हृदय में तनिक भी दुर्भावना नहीं होनी चाहिए।

"कुछ लोगों का विचार है कि मैं अहिंसा के नाम पर कायरता का प्रचार कर रहा हूँ। यह बिल्कुल गलत है।...हिंसा का मुकाबला अहिंसा से करना तो अच्छी चीज है किन्तु कायरता अच्छी चीज नहीं है। सच्ची अहिंसा के लिए सच्ची बहादुरी जरूरी है। हिन्दू संगठन के लिए चरित्र-निर्माण सबसे ज्यादा जरूरी है। जबतक यह नहीं होता, जबतक हर एक हिन्दू सत्य और सच्चरित्रता पर आरूढ़ नहीं होता, तबतक सच्चा संगठन असम्भव है। उस हालत में हिन्दू धर्म कहीं का न रह जायगा।"

वैद्य सभा के मानपत्र का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—"वैद्यो के बारे में मेरे कथन की तीव्र आलोचना मंचों और अखबारों में की गयी है।......मुझे लगता है कि लोगों ने मुझे गलत समझा है। मैंने जो टीका-टिप्पणी की वह आज के वैद्यों को लक्ष्य करके की है, न कि उस आयुर्वेद-प्रणाली को लक्ष्य करके, जिसकी वे सेवा कर रहे हैं। मैं इस प्रणाली के विरुद्ध नहीं हूँ किन्तु वैद्यों का आत्मसन्तोषी रुख मुझे पसन्द नहीं है।......मैंने उनकी आलोचना इसलिए की है कि उन्होंने आयुर्वेद को नहीं समझा है और उसके साथ न्याय नहीं किया है। मैंने आयुर्वेद की प्रगति के लिए अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की है और जितने प्रकार से सम्भव था, वैद्यों की मदद करने का प्रयत्न किया है, किन्तु उनका काम देखकर निराशा होती है। वैद्यों को आगे बढ़ना चाहिए। यह सोचना गलत है कि उन्हें पश्चिम से कुछ नहीं सीखना है। उन्हें ऐसा मानकर निश्चिन्त नहीं बैठना चाहिए कि उनकी चिकित्सा-प्रणाली में जो कुछ है उससे आगे चिकित्साशास्त्र में कुछ है ही नहीं। उन्हें जागरूक और क्रियाशील रहना चाहिए।"

इसी दिन गांधीजी का सीतापुर नगरपालिका की ओर से अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर गांधीजी ने कहा—"सेवा और आत्मत्याग की सच्ची भावना के बिना नगरपालिका में प्रवेश करना बेकार है। मुझे नगरपालिका का एक मात्र आदर्श यही मालूम है कि नगर को साफ़-सुथरा और रोगों से मुक्त रखा जाय, गरीबों की मदद की जाय और उनके हलकों को गन्दगी से दूर रखा जाय तथा ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाय कि गन्दी बस्तियाँ पनप ही न सकें।"

सीतापुर : संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में

दूसरे दिन (१८ अक्तूबर को) पं० रामजीलाल शर्मा की

अध्यक्षता में राजा स्कूल में संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से गाँधीजी का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन-पत्र का उत्तर देते हुए गाँधीजी ने कहा—"हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। मुझे इस बात से बड़ी खुशी है कि मद्रास में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए काम किया जा रहा है। किन्तु खेद है कि बंगाल तथा अन्य स्थानों में कोई काम नहीं किया जा रहा है।" अभिनन्दन-पत्र की संस्कृत-जटिल भाषा का विरोध करते हुए उन्होंने कहा—"किसी भाषा को राष्ट्रभाषा-पद पर आरूढ़ करने के लिए ऐसा होना चाहिए जिससे उसको सर्वसाधारण आसानी से समझ सकें।"

सीतापुर : संयुक्त प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन में

१८ अक्तूबर को मौलाना शौकत अली की अध्यक्षता में सीतापुर के लालबाग में संयुक्त प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन हुआ। इसमें मौ० मुहम्मद अली, पं० मोतीलाल, पं० जवाहरलाल और डा० सय्यद महमूद आदि उपस्थित थे। अनुरोध किये जाने पर गाँधीजी ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा—"हिन्दू-मुस्लिम समस्या के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि अब दो में से किसी सम्प्रदाय पर मेरा कोई वश नहीं रह गया है,······किन्तु चरखा और खादी, ये दोनों चीजें तो मेरा धर्म हैं, और मैं इनके सम्बन्ध में अपनी बात कहे बिना नहीं रह सकता। मैं तो समझता हूँ कि अगर भारत का हर आदमी चरखे को अपना ले तो कोई भी भूखों न मरे।······अभी कुछ समय पहिले मैं अटरिया में था। वहाँ मैंने देखा कि कताई को एक सहायक धन्धे के रूप में अपना लेने से हजारों परिवारों की दशा कितनी सुधर गयी है किन्तु गाँवों में यदि इस सहायक धन्धे को टिकाना है

तो यह जरूरी है कि लोग खादी पहिनना शुरू करें।······आम जनता के सहयोग और सहायता के बिना स्वराज्य सम्भव नहीं है। यह सहयोग और सहायता ग्राम-संगठन के बिना नहीं मिल सकती; इस सगठन का एकमात्र उपाय चरखा है। ······मैंने चरखा-संघ की स्थापना लोगों को संगठित करने के लिए ही की है, इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

अन्त में उन्होंने हिन्दुओं से अनुरोध किया कि वे हिन्दू धर्म से अस्पृश्यता के महाकलंक को दूर कर दें।

सीतापुर : अस्पृश्यता-विरोधी सम्मेलन

इसी दिन (१८ अक्तूबर को) सीतापुर में एक अस्पृश्यता-विरोधी सम्मेलन भी था। यह सम्मेलन शाम के वक्त हुआ। राजा साहब महेवा इसके अध्यक्ष थे। इसमें बोलते हुए गाँधीजी ने कहा—"मैं स्वर्गीय गोखले के इस कथन से पूरी तरह सहमत हूँ कि भारतीय अपने कुछ देशवासियों को अस्पृश्य मानकर सारी दुनिया मे अस्पृश्य हो गये हैं।······मेरा निश्चित विश्वास है कि हिन्दू धर्म मे अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। किसी भी मानव के प्रति अस्पृश्यता का व्यवहार करना पाप है इसलिए तथाकथित उच्च जाति के लोगों को अस्पृश्यों के बजाय अपनी ही शुद्धि करनी चाहिए।"

कानपुर कांग्रेस में

प्रदर्शनी का उद्घाटन

कांग्रेस में शामिल होने के लिए गाँधीजी २३ दिसम्बर (१९२५) को कानपुर पहुँच गये थे। २४ दिसम्बर को कांग्रेस स्वदेशी-प्रदर्शनी

भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में

२४ दिसम्बर को भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। अध्यक्ष पद से निवृत्त होते हुए तथा कांग्रेस-सरकार की बागडोर औपचारिक रूप से श्रीमती सरोजिनी नायडू को सौंपते हुए सदस्यों को धन्यवाद दिया तथा नवीन अध्यक्ष की सफलता की कामना की। उन्होंने कहा—"ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि उनके काल में हमारी स्थिति अधिक अच्छी बने और जो बादल मँडरा रहे हैं वे छिन्न-भिन्न हो जायें।"

कानपुर : कांग्रेस-अधिवेशन में

२४ दिसम्बर को ही कांग्रेस-अधिवेशन में गाँधीजी ने कांग्रेस सदस्यों के आदतन खादीधारी होने की शर्त्त का प्रस्ताव उपस्थित किया। बाबा साहब परांजपे और श्री सान्बमूर्त्ति ने गाँधीजी से प्रस्ताव लौटा लेने का आग्रह किया। इस पर गाँधीजी ने कहा—"……यह प्रस्ताव तो कार्य-समिति का है, फिर मुझसे ऐसी अपील क्यों की जा रही है?…. यदि आप लोकतन्त्र चाहते हैं तो प्रस्तावक किस श्रेणी का नेता है, इसका खयाल छोड़ दें और प्रस्ताव की उपयोगिता का ही विचार करें। इसके अतिरिक्त आप मुझसे किस बात को वापिस लेने का आग्रह कर रहे हैं? मेरे अन्तस्तल में बैठे हुए अत्यन्त प्रिय जीवन-सिद्धान्तों को?

"………आप लोग यह भूल जाते हैं कि मताधिकार का आधार ध्येय पर निर्भर होता है। व्यवहारतः अमुक कार्य दुर्गम है, क्या महज इसलिए हम उससे विमुख हो जायेंगे? हम लोगों के लिए स्वराज्य प्राप्त करना कठिन है तो फिर क्या हम उसकी बात करना छोड़ दें?

"यदि मुझे यकीन हो जाय कि सिर्फ एक करोड़ कांग्रेस सदस्य बना लेने से ही स्वराज्य मिल जायगा तो मैं सब शर्तें हटा दूँ, उम्र का प्रतिबन्ध और चार आने का चन्दा भी हटा दूँ। अबतक जो काम किया जा चुका है उस पर यदि पानी फेरना है तो हम यही प्रस्ताव पास करें कि जो चाहे, बिना किसी शर्त के, कांग्रेस का सदस्य बन सकता है। परन्तु जो व्यक्ति कांग्रेस के लिए तनिक भी शरीर-श्रम करने को तैयार न हो, क्या उसे कांग्रेसी कहलाने में शर्म न मालूम होगी? यदि आप लोगों को सचमुच ही विदेशी कपड़े का वहिष्कार करना है तो मिलों के कपड़े का विचार त्याग दें। मैं मिलों के प्रान्त का ही निवासी हूँ और मिल-मालिकों के साथ मेरा बहुत मीठा सम्बन्ध भी है किन्तु यह मैं जानता हूँ कि देश के संकट-काल में उन्होंने देश का साथ कभी नहीं दिया। ·····अंग्रेजों के साथ लड़ने में हमें अपना खून पानी करना होगा। हाँ, पानी। स्वराज्य को प्राप्त करना कोई खेल नहीं है। उसे पाने के लिए भारतीयों को अपनी गर्दन कटाने तक के लिए तैयार रहना चाहिए। ······आप लोग आज मेरा विरोध कर सकते हैं लेकिन अब ऐसा समय आने ही वाला है जब आप सभी लोग कहेंगे कि गाँधी जो कहता था वह सच था।

"······मैं आपको सचेत करता हूँ कि यदि आपने खादी को त्याग दिया तो जनता भी आपका परित्याग कर देगी।"

दक्षिण अफ्रीका-सम्बन्धी प्रस्ताव

२५ दिसम्बर को अधिवेशन में गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों से सम्बन्ध रखनेवाला प्रस्ताव उपस्थित किया तथा उसके सम्बन्ध में एक मार्मिक भाषण भी दिया। प्रस्ताव हर्षध्वनि के बीच पास हुआ।

'जमाना' को सन्देश

२६ दिसम्बर को कानपुर के प्रसिद्ध मासिक 'जमाना' को सन्देश देते हुए गाँधीजी ने कहा—"आप चाहे उदार दलवादी, नरम दलवादी या राष्ट्रवादी हों, हिन्दू हों या मुसलमान, पूरब के रहनेवाले हों या पश्चिम के, परन्तु यदि आप भारत को उस जनता के साथ अपना भाईचारा मानते हों जिसके साथ आपका भाग्य जुड़ा हुआ है, जिनके बीच आप पैदा हुए हैं तो आप केवल हाथकती और हाथ-बुनी खादी के वस्त्रों का उपयोग करें, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।"

२८ दिसम्बर को गाँधीजी का मौन-दिवस था। २९ को उन्होंने एसोसिएटेड प्रेस आफ़ इण्डिया के प्रतिनिधि से कांग्रेस के निश्चयों के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अपने भावी कार्यक्रम को स्पष्ट किया और कहा—"......मेरा काम तो यही है कि मैं शान्त रहूँ और जो रचनात्मक कार्य मैं कर सकूँ, करता रहूँ, शेष अर्थात् कांग्रेस के प्रस्ताव को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी पूर्णरूप से स्वराजियों पर छोड़ दूँ, उसमें कोई रुकावट न डालूँ बल्कि जहाँ सम्भव हो मैं उन्हें मदद दूँ।"

३ जनवरी १९२६ को गाँधीजी ने सार्वजनिक जीवन से साल भर के लिए संन्यास लेने और साबरमती आश्रम तक ही अपना कार्य सीमित रखने की घोषणा की।

: १० :

खादी के लिए दौरा—१

२० दिसम्बर १९२६ को गाँधीजी के वार्षिक मौन की समाप्ति हुई। गौहाटी कांग्रेस जाते हुए उन्होंने अमरावती, नागपुर तथा गोंदिया का दौरा किया। अपने भाषणों में उन्होंने पुराने रचनात्मक कार्यक्रम पर और भी अधिक निष्ठा के साथ जोर दिया। हर जगह वह हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य, अस्पृश्यता-निवारण और स्वदेशी पर जोर देते थे। सत्य तो उनका ईश्वर था ही और अहिंसा ध्रुवतारा। उक्त त्रिविध कार्यक्रम को वह अपना कल्मा और गायत्री कहते थे।

गौहाटी कांग्रेस जाते हुए रास्ते में २३ दिसम्बर को उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या का समाचार मिला। सारी कांग्रेस पर शोक की गहरी छाया छा गयी। २६ दिसम्बर को कांग्रेस अधिवेशन आरम्भ हुआ। श्रीनिवास ऐयंगर अध्यक्ष थे। गाँधीजी ने कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया और कई प्रस्ताव उनके कारण ही पास हुए। उन्हीं के प्रवर्त्तन और प्रबल समर्थन से प्रत्येक कांग्रेस सदस्य के लिए आदतन खादी पहिनने का प्रस्ताव पास हुआ। यहीं उन्होंने अपने १९२७ के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए बिहार, महाराष्ट्र, मद्रास, कर्नाटक, संयुक्त प्रान्त, बंगाल तथा उड़ीसा में दौरा करने का निश्चय प्रकट किया।

सोडपुर और कोमिल्ला

गौहाटी कांग्रेस के बाद उन्होंने चन्द दिन कलकत्ता, सोडपुर और कोमिल्ला में बिताये। सोडपुर और कोमिल्ला में खादी प्रतिष्ठान

ग्य-आश्रम द्वारा खादी-निर्माण का काम पहिले से ही ह
ो सतीशचन्द्र दास गुप्त तथा सुरेश बाबू क्रमशः इन सं
रक थे। कोमिल्ला में उन्होंने कहा—"खादी कोई मर
· नहीं है।"

काशी में

या ८ जनवरी (१९२७) को गाँधीजी कृपालानीज
गाँधी-आश्रम के वार्षिकोत्सव में शामिल होने के लिए
उसके कार्य और प्रगति को देखकर उन्होंने सन्तोष

गाँधीजी के साथ आचार्य कृ

ौहाटी कांग्रेस के साथ जो खादी-प्रदर्शनी हुई थी उसे
यजी महाराज बड़े प्रभावित हुए थे और उन्होंने
ोध किया था कि वह जब कभी बनारस आवें मेरे विश्ववि
ों को भी खादी का सन्देश सुनाने की कृपा करें। एव

शामियाने के नीचे, जो एक सप्ताह पूर्व वाइसराय के आगमन पर खड़ा किया गया था, लगभग दो हज़ार लड़के गाँधीजी का भाषण सुनने के लिए एकत्र हुए थे। यह बात शायद ८ जनवरी की है। गाँधीजी ने कहा—"......पण्डित जी ने तुम्हारे लिए लाखों जमा किये हैं और अब भी राजाओं-महाराजाओं से लाखों जमा कर रहे हैं,......जो सच पूछा जाय तो इस देश के करोड़ों गरीबों की ही कमाई है। युरोप के विरुद्ध हमारे देश में धनियों का धन ऐसे गरीबों की गरीबी से बढ़ता है जिन्हें एक जून भी भरपेट भोजन नहीं मिलता। इस प्रकार तुम जो शिक्षा पाते हो उसका खर्च चुकाते हैं भुक्खड़ गाँववाले।......मैं तुमसे उन गरीबों का जरा-सा बदला चुकाने को कहता हूँ। उनके लिए थोड़ा यज्ञ करो। गीता का बचन है कि जो यज्ञ किये बिना खाता है वह अपना भोजन चुराता है।......हमारे लिए इस युग का यज्ञ है चरखा; इसके विषय में मैं बराबर कहता या लिखता रहा हूँ। आज मैं और कुछ नहीं कहूँगा। यदि तुम्हारे दिलों पर गरीबों की इस करुण कहानी का कुछ भी असर पड़ा हो तो तुम कल कृपालानीजी के खादी भण्डार पर धावा करो और उसमें एक गज खद्दर भी बाकी न छोड़ो और आज अपनी जेबें खाली कर दो। पण्डितजी ने भिक्षा-कला में कमाल हासिल किया है। मैंने यह विद्या उन्हीं से सीखी है। अगर वह राजाओं-महाराजाओं पर कर बैठाने में उस्ताद हैं तो मैं भी गरीब लोगों की जेबें उनसे भी अधिक गरीबों के लिए खाली कराने में वैसा ही बेशर्म हूँ।"

अन्त में उन्होंने छात्रों से पवित्र जीवन बिताने की अपील करते हुए कहा—"तुम्हारे लिए लाखों रुपये माँगने और महलों के समान इन मकानों को उठाने में मालवीयजी का एक मात्र उद्देश्य है मातृ-भूमि की सेवा के लिए खरे रत्न भेजना। यह मतलब पूरा न हो

सकेगा अगर तुम पच्छिम से आनेवाली हवा में बह चले। वह अपवित्रता की वायु है।......अगर तुम समय रहते चेत न जाओगे तो अनीति की बहिया, जिसका बल दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा है,तुम्हें बहा ले जायगी। मैं अपनी सारी शक्ति से तुम्हें पुकार-पुकार कर कहता हूँ कि सँभलो, चेतो, और जलने के पहिले ही भाग चलो।"

दशाश्वमेध घाट पर

६ जनवरी को श्रद्धानन्द-दिवस था। उस दिन गाँधीजी, मालवीयजी-सहित एक जुलूस के साथ पैदल दशाश्वमेध घाट गये और वहाँ स्नान करने के बाद स्वर्गीय आत्मा के लिए उन्होंने जलाञ्जलि दी और फिर काशी-विश्वनाथ मन्दिर में जाकर प्रार्थना की। मन्दिर के बाहर कुछ गज पर यह जुलूस एक सभा के रूप में बदल गया, जिसमें महिम्नस्तोत्र का पाठ हुआ, देवदास गाँधी ने 'राम धुन लागी' गवाया और गाँधीजी ने भाषण किया तथा स्वामीजी के गुणों एवं उनके जीवन से प्राप्त शिक्षा की चर्चा की।

काशी से गाँधीजी १० जनवरी को बिहार चले गये और ११ को उनका बिहार का खादी-दौरा शुरू हो गया। बिहार के बाद वह मध्यप्रान्त, विदर्भ और खानदेश गये। इसके बाद महाराष्ट्र में दौरा किया। इस दौरे में विभिन्न प्रान्तों के सभी प्रमुख केन्द्रों में गये और दूर-दूर तक खादी का सन्देश पहुँचाया।

गुरुकुल काँगड़ी में

मार्च के मध्य में गाँधीजी गुरुकुल काँगड़ी के रजतजयन्ती महोत्सव में शामिल होने के लिए हरद्वार आये। वहाँ के आचार्य रामदेवजी ने महीनों पहिले उनसे इसके लिए अनुरोध कर रखा था।

स्वा० श्रद्धानन्द की वीरगति के बाद तो उनका वहाँ जाना अत्यन्त आवश्यक था। उन दिनों हरद्वार स्टेशन पर उतरकर कनखल से होते हुए गुरुकुल जाना पड़ता था। हरद्वार से ही अपार भीड़ शुरू हो गयी थी। जिस दिन गाँधीजी गुरुकुल पहुँचे, महोत्सव का तीसरा दिन था। राजेन्द्र बाबू अध्यक्ष थे। उनके भाषण के बाद साधु वास्वानी उठे। उन्होंने सभी ओर बैठे हुए श्रोताओं को प्रणाम किया और बैठ गये। इसका भी बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके पश्चात् मालवीय जी महाराज ने आशीर्वाद दिया। फिर गाँधीजी बोलने उठे। उनका गला सहसा भर आया और कुछ क्षणों के लिए तो वाणी बिल्कुल खो गयी। गर्म पानी पीने पर आवाज कुछ सुधरी। तब बोले—"आज तो मेरे मन में ऐसा होता है कि साधु वास्वानी की तरह मैं भी प्रणाम करके बैठ जाऊँ परन्तु वह अनुकरण-मात्र होगा, स्वाभाविक न होगा। सच पूछें तो स्वामीजी का देहान्त हुआ ही नहीं है। देहान्त तो तब होगा जब हम उनकी सच्ची देह को मिटाने की कोशिश करेंगे, यद्यपि हमारी कोशिश से भी उनकी देह का नाश होने को नहीं है। जबतक यह गुरुकुल कायम है, जबतक एक भी स्नातक गुरुकुल की सेवा करता है, तबतक स्वामी जी जीते ही हैं।

"......परन्तु गुरुकुल को चिरस्थायी रखने के लिए उस वीरता, ब्रह्मचर्य और क्षमा की आवश्यकता है जो हमने उनके जीवन में देखी। वीरता का लक्षण क्षमा और ब्रह्मचर्य का वीर्य का संयम है। इनकी रक्षा से ही तुम देश और धर्म की रक्षा कर सकोगे। मैं जानता हूँ, यह काम मुश्किल है। तुम्हारे यहाँ के बहुत से विद्यार्थियों के पत्र मेरे पास पड़े हुए हैं। कोई मेरी स्तुति करते हैं, तो कोई गाली देते हैं। स्तुति तो निरर्थक वस्तु है। उसका असर मेरे ऊपर नहीं होता। परन्तु जब विद्यार्थी चिढ़कर गाली देते हैं तो मुझे चिन्ता होती है, क्योंकि क्रोध

से वीर्य का नाश होता है।......क्षमा की पराकाष्ठा ही ब्रह्मचर्य का लक्षण है।......यदि तुम वैदिक आचार-विचार की रक्षा करना चाहते हो तो तुम इतना याद रखो कि तुम्हें पग-पग पर रुपये मिल जायँगे किन्तु ब्रह्मचर्य का, नीति का पाया यहाँ पर न होगा तो तुम्हारा गुरुकुल मिट्टी में मिल जायगा। इस भूमि के तो आत्मा नहीं है। इसकी आत्मा तुम्हीं हो। अगर तुम आत्मबल खो दोगे और 'उदरनिमित्तं बहुकृतवेश:' जैसे बन जाओगे तो तुम्हारी सारी शिक्षा बेकार जायगी।......"

महोत्सव के दूसरे दिन आचार्य रामदेव और गाँधीजी की अपील पर खूब चन्दा एकत्र हुआ। सभा में घुमाई जा रही बाल्टियाँ रुपयों और नोटों से भर-भर जाती थीं। जैसे रुपयों की वर्षा हो रही हो। लगभग दो लाख रुपये वहीं एकत्र हो गये।

अस्वस्थता

निरन्तर के दुस्सह कार्य-भार से गाँधीजी के स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया। कर्नाटक के दौरे के आरम्भ में ही वह बीमार पड़ गये। इसलिए दौरे को स्थगित करना पड़ा। उन्हें बेलगाँव से आराम के लिए अम्बोली ले जाया गया। अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में वह विश्राम के लिए अम्बोली से नन्दी दुर्ग (मैसूर) गये। वहाँ जून के मध्य भाग तक रहे। उसके बाद उन्हें बंगलौर में रखा गया। ३ जुलाई से उन्होंने थोड़ा-थोड़ा काम फिर शुरू किया। इसके बाद धीरे-धीरे मैसूर के प्रमुख केन्द्रों का दौरा करते रहे। इसी समय गुजरात भयंकर जलप्लावन से तहस-नहस हो गया। उसकी सहायता के लिए मैसूर से ही अपील की। बीमारी और दौरे के कारण वह लगभग ४ मास मैसूर में रहे। २४ अगस्त से उन्होंने तमिलनाड का दौरा शुरू किया। अक्तूबर में वह ट्रावनकोर पहुँचे। और मासान्त तक वाइसराय के

निमन्त्रण पर, वार्तालाप के लिए दिल्ली चले गये । वाइसराय ने वार्तालाप के बाद उन्हें एक कागद दिया । यह दस्तावेज़ ८ नवम्बर को प्रकाशित किया गया । इसमें साइमन कमीशन की नियुक्ति की घोषणा थी ।

दिल्ली से गाँधीजी लंका चले गये । १३ नवम्बर को वह कोलम्बो पहुँचे । लगभग तीन सप्ताह लंका के विविध स्थानों का भ्रमण करके दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में उन्होंने उड़ीसा का दौरा शुरू किया । उड़ीसा से वह कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होने के लिए मद्रास पहुँचे । वहाँ से साबरमती आश्रम चले गये । उन्होंने आश्रम में कुछ दिन बिताने की दृष्टि से फरवरी-मार्च १९२८ के दौरे का कार्यक्रम स्थगित कर दिया । अप्रैल में मगनलाल गाँधी का देहावसान होने से आश्रम-सम्बन्धी उनकी जिम्मेदारी बहुत ज्यादा बढ़ गयी ।

इसी समय बारडोली सत्याग्रह शुरू हो गया । उधर साइमन कमीशन देश में जहाँ जाता वहीं विरोधी प्रदर्शन होते और काले झण्डे दिखाये जाते । लाहौर के ऐसे ही एक प्रदर्शन में लाला लाजपतराय के सीने पर लाठी की गहरी चोट लगी जिसके फलस्वरूप १७ नवम्बर (१९२८) को उनका देहान्त हो गया । १९२८ के अन्त में कांग्रेस का जो अधिवेशन हुआ उसमें गाँधीजी ने कौंसिलों द्वारा और उसके बाहर विदेशी वस्त्र-बहिष्कार, खादी-प्रचार तथा मद्य-निषेध का कार्यक्रम अपनाने पर जोर दिया । यह प्रस्ताव पास हो गया । गाँधीजी १९२९ में यूरोप जाना चाहते थे किन्तु अब उन पर इन रचनात्मक कार्यों को बढ़ाने की नैतिक जिम्मेदारी आ गयी थी । इसलिए उन्होंने खादी इत्यादि के लिए फिर जोरों से काम शुरू किया । फरवरी (१९२९) में उन्होंने सिन्ध का दौरा किया । ४ मार्च को कलकत्ते में विदेशी वस्त्रों के अम्बार में आग लगाकर होली जलाई ।

८ मार्च को वह कुछ दिनों के लिए बर्मा गये। वहाँ से आने के बाद ६ अप्रैल से २१ मई तक उन्होंने आन्ध्र का दौरा किया।

उत्तराखण्ड में : पहाड़ी यात्रा

गाँधीजी का स्वास्थ्य अब भी बहुत अच्छा नहीं था। जवाहरलाल जी चाहते थे कि वह काम के साथ-साथ विश्राम भी लेते चलें। इसके लिए उन्होंने संयुक्त प्रान्त के उत्तराखण्ड में पहाड़ी यात्रा और विश्राम की योजना बनाई थी। गाँधीजी ने इसे स्वीकार किया। ११ जून (१९२९) को वह अहमदाबाद से रवाना हुए। १३ को बरेली पहुँचे; बरेली की एक सभा में उन्होंने लोगों को हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य और खादी का सन्देश देते हुए कहा—"देश के क्षितिज पर अनैक्य के जो बादल छा गये हैं और उसे तमसावृत कर रखा है उसके होते हुए भी मैं हिन्दू-मुस्लिम एकता की स्थापना में अपने विश्वास की घोषणा करने यहाँ आया हूँ, क्योंकि जनता समझ गयी है कि देश के जीवन के लिए स्वराज्य आवश्यक है और निवासियों के हर वर्ग के बीच एकता इस स्वराज्य का मौलिक आधार है।"

ताकुला में

१४ की सुबह हलद्वानी पहुँचे। एक छोटी-सी सभा यहाँ भी हुई। हलद्वानी से १४ की सुबह चलकर लगभग डेढ़ घण्टे में ताकुला पहुँचे। काठगोदाम-नैनीताल मार्ग पर नैनीताल से दो मील दूर एक खतरनाक मोड़ है जिसे 'चील चक्कर मोड़' कहा जाता है। इस मोड़ से लगभग डेढ़ मील आगे चलकर ताकुला गाँव आता है। यहाँ वह स्व० गोविन्दलाल शाह के मोतीभवन में ठहरे। गोविन्दलालजी के नाती श्री राजीवलोचन शाह ने मुझे सूचित किया है कि १९२९ की यात्रा

में वह चार दिन वहाँ ठहरे थे।

-मोती भवन ताकुला जहाँ गांधीजी १

नैनीताल में

उपलब्ध सामग्री से पता लगता है कि वह १५
पहुँचे थे (सम्भव है ताकुला से ही आते-जाते रहे हों)
को नैनीताल की सार्वजनिक सभा में पर्वतीय अंचल
खादी-प्रचार और आत्मावलम्बन पर बोले। १५
महिलाओं की एक सभा हुई जिसमें उन्हें चर्खा और
के लिए कहा।

भवाली में

१५ को भवाली आये। वहाँ शाम को एक स
हुई। नागरिकों की ओर से उन्हें मानपत्र दिया गया
सम्बन्ध में अनेक शिकायतें थीं और आशा प्रकट की ग
आगमन से अब उनके दुःखों का अन्त हो जायगा। ?

गाँधीजी ने कहा कि यह शक्ति मेरे पास नहीं, केवल ईश्वर के पास है और ईश्वर उन्हीं की मदद करता है जो स्वयं अपनी मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। आप लोगों को स्वयं अपने-अपने अन्दर शक्ति और भरोसा पैदा करना चाहिए।

ताड़ीखेत में

१६ को वह ताड़ीखेत पहुँचे जहाँ प्रेम विद्यालय का वार्षिकोत्सव था। यह विद्यालय १९२१ के असहयोग-आन्दोलन में खोला गया था। गाँधीजी के आगमन का समाचार सुनकर यहाँ दूर-दूर के पहाड़ी ग्रामों से लोग आकर एकत्र हो गये थे। यहाँ उन्होंने पर्वतीयो की कष्ट-गाथा सुनी और उन्हें सन्देश देते हुए कहा—"मैंने आप लोगो के कष्टों की कहानी यहाँ आने के पहिले भी सुन रखी थी, किन्तु उसका उपाय तो आप लोगों के ही हाथ में है। इस उपाय का नाम है—आत्म-शुद्धि। आज हम अपनी स्वार्थ-परायणता और आंचलिक संकीर्णताओं के बोझ से दबे हुए हैं। हमें इन दुर्गुणों को निकाल बाहर करना होगा। हम अपने कुटुम्बों के लिए मरना तो जानते हैं परन्तु समय आ गया है जब हम एक कदम आगे बढ़ें। हमें अपने प्रेम का वृत्त इतना बढ़ाना चाहिए कि सारा गाँव उसके अन्दर आ जाय, इसी तरह गाँव के प्रेम का वृत्त बढ़कर जिले, जिले का प्रान्त, प्रान्त का देश को छूते हुए सम्पूर्ण जगत् को ढक ले। आज कांग्रेस कमेटियाँ निस्तेज और शिथिल पड़ी हुई हैं। यह आप सबका काम है कि अधिकाधिक संख्या में कांग्रेस के झण्डे तले खड़े होकर उसमें नवजीवन का संचार कर दें। आप सबको आत्मविश्वास पैदा करना और ईश्वर को अपनी ढाल बना लेना चाहिए। उससे शक्तिमान और कोई नहीं है। जो उसका अवलम्ब लेता है, वह फिर किसी

आदमी से नहीं डरता।"

नैनीताल में श्री चिरंजीलाल शाह से बात करते हुए

प्रेम विद्यालय के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित कर
कहा—"जनता की सच्ची सेवा करनेवाली कोई सं
से नहीं मर सकती। जनता यदि नहीं चाहती तो कार
कम कर देना चाहिए। मुझे खुशी है कि आप लोगों ने
कार्यक्रम में केन्द्रीय स्थान पर रखा है। कृपया इस लघु
रिक महत्व पर ध्यान दें और उसमें सन्निहित प्राणश
का अनुभव करें। पेशावर से कुमारी अन्तरीप और कर
तक की कोटि-कोटि जनता को एक अटूट बन्धन में बाँध
साधन इस नाजुक धागे से अधिक शक्तिशाली नहीं है।
आप रुपये, आने, पाई में न आंक कर उस शक्ति के रू
इसके कारण जनता में पैदा हो सकती है।"

अलमोड़ा

ताड़ीखेत से वह १८ को रवाना होकर उसी दिन अलमोड़ा पहुँचे। अलमोड़ा में उन्हें नगरपालिका की ओर से जो मानपत्र दिया गया उसमें बताया गया था कि पिछले ६ वर्षों में जब से वह जन-प्रतिनिधियो के शासन में आई, उसने शैक्षणिक और सामाजिक कार्यों में क्या प्रगति की है। उत्तर देते हुए गाँधीजी ने कहा—"नगरपालिका को अपने पाठ्यक्रम में कताई और बुनाई का प्रवेश करके शिक्षा को स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। भारत-जैसे विशाल देश में करोडों रुपये खर्च करके भी प्राथमिक शिक्षण को सार्वदेशिक बनाना तबतक असम्भव है जबतक इस प्रकार की योजना न चालू की जायगी। इससे छात्रों के शारीरिक विकास और अनुशासन द्वारा उनकी शरारत से भरी कार्रवाइयों को नियन्त्रित करने की दिशा में भी सफलता प्राप्त की जा सकेगी।"

एक दु:खदाई घटना

गाँधीजी जब इस सभा से लौट रहे थे तब पद्‌मसिंह नाम का एक ग्रामवासी उनकी गाड़ी से आहत हो गया। जब गाँधीजी उसे अस्पताल में देखने गये तब पद्‌मसिंह ने उनसे कहा—"यदि मैं मर जाऊँ तो आप कृपया मेरे पुत्र को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।" गाँधी ने कहा—"मैं वचन देता हूँ कि उसे आश्रम ले जाऊँगा जहाँ उसकी उचित देखरेख और शिक्षा की व्यवस्था हो जायगी या उसके घर मे ही इसकी उचित व्यवस्था करा दूँगा, इनमें से तुम जो पसन्द करोगे वही होगा।" मरणप्राय व्यक्ति ने कहा—"मैं ऐसी कोई बात नहीं चाहता; इसकी आवश्यकता नहीं है। मैं आपका आशीर्वाद भर चाहता हूँ।"

कौसानी और अलमोड़ा में

लगभग १५ दिन गाँधीजी अलमोड़ा और कौसानी में, विश्राम के लिए रहे। यहाँ से उन्होंने यंग इण्डिया तथा नवजीवन के लिए कई लेख लिखे। अलमोड़ा की नायक जाति की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा था—"जिस तरह दक्षिण में एक फिर्के के लोग अपनी कन्याओं को लज्जाजनक जीवन बिताने को विवश करते हैं और उन्हें देवदासी का सामान्य नाम देते हैं, उसी तरह अलमोड़ा में भी नायक नाम की एक जाति है जो बिना किसी पर्याय या नाम के अपनी कन्याओं से पापमय जीवन का अनुसरण कराती है। वह अपने कार्य को धर्म का रूप देकर उसका बचाव करती है और लड़कियों के साथ-साथ धर्म को भी दलदल में फँसाती है। ....भारत-सेवक-समिति नायक माता-पिताओं से मिलकर उन्हें इस बात के लिए राजी कर रही है कि वे अपनी कन्याओं को पतित बनाने के काम से विरत हों किन्तु उन्नति की गति अभी बहुत धीमी है, क्योंकि लोकमत अभी सोया हुआ है और मनुष्य की वासनाएँ पाप के लिए पार्थिव पुरस्कार देती रहती हैं।"

हिमालय की प्राकृतिक शोभा

गाँधीजी को अलमोड़ा और विशेषतः कौसानी में बड़ी शान्ति मिली। उन्हें यहाँ हिमालय की सच्ची और प्राकृतिक सुषमा के दर्शन हुए। यहाँ की शोभा की प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा—

"शिमला और दार्जिलिंग भी हिमालय के प्रदेश हैं, किन्तु वहाँ मुझे हिमालय की महिमा का भान न हो सका। वहाँ मैं रहा भी थोड़े ही समय तक, फिर भी मुझे तो वह प्रदेश एक अंग्रेजी बस्ती जैसा ही लगा। अलमोड़े आकर अलबत्ता मैं इस बात की कल्पना कर सका

लय क्या है। यदि हिमालय न हो तो गंगा, यमुना
धु भी न हों ; हिमालय न हो तो ये नदियाँ न हो,
ी न हो तो भारत रेगिस्तान या सहारा की मरुभूमि
को जाननेवाले और सदैव हर बात के लिए ईश्वर क
ले हमारे दीर्घदर्शी पूर्वजों ने हिमालय को यात्रा-
। इस प्रदेश में हजारों हिन्दुओं ने ईश्वर की शोध
बलिदान किया है। वे पागल न थे। उनकी तपश्च
के आज हिन्दू-धर्म और हिन्दुस्तान जीवित है।
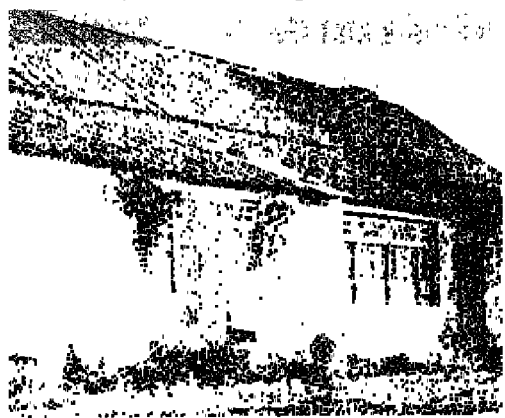
कौसानी में जहाँ गांधीजी १९२९ में विश्राम के लि

कौसानी में सूर्य के प्रकाश में नाचती हिम-मणि
ा दर्शन करते हुए मैं यह विचार कर रहा था कि हिमा
शिखरों को देखकर भिन्न-भिन्न कोटि के लोगों के
आयेगा। उस समय जो विचार एक-पर-एक आते
उनका भागीदार बनाकर मन को हलका कर लेता

बालक उस दृश्य को देखें तो कह उठें, यह तो फेनो क
। चलो, हम दौड़ चलें और उस पर दौड़कर फेनी

मुझ-जैसा चरखे का दीवाना कहेगा : कपास बिनकर, लोढ़कर और रुई पींजकर किसी ने रेशम-जैसी रुई का अखूट पहाड़ खड़ा कर रखा है। इस देश के लोग कैसे पागल हैं कि इतनी रुई के रहते हुए भी नंगे-भूखे और मारे-मारे फिरते हैं ! धर्मनिष्ठ पारसी देखेगा तो सूर्यदेव को नमस्कार करता हुआ कहेगा : अभी हाल सन्दूक में से निकाली हुई नई, दूध-जैसी पगड़ी और वैसे ही इस्त्रीबन्द तह किये हुए जामें पहने पर्वत-रूप दस्तूर सूर्यनारायण के दर्शन में लीन होकर, हाथ जोड़कर, स्थिरचित्त खड़े हैं और शोभा बढ़ा रहे हैं। भावुक हिन्दू इन जगमगाते और साथ ही सुदूर घने बादलों में से पानी झेलते हुए शिखरों को देखकर कहेगा : यह तो साक्षात् दया के भण्डार शिवजी अपनी उज्ज्वल जटा में गंगा जी को रोक रहे हैं और सारे भारत को प्रलय से बचा रहे हैं।

"शंकराचार्य अलमोड़ा में घूमे थे। उन्हें आज भी यह कहते सुन रहा हूँ-सचमुच यह अद्भुत दर्शन है, किन्तु सब ईश्वरीय माया है। न हिमालय है, न मैं हूँ, न तू है; जो कुछ है, वह है, ब्रह्म है। वही सत्य है, जगत् मिथ्या है। बोलो, ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या।

"पाठको ! सच्चा हिमालय तो हमारे हृदय में है। इस हृदय-रूपी गुफा में छिपकर उसमें शिव-दर्शन करना ही सच्ची यात्रा है, यही पुरुषार्थ है।"

२ जुलाई १९२९ को यह पर्वतीय प्रवास समाप्त हो गया और गाँधीजी साबरमती आश्रम लौट गये।

: ११ :

खादी के लिए दौरा—२

बहुत दिनों से गाँधीजी खादी के लिए उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रान्त) का व्यापक दौरा करना चाहते थे परन्तु अनेक कारणों से वह बार-बार टलता ही जा रहा था। अन्त में ११ सितम्बर १६२६ से २४ नवम्बर तक, लगभग ढाई महीने का लम्बा दौरा उन्होंने किया। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के दफ्तर की जो फाइलें उस जमाने से सम्बन्ध रखती हैं और जो इस समय दिल्ली के नेहरू संग्रहालय में सुरक्षित हैं, उन्हें देखने से ज्ञात होता है कि यात्रा का क्रम निम्नलिखित सूची के अनुसार रखा गया था। उस समय भी अनेक दूसरे स्थानों से वहाँ भी जाने के लिए जोर पड़ रहा था, इसलिए सम्भव है इसमें किंचित् परिवर्तन भी हुआ हो :—

संयुक्त प्रान्त का प्रवास-क्रम

(११ सितम्बर से २४ नवम्बर तक)

स्थान	आगमन की तिथि और समय	प्रस्थान की तिथि एवं समय
आगरा	११ सितम्बर ८ बजे प्रातः	२० सितम्बर ६ बजे प्रातः
मैनपुरी	२० सितम्बर ११—३० दिन	२१ सितम्बर ६ बजे प्रातः
फर्रुखाबाद	२१ सितम्बर ११ बजे दिन	२२ सितम्बर ६ बजे प्रातः
कन्नौज	२२ सितम्बर ८ बजे सुबह	२२ सितम्बर ६ बजे सुबह

स्थान	आगमन की तिथि और समय	प्रस्थान की तिथि एवं समय
कानपुर	२२ सितम्बर ११ बजे दिन	२४ सितम्बर ३ बजे दिन
	मौन-दिवस : कानपुर ।	२३ सितम्बर
बनारस	२५ सितम्बर २ बजे प्रातः	२६ सितम्बर ६–१६ शाम
लखनऊ	२७ सितम्बर ६–१५ प्रातः	३० सितम्बर ४-१५ प्रातः
	मौन दिवस : फैजाबाद ।	३० सितम्बर
फैजाबाद	३० सितम्बर ८–२२ प्रातः	२ अक्तूबर १–२२ प्रातः
बनारस	२ अक्तूबर ६–५५ प्रातः	२ अक्तूबर १२ बजे दिन
गाजीपुर	२ अक्तूबर ३ बजे दिन	३ अक्तूबर १० बजे प्रातः
आजमगढ़	३ अक्तूबर १२ बजे दिन	४ अक्तूबर ६ बजे प्रातः
गोरखपुर	४ अक्तूबर ९ बजे दिन	८ अक्तूबर ६–३० प्रातः
	मौन-दिवस : गोरखपुर ।	७ अक्तूबर
बस्ती	८ अक्तूबर १०–४० प्रातः	९ अक्तूबर ८–३० प्रातः
गोंडा	९ अक्तूबर १०–४० प्रातः	१० अक्तूबर
बाराबंकी	१० अक्तूबर ११–२७ दिन	१० अक्तूबर ४–४७ शाम
हरदोई	१० अक्तूबर ७–३५ शाम	११ अक्तूबर १०-३५प्रातः
शाहजहाँपुर	११ अक्तूबर १२–३० दिन	११ अक्तूबर ६–५ शाम
मुरादाबाद	११ अक्तूबर ९ बजे रात	१२ अक्तूबर ५–३० शाम
धामपुर	१३ अक्तूबर ६–३७ प्रातः	१३ अक्तूबर १–२९ दिन
नगीना	१३ अक्तूबर १–४५ दोपहर	१४ अक्तूबर १०-३५प्रातः
हरद्वार	१५ अक्तूबर ४–४५ प्रातः	१६ अक्तूबर ५–२५ प्रातः
देहरादून	१६ अक्तूबर ७ शाम	१७ अक्तूबर ८ बजे सुबह
मसूरी	१८ अक्तूबर, ११ बजे दिन	

मासान्त तक मसूरी में विश्राम ।

स्थान	आगमन की तिथि और समय	प्रस्थान की तिथि एवं समय
अलीगढ़	४ नवम्बर	
वृन्दावन	८ नवम्बर	
शाहजहाँपुर	११ नवम्बर	
कालाकाँकर	१४ नवम्बर	
इलाहाबाद	१५, १६, १७, १८ नवम्बर	

आगरा में

यद्यपि संयुक्त प्रान्त का यह दौरा ११ सितम्बर को आगरा में शुरू हुआ, किन्तु गाँधीजी की तन्दुरुस्ती को देखते हुए वहाँ कई दिन विश्राम के लिए रखे गये थे। ११ को जो सार्वजनिक सभा हुई उसमें उन्हें आठ हजार की थैली दी गयी। इस सभा में भाषण करते हुए उन्होंने कहा—"मैं यहाँ असहयोग की शक्ति में अपने विश्वास की पुनर्घोषणा करने आया हूँ। आप सबको अभी से जनवरी १९३० के लिए तैयारी करनी है। भारतीय कांग्रेस कमेटी ने वे शर्तें निश्चित कर दी हैं जिनकी पूर्ति पर ही अहिंसात्मक उपायों से स्वराज्य की प्राप्ति हो सकती है। ये शर्तें हैं : खादी के द्वारा विदेशी वस्त्र-बहिष्कार, मादक द्रव्य-निषेध तथा हिन्दुओं द्वारा अस्पृश्यता का त्याग। चूँकि ये सब कार्य समुचित कांग्रेस-संगठन से ही सम्भव हैं इसलिए सदस्यों की भर्ती द्वारा कांग्रेस का पुनर्गठन आवश्यक है। मैं गम्भीर चेतावनी देता हूँ कि यदि हम कुछ न करेंगे, हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे तो केवल कांग्रेस की घोषणा मात्र से दिसम्बर में आकाश से स्वराज्य टपकने वाला नहीं है। मैं तो इसके आगे जाकर यहाँ तक कहना चाहूँगा कि यदि हमने बीच के काल में अपनी भावी घोषणा के लिए, जो ३१ दिसम्बर

१९२९ की अर्द्धरात्रि तक राष्ट्रीय माँग की सरकार द्वारा पूर्त्ति न करने पर की जायगी, शक्ति न पैदा की, तो वह घोषणा भी निर्जीव और निष्प्रभाव-सी पड़ी रह जायगी।"

उनके स्वास्थ्य पर अधिक बोझ न पड़े, इस दृष्टि से आगरा कालेज तथा सेण्ट जॉन्स कालेज के विद्यार्थियों की एक संयुक्त सभा रखी गयी थी। यह प्रश्न करने पर कि कितने छात्र खादी पहनते हैं, मुश्किल से एक दर्जन ने हाथ उठाये। एक कालेज के लड़कों ने तो अपने निवेदन में कहा था कि "यद्यपि हमें आपके आदर्शों पर विश्वास है, किन्तु हम दुःख के साथ यह स्वीकार करते हैं कि उन आदर्शों पर व्यवहार करने में हम असमर्थ हैं।" गाँधीजी ने इस सम्बन्ध में कहा—"मैं छात्रों से असमर्थता की बात सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ। तुम्हारी सारी विद्वत्ता, शेक्सपीयर और वर्ड्सवर्थ का तुम्हारा सारा अध्ययन निरर्थक है, यदि तुम उसी के साथ अपने चरित्र का निर्माण नहीं करते तथा अपने विचारों एवं कार्यों पर प्रभुत्व नहीं स्थापित कर लेते। जब तुम अपने ऊपर प्रभुत्व स्थापित कर लोगे तथा अपनी वासनाओं पर काबू रखना सीख लोगे, तब तुम्हारे मुँह से निराशा की वाणी नहीं निकलेगी। यह नहीं हो सकता कि एक ओर तुम हृदय-दान दो और दूसरी ओर आचरण की दरिद्रता की बात करो। हृदय-दान का मतलब सर्वस्व समर्पण करना है। पहिले तुम देने के लिए दिल पैदा करो।"

आगरा रहते समय बीच-बीच में वह निकटवर्त्ती गाँवों की दशा देखने के लिए चले जाया करते थे। हल्के कार्यक्रम तथा विश्राम के कारण वह आगरा के आस-पास के ऐतिहासिक स्थानों को भी देख सके, जिसकी इच्छा बहुत दिनों से अपने मन में सँजोये हुए थे। फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा निर्मित इबादतखाना का उनपर बड़ा प्रभाव पड़ा ताज तथा मुगल क अन्य उदाहरणों को देखकर

भी वह खुश हुए किन्तु वह भूल न पाये कि इनके निर्माण के पीछे बेगार तथा बलात् लिये गये श्रम की कहानी छिपी हुई है ।

मैनपुरी

१६ सितम्बर तक वह आगरा में रहे । २० को मैनपुरी पहुँचे । उन पर ज्यादा बोझ न पड़े, इसलिए सब संस्थाओं के अभिनन्दन-पत्र एक ही सार्वजनिक सभा में प्रदान किये गये; इन छपे अभिनन्दन-पत्रों को पढ़ा हुआ मान लिया गया । जिला कांग्रेस कमेटी के अभिनन्दन-पत्र मे मैनपुरी की राष्ट्रीय जागृति की दीर्घकालीन परम्परा का, जो १८५७ से आरम्भ होती थी, उल्लेख किया गया था । उसमें यह भी बताया गया था कि उनके १,८०० सदस्यों की निर्धारित संख्या की जगह २,४०० कांग्रेस सदस्य बन चुके हैं । गाँधीजी ने इस प्रगति पर सन्तोष व्यक्त करते हुए कमेटी को चेतावनी दी कि "यदि ये सदस्य नाम मात्र के सदस्य बनकर रह गये तो सदस्य बनाने मात्र से वे हमें स्वराज्य के पथ पर नहीं ले जा सकेंगे । यदि १९३० मे सचमुच ही कुछ करना है तो इन सदस्यों को अपना उत्तरदायित्व का भान भी होना चाहिए ।"

कानपुर

गाँधीजी कई हफ्ते संयुक्त प्रान्त के गाँवों एवं नगरों में घूम-घूम कर लोगों को खादी और उसमें सन्निहित राष्ट्रीय जागरण का सन्देश देते रहे । ग्रामीण अंचलों की अधिकांश सभाएँ दस हजार से लेकर पच्चीस हजार तक श्रोताओं की होती थीं । पूर्वी संयुक्त प्रान्त के प्रमुख केन्द्रों में जो सभाएँ हुईं उनमें, जैसे गोरखपुर में, श्रोताओं की संख्या

लाख के ऊपर चली जाती थी। चारों ओर जागरण का स्वर छा गया। युवकों में एक नयी चेतना तो आई किन्तु तदनुरूप अध्यवसाय एवं आचरण का अभाव दिखाई पड़ा। कानपुर के क्राइस्ट चर्च कालेज में छात्रों की जो सभा हुई थी उसमें उसके प्रिंसपल ने कहा—"आपके जीवन में जो आदर्श मूर्त्त हुए हैं उनके लिए हम अत्यधिक प्रशंसा के भाव रखते हैं किंतु दुःख है कि हम उनका अनुसरण करने का यत्न तक नहीं करते।" इस सभा में गाँधीजी ने कहा—"आप लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं १६३० में आपसे क्या कराना चाहता हूँ। मैं आपसे १६३० में जरूरत पड़ने पर हँसते हुए मौत का सामना करते देखना चाहूँगा। किन्तु वह मौत पापी और अपराधी की मौत न हो। ईश्वर केवल उन्हीं का बलिदान स्वीकार करता है जो हृदय से पवित्र होते हैं। इसलिए मृत्यु में भी देश की सेवा का योग्य अस्त्र बनने के लिए आपको आत्मशुद्धि करनी चाहिए।"

काशी : हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों की सभा

हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी के छात्रों की सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा—"......यदि तुम चरित्र की आवश्यक पवित्रता को आचरण में व्यक्त करना चाहते हो तो तुम उसे चरखा के माध्यम के अतिरिक्त और किसी माध्यम से उतने उत्तम रूप में प्रकट नहीं कर सकते। ईश्वर के नाना रूपों में दरिद्रनारायण रूप सर्वाधिक पवित्र है, क्योंकि वह चन्द धनिकों की अपेक्षा कोटि-कोटि दरिद्र जनों का प्रतिनिधित्व करता है। इन भूखे-नंगे कोटि-कोटि जनों के साथ तुम अपने ऐक्य का प्रदर्शन चरखे के सन्देश का प्रचार करके आसानी से

ः सकते हो। तुम ऐसा स्वयं कुशल कतवैये बनकर, खादी
र अर्थ-दान देकर कर सकते हो। याद रखो कि मालवीयज
' सुविधाएँ दे रखी हैं वे कोटि-कोटि लोक नहीं पा सकते।

काशी में महामना मालवीय जी के निवास

ाइयों एवं बहिनों को तुम बदले में क्या दोगे ? तुम्हें य
ाना चाहिए कि जब मालवीयजी ने विश्वविद्यालय की स
ब उनके मन में यही भाव रहा होगा कि तुम अपने जीव
कार संचालित करोगे कि जो शिक्षण तुम्हें यहाँ दिया गया है,
द्ध हो।"

काशी विद्यापीठ में

इसी दिन उन्होंने काशी विद्यापीठ के पदवीदान समार
लया, जिसका संचालन स्व० आचार्य नरेन्द्रदेवजी कर रहे
ी कुलपति के रूप में इस समारोह में उपस्थित हुए थे।
ान्त में उन्होंने कहा—"मैं जानता हूँ कि आपकी लघुस

आपको चिन्तित कर देती है और आपके मन में अपनी पुरानी संस्थाओं का त्याग करने के औचित्य के विषय में शंका भी उठती है। कोई-कोई उन पुरानी संस्थाओं में लौट जाने की प्रच्छन्न इच्छा भी रखते हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि प्रत्येक महत् कार्य में उसके लिए युद्ध करनेवालों की संख्या का महत्त्व नहीं होता, निर्णायक तत्व संख्या नहीं वरन् वे योद्धा किन गुणों के आकर होते हैं, यह होता है। संसार के महत्तम पुरुष सदा एकाकी ही रहे हैं। जरथुस्त्र, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद तथा अन्य अनेक प्रवक्ताओं को अकेले ही खड़ा होना पड़ा था किन्तु उनको अपने अन्दर और अपने प्रभु के अन्दर जीवन्त विश्वास था और चूँकि वे समझते थे कि ईश्वर उनके साथ है, वे अपने को एकाकी नहीं अनुभव करते थे। जब हजरत मुहम्मद हिजरत में थे, उनके साथ केवल अबूबकर था। शत्रुओं की एक बड़ी तादाद उनका पीछा करते हुए आ रही थी। इसे देख अबूबकर घबड़ा गया और भय से काँपते हुए कहा—"हम सिर्फ दो हैं। इनके विरुद्ध क्या कर लेंगे?" हजरत ने उसे झिड़क कर कहा—"नहीं अबूबकर! हम दो नहीं, तीन हैं। अल्लाह भी हमारे साथ है।" विभीषण और प्रह्लाद की अदम्य आस्था को देखो। मैं चाहता हूँ, तुममें अपने अन्दर और ईश्वर के अन्दर वही विश्वास, वही जीवन्त आस्था हो।"

मेरठ में

गाँधीजी ने संयुक्त प्रान्त के प्रवास में शायद ही कोई महत्वपूर्ण स्थान छोड़ा हो। वह प्रायः हर जगह गये। मेरठ में भारत के प्रमुख मजदूर नेता पकड़कर जेल में रखे गये थे। इनका मुकदमा मेरठ षड्यन्त्र केस के नाम से प्रसिद्ध है। जब गाँधीजी वहाँ पहुँचे तो उन्होंने कहा कि मैं न साम्यवादी हूँ न कोई और वादी किन्तु यदि मुझे

मिलने दिया गया तो मैं इन बन्दियों से अवश्य मिलूंगा। आज्ञा मिलते ही एक दोपहरी को वह अप्रत्याशित ही उनसे मिलने जेल में पहुँच गये। उन्होंने उनको विश्वास दिलाया कि वर्षान्त तक वे नहीं छोड़े गये तो वह भी उनके साथी बन जायँगे (जेल में आजायँगे)।

अलीगढ़

मुस्लिम विश्वविद्यालय के उपकुलपति के आग्रह पर अलीगढ़ गये। वहाँ उनकी वक्तृता क्या थी, युवकों के प्रति एक भावोद्रेक से पूर्ण अपील थी कि वे गोखले-जैसे देश सेवक उत्पन्न करें। उन्होंने छात्रों को द्वितीय खलीफा उमर की सादगी का स्मरण कराते हुए बताया कि सारे संसार की दौलत उनके कदमों में पड़ी रहने पर भी वह हर तरह के आराम-आसाइश से सदा दूर रहे और सदा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के चाकचिक्य पर उनकी लानत-मलामत करते रहे। गाँधी जी ने छात्रों से खादी अपनाने और उसके द्वारा अपने तथा भारत के कोटि-कोटि दरिद्र जनों के बीच एक जीवित सम्पर्क स्थापित करने की अपील की।

मथुरा

अलीगढ़ से, मार्ग के कई स्थानों का कार्यक्रम निबटाते हुए वह मथुरा पहुँचे। उस प्रदेश में कृष्ण की भूमि होने का कोई लक्षण न देख उनको बड़ा दु:ख हुआ और एक मानपत्र के उत्तर में उन्होंने गोरक्षा पर अपना हृदय ही उँडेल दिया। उन्होंने कहा—"जब कोई आदमी मथुरा और निकटवर्ती प्रदेश में, जो गोपाल की जन्म और लीलाभूमि कही जाती है, आता है तो वह यह आशा लिये आता है कि यहाँ उसे संसार के सर्वोत्तम चौपाये देखने को मिलेंगे और जैसा कि कृष्ण के काल

में था शुद्ध और अमिश्रित दूध पानी के मोल प्राप्त होगा। एक दर्शक के मन में यह आशा भी होगी कि मथुरा के लोगों में वह कठोर पवित्रता, सरलता और वीरता दिखाई देगी जो कृष्ण में थी। वह यह भी आशा लेकर आयेगा कि तिरस्कृत अछूत यहाँ प्रेम और सद्भाव से ग्रहण किया जाता होगा। मथुरा की सड़कों से गुजरता हुआ मैं देखता हूँ कि चौपायों की हड्डियाँ बाहर निकल आई हैं, गायें इतना कम दूध देती हैं कि आर्थिक बोझ बन जाती हैं। इस पवित्र स्थान में मैं एक बूचड़खाना देखता हूँ जहाँ उन गौओं का मांसाहार के लिए वध किया जाता है, जिनकी कृष्ण रक्षा और पूजा करते थे। यह कल्पना गलत है कि इस लज्जाजनक स्थिति के लिए मुसलमान या अंग्रेज जिम्मेदार हैं। हम हिन्दू ही इसके लिए मुख्यतः जिम्मेदार हैं। चूँकि चौपाये भूमि पर तेजी के साथ आर्थिक बोझ बनते जा रहे हैं, वे मारे जायँगे और यदि वे भारत में नहीं मारे जायँगे तो जहाज द्वारा कहीं विदेश में उसके वधगृहों के लिए भेज दिये जायँगे जैसा कि आस्ट्रेलिया में भेजे भी जा रहे हैं। भारत के चौपायों का अधिकांश हिन्दुओं की मिल्कियत है। वे ही उसे बधिकों या उनके खरीदारों को बेच देते हैं। यदि हम उस दिव्य बालकृष्ण के प्रति, जिसकी उपासना का दम हम भरते हैं, अपने कर्तव्य का पालन करें तो पशु-पालन के विज्ञान का अध्ययन कर दृढ़ निश्चय कर लें कि हम अपने गोधन को संसार में सर्वोत्तम बनाकर छोड़ेंगे और मूर्खतापूर्ण गतानुगतिकताओं को, फिर भले वे कितनी ही प्राचीन हों, छोड़ देंगे।"

गोवर्द्धन में

जब वह गोवर्द्धन गये और वहाँ उन्होंने गो-जाति की भयंकर दुर्दशा देखी तो उन्हें उससे भी अधिक आघात लगा जितना मथुरा में

लगा था। उन्होंने कहा—"आप मुझे ऐसी जगह ले आये हैं जो मेरे अन्तरतम तक को छेड़ देता है। मैं एक वैष्णव परिवार का व्यक्ति हूँ। बचपन से मुझे कृष्ण की जन्मभूमि तथा क्रीड़ाभूमि के बारे में सिखाया गया है कि यहाँ आने से पापों का क्षय हो जाता है। परन्तु जब मैं यहाँ की सड़कों से गुजर रहा था, ऐसी कोई भावना मेरे अन्दर उत्पन्न नहीं हुई। यह वही स्थान है जहाँ कहा जाता है कि कृष्ण ने, अपने ग्वाल सखाओं तथा गौओं की, वर्षा और तूफान से रक्षा करने के लिए, अपनी उँगली पर गोवर्द्धन पर्वत उठा लिया था। मानवता और उसकी साथिन गाय की सेवा की वह भावना मैं आज यहाँ नहीं पाता। उसकी जगह मैं अस्थिचर्मावशेष गोवृन्द को देखता हूँ; मैं अपने सामने ऐसे आदमियों और बच्चों को देखता हूँ जिनमें कोई जीवन नहीं, कोई ज्योति नहीं है। मुझे बताया गया है कि यहाँ ब्राह्मणों को भिक्षुक कहा जाता है। प्राचीन युग के ब्राह्मण ऐसे न थे। यही थे वे जिन्होंने ईश्वर का साक्षात् किया था और ईश्वर-दर्शन का रहस्य सब मनुष्यों को बताया था। वे दूसरों की दया या दान पर नहीं जीते थे। जिन्हें वे ईश्वरीय ज्ञान देते थे वे लोग उनके भरण-पोषण का प्रबन्ध स्वयं अपने ऊपर उठा लेते थे। कृष्ण के युग में वे सच्चे धर्म के रक्षक थे। ··· अब इस पवित्र गोवर्द्धन में उनका कहीं कोई चिह्न शेष नहीं है।"

ज़मींदारों और रैयत का सम्बन्ध

प्रान्त भर में घूमकर उन्होंने रैयत की जो दशा देखी और उनके साथ जमींदारों के सम्बन्ध दिन-दिन बिगड़ते जाने का जो दृश्य देखा उससे उनको बड़ी व्यथा हुई। इस व्यथा को उन्होंने 'यंग इण्डिया' के एक लेख में प्रकट किया। इस लेख में वर्णाश्रम के पतन, क्षत्रिय के

ताता रूप के ह्रास, भोग-विलास तथा शान-शौकत में उ
रैयत के प्रति उसके अत्याचार तथा रैयत के ऊपर बढ
बड़ा ही मार्मिक चित्र उन्होंने खींचा और यह भी बता
सम्बन्ध कैसे होने चाहिए तथा उनके कर्तव्य क्या हैं

तीर्थों की गंदगी

इस यात्रा में गांधीजी काशी, आयोध्या, मथुरा, वृ
इत्यादि पावन तीर्थों में भी गये और सदा की भाँति उ
आन्तरिक गन्दगी देखकर उनके हृदय को आघात प
में शौच एवं स्वच्छता के नियमों का पालन करने की ओ
नहीं पाई। जो स्थान पावन थे और पूर्वजों ने धर्मवृद्धि
प्रतिष्ठा कराई थी, वे सब समय के प्रवाह में कुरुचि
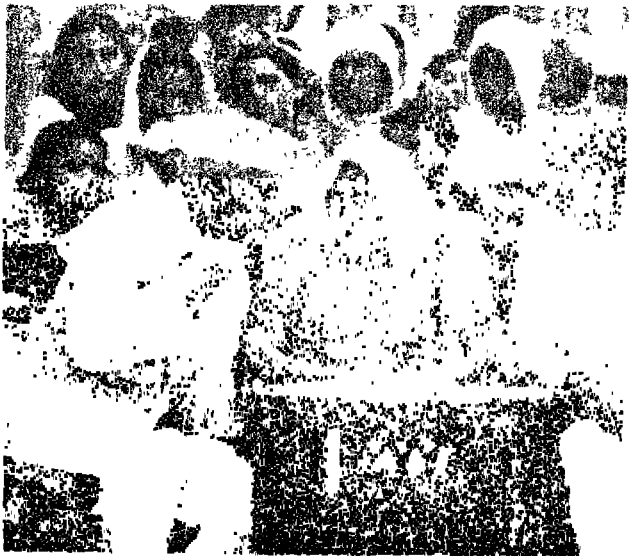
गांधीजी हरद्वार में

अनीति के अड्डे बन गये। इस यात्रा में हरद्वार के विषय में मार्मिक वेदना से भरी जो पंक्तियाँ उन्होंने लिखीं वे अन्य तीर्थों के विषय में भी उतनी ही सत्य हैं और उनकी भावना एवं दृष्टिकोण को प्रकट करती हैं। यहाँ हरद्वार का वर्णन उनके ही शब्दों में दिया जाता है।

हरद्वार : भौतिक और नैतिक गंदगी

"निःसन्देह यह सच है कि हरद्वार और दूसरे प्रसिद्ध तीर्थस्थान एक समय वस्तुतः पवित्र थे। स्थान के सौन्दर्य और उनकी परम्परागत लोक-प्रियता से पता चलता है कि वे स्थान किसी समय हिन्दू धर्म की संशुद्धि और संरक्षण के गढ़ थे। लेकिन मुझे कबूल करना पड़ता है कि हिन्दू धर्म के प्रति मेरे हृदय में गम्भीर श्रद्धा और प्राचीन सभ्यता के लिए स्वाभाविक आदर होते हुए भी हरद्वार में इच्छा रहने पर भी मनुष्य-कृत ऐसी एक भी वस्तु नहीं देख सका, जो मुझे मुग्ध कर सकती।

"पहली बार जब १९१५ में मैं हरद्वार गया था, तब भारत-सेवक-संघ की सेवा-समिति के कप्तान पं० हृदयनाथ कुंजरू के अधीन एक स्वयंसेवक बनकर पहुँचा था। इस कारण मैं सहज ही बहुतेरी बातें आँखों देख सका था और कई लोगों के निकट परिचय में आ सका था। किसी दूसरी अवस्था में इस तरह परिचय पाना शायद कठिन होता। तब तो मैं बड़ी-बड़ी आशाएँ लगा कर और पूज्य भाव से प्रेरित होकर हरद्वार गया था। लेकिन जहाँ एक ओर गंगा की निर्मल धारा ने और हिमांचल के पवित्र पर्वत-शिखरों ने मुझे मोह लिया, वहाँ दूसरी ओर मनुष्य की करतूतों को देख मेरे हृदय को सख्त चोट पहुँची और हरद्वार की नैतिक तथा भौतिक मलिनता को देख कर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। इस बार की यात्रा में भी मैंने हरद्वार की इस दशा में कोई ज्यादा

सुधार नहीं पाया। पहले की भाँति आज भी धर्म के नाम पर गंगा की भव्य और निर्मल धार गँदली की जाती है। गंगातट पर, जहाँ पर ईश्वर-दर्शन के लिए ध्यान लगाकर बैठना शोभा देता है, पाखाना-पेशाब करते हुए असंख्य स्त्री-पुरुष अपनी मूढ़ता और आरोग्य के तथा धर्म के नियमों को भंग करते हैं। तमाम धर्म-शास्त्रों में नदियों की धारा, नदी-तट, आम सड़क और यातायात के दूसरे सब मार्गों को गन्दा करने की मनाही है। विज्ञानशास्त्र हमें सिखाता है कि मनुष्य के मलमूत्रादि का नियमानुसार उपयोग करने से अच्छी-से-अच्छी खाद बनती है। आरोग्यशास्त्री कहते हैं कि उक्त स्थानों में मल-मूत्रादि का विसर्जन करना मानव-समाज की घोर अवज्ञा करना है। यह तो हुई प्रमाद और अज्ञान के कारण फैलनेवाली गन्दगी की बात। धर्म के नाम पर जो गंगा-जल बिगाड़ा जाता है, सो तो जुदा ही है। विधिवत् पूजा करने के लिए मैं हरद्वार में एक नियत स्थान पर ले जाया गया। जिस पानी को लाखों लोग पवित्र समझ कर पीते हैं, उसमें फूल, सूत, गुलाल, चावल, पंचामृत वगैरा चीजें डाली गयीं। जब मैंने इसका विरोध किया तो उत्तर मिला कि यह तो सनातन से चली आई एक प्रथा है। इसके सिवा मैंने यह भी सुना कि शहर की गटरों का गँदला पानी भी नदी में ही बहा दिया जाता है, जो कि एक बड़े-से-बड़ा अपराध है।

"यात्रियों की इतनी अधिक भीड़ के रहते हुए भी हरद्वार का स्टेशन अब तक पूर्ववत् नन्हा-सा बना हुआ है। स्टेशन पर किसी भी बात की सुविधा नहीं है। गलियाँ सँकरी और गन्दी हैं। इस तरह अधिकारियों और जनता ने हरद्वार को गन्दा बनाने में कोई बात उठा नहीं रखी है।

"यह तो हरद्वार की भौतिक गन्दगी की राम-कहानी हुई। मुझे

विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि वहाँ की नैतिक गन्दगी इससे भी कहीं बढ़-चढ़-कर है । हरद्वार में रात-दिन होनेवाले व्यभिचार की जो बातें मैंने सुनी हैं उनका उल्लेख इन स्तम्भों में नहीं किया जा सकता । पण्डों ने मुझे जो मानपत्र दिया था, उसमें उन्होंने अपने भोलेपन के कारण स्पष्ट ही स्वीकार किया था कि शास्त्रों की आज्ञानुसार हरद्वार शहर में ब्रह्मचर्य से रहना आवश्यक है । अतएव वे उस स्थान को यात्रियों के लिए छोड़ कर स्वयं हरद्वार की अंकित सीमा में रहते है । इतना सब होते हुए भी कोई कारण नहीं कि हरद्वार एक आदर्श क्षेत्र न बन सके । हिन्दू धर्म की प्राचीन संस्कृति का पुनरुत्थान करने का दावा रखनेवाली तीन संस्थाएँ हरद्वार में हैं—ऋषिकुल, महाविद्यालय और स्व० श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल । इनके सिवा हरद्वार में, ज्वालापुर में और पास-पड़ोस में अनेक धनाढ्य महन्त भी रहते हैं । ये सब या इनमें से कोई एक ही संस्था, अगर चाहे तो हरद्वार को आदर्श तीर्थ-स्थान वना सकती है । जिस सार्वजनिक सभा में मैंने हरद्वार की भौतिक और नैतिक गन्दगी के सम्बन्ध में अपना दुःख प्रकट किया था, उसके सभापति आचार्य रामदेवजी ने प्रतिज्ञा करके मुझे आश्वासन दिया है कि वह अपने गुरुकुल के द्वारा इन सुधारों के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे । अनेक स्थानीय मौन सेवक भी इस परिस्थिति को सुधारने के लिए यथाशक्ति कोशिश कर रहे हैं । जिस हरद्वार में स्वदेशी शक्कर का ही चलन है, वहीं हर साल सात लाख रुपयों का विलायती कपड़ा बिक जाता है । ज्वालापुर में, जो हरद्वार का एक मुख्य अंग है, शराव और कसाई की एक दूकान भी है । कोई कारण नहीं कि हरद्वार में सम्पूर्ण मद्यपान-निषेध सफल न हो सके और हिन्दुओं के तीर्थ-स्थान में कसाई की दूकान का होना तो एक आश्चर्य की ही बात है । आचार्य जी को आशा है कि वह हरद्वार को स्वच्छ बना सकेंगे और मांस, शराब तथा विदेशी वस्त्र को वहाँ से निकाल

सकेंगे। उनकी यह आकांक्षा प्रशंसनीय है। ईश्वर करे यह पूरी हो। अगर गुरुकुल के विद्यार्थी अपने विद्याभ्यास के साथ-साथ धर्म और देश की इस तरह सेवा भी कर सकें तो उन्हें अवश्य ही सच्ची शिक्षा का लाभ मिले।"

२४ नवम्बर १९२९ को संयुक्त प्रान्त का दौरा समाप्त हुआ। इस दौरे में उन्होंने शताधिक सभाओं में भाषण दिये, हजारों मील की यात्रा की, लाखों आदमियों को खादी का सन्देश सुनाया और खादी कोष में तीन लाख तीस हजार रुपये एकत्र किये। उनके इस दौरे से इस प्रदेश की जनता तथा युवकों में एक नया जीवन आ गया।

: १२ :

सत्याग्रह के तूफान में और उसके बाद

१६२६ के अन्त में लाहौर कांग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता के ध्येय की घोषणा की। २६ जनवरी १६३० को सम्पूर्ण देश में लाखों व्यक्तियों ने स्वतन्त्र होने की प्रतिज्ञा ली। सर्वत्र उत्साह की लहर दौड़ गयी। गाँधीजी अब भी समझौता करना और सरकार की नीयत परखना चाहते थे। उन्होंने सरकार द्वारा ११ शर्तों की पूर्ति पर सत्याग्रह को स्थगित करने की इच्छा प्रकट की पर उस पर ब्रिटिश सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। फरवरी में साबरमती में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई। इसमें सविनय अवज्ञा और सत्याग्रह करने और चलाने का अधिकार उन्हीं को दिया गया, जिनका अहिंसा द्वारा ही पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने में विश्वास हो। गाँधीजी ने अपने आश्रम के कार्यकर्त्ताओं को लेकर सत्याग्रह शुरू करने का विचार किया। २ मार्च को उन्होंने वाइसराय को एक पत्र भारत-प्रेमी अंग्रेज रेजीनाल्ड रेनाल्ड्स के हाथ भेजा, जिसमें सरकार से अब भी कुछ अनीतियों का अन्त कर देने की प्रार्थना की गयी थी और माँग की पूर्ति न होने की अवस्था में सत्याग्रह आरम्भ करने की सूचना भी थी। वाइसराय ने उत्तर में केवल गाँधी जी द्वारा सत्याग्रह शुरू करने के निश्चय पर दु:ख प्रकट किया। ७ मार्च को रास (गुजरात) में सरदार वल्लभभाई गिरफ्तार कर लिये गये। गाँधीजी ने अपने ७८ आश्रमवासियों के साथ १२ मार्च को साबरमती से दाण्डी की ओर प्रयाण किया। वहाँ पहुँचकर उनका विचार नमक-कानून तोड़ने का था। वे लोग प्रति दिन १० से १५ मील तक चलते

। प्रतिदिन प्रार्थनादि के बाद प्रात: साढ़े छ: बजे यात्रा आरम्भ
ती थी । इस यात्रा ने रास्ते के समस्त अंचल को उत्साह और नव-
वन से भर दिया । २४१ मील की यह यात्रा ५ अप्रैल को पूरी हुई ।
अप्रैल को प्रात: साढ़े आठ बजे गाँधीजी ने नमक कानून तोड़कर
त्याग्रह आन्दोलन का शुभारम्भ किया । फिर तो सारे देश में नमक
नून तथा बाद में अन्य कानूनों को तोड़ने की धूम मच गयी । सरकार
गी होकर दमन पर उतर आई । स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों को लाठियों से
र-मार कर सुला दिया गया; देश में कितने ही स्थानों पर गोलियाँ
ी चलीं । सीमाप्रान्त में आन्दोलन को कुचलने के लिए सैनिक टुकड़ियों
ा भी उपयोग किया गया । ऐसा भयंकर दमन हुआ कि मनुष्यता थर्रा
ठी किन्तु दमन से देश दबा नहीं, झुका नहीं ।

४ मई (१९३०) को गाँधीजी भी गिरफ्तार कर लिये गये ।
सके विरोध में सारे भारत में हड़ताल हुई । सत्याग्रह चलता रहा ।
वदेशी वस्त्र, शराब तथा ब्रिटिश वस्तु के बहिष्कार में पर्याप्त सफलता
ई । हजारों स्त्रियाँ इस आन्दोलन में बाहर निकल आयीं । सरोजिनी
ायडू, स्वरूपरानी नेहरू, कस्तूर बा गाँधी, कमला नेहरू इत्यादि
गिरफ्तार कर ली गयीं । ३० जून को कांग्रेस के स्थानापन्न अध्यक्ष
मोतीलालजी गिरफ्तार कर लिये गये और कांग्रेस कार्य-समिति को
र-कानूनी घोषित कर दिया गया । आर्डिनेंसों का शासन शुरू हुआ ।
जेलें भर गयीं । नवजीवन प्रेस जब्त कर लिया गया । राष्ट्रीय पत्रों
पर नाना प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये गये ।

आन्दोलन को सफल होते देख सरकार घबरा गयी । श्री जयकर
और सप्रू की मध्यस्थता से बातें शुरू हुईं और दोनों को गाँधीजी,
मोतीलालजी तथा जवाहरलालजी से जेल में मिलकर उनकी प्रतिक्रिया
जानने को कहा गया । बाद में मोतीलालजी तथा जवाहरलालजी

को यरवदा जेल ले जाकर १३,१४ तथा १५ अगस्त को गाँधीजी से मिलाया गया। इधर यह हो रहा था, उधर देश में तीव्र गति से दमन भी चल रहा था। सम्पूर्ण भारत में कांग्रेस संस्थाओं को गैर-कानूनी करार दिया जा रहा था। पर इन सब बातों से स्थिति बिगड़ती ही जा रही थी। अन्त में २५ जनवरी १६३१ को वाइसराय लार्ड इर्विन ने गाँधीजी तथा कांग्रेस कार्य समिति के अन्य सदस्यों को रिहा कर देने की घोषणा की। २६ जनवरी को वे छोड़े गये, देश ने स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा फिर से दोहराई।

प्रयाग में

मोतीलालजी की तबीयत जेल में ही बहुत खराब हो गयी थी। रोग बहुत बढ़ जाने पर ८ सितम्बर,'३० को ही वह रिहा कर दिये गये थे। पर बाहर आकर भी उनकी तबीयत बिगड़ती ही गयी। सुनते ही गाँधीजी प्रयाग आये। गाड़ी रात को देर से पहुँची थी, तब भी उनकी प्रतीक्षा में मोतीलालजी जग रहे थे। गाँधीजी ने उन्हें देखते ही कहा—"यदि आप इस खतरे को पार कर गये तो हम निश्चय ही स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे।" मोतीलालजी ने उत्तर दिया—"महात्मा जी, मैं तो शीघ्र ही जा रहा हूँ और मैं स्वराज्य को देखने के लिए यहाँ नहीं रहूँगा। किन्तु मैं जानता हूँ, आपने उसे जीत लिया है, और शीघ्र ही उसे प्राप्त भी कर लेंगे।"

धीरे-धीरे अनेक प्रतिष्ठित मित्र उनकी रुग्ण-शय्या के पास एकत्र हो गये। गाँधीजी का विचार कार्यकारिणी की बैठक बम्बई में करने का था। यह सुनकर पण्डितजी ने सबको रुलाते हुए कहा—"भारत के भाग्य का निर्णय स्वराज्य-भवन में करो। मेरे सामने करो और मेरी मातृभूमि के अन्तिम सम्मानपूर्ण समझौते में मुझे भी भाग लेने दो।"

कार्यकारिणी की बैठक स्वराज-भवन मे हु
ने पूर्ण विश्राम की सलाह दी थी किन्तु
प्रत्येक विषय में वह कार्यकारिणी को
।

धीजी बराबर उनके साथ रहे । उस
ी व्यवस्था न होने के कारण ४ फरव
ले जाया गया । गाँधीजी भी साथ गये
के कारण एक्सरे भी नहीं लिया जा स
बजकर ४० मिनट पर उनका देहावस
ाँ से उनका शव प्रयाग ले जाया गया । ग
चिता की ओर उँगली उठाकर गाँधी
हीं, राष्ट्रयज्ञ का हवन-कुण्ड है ।"
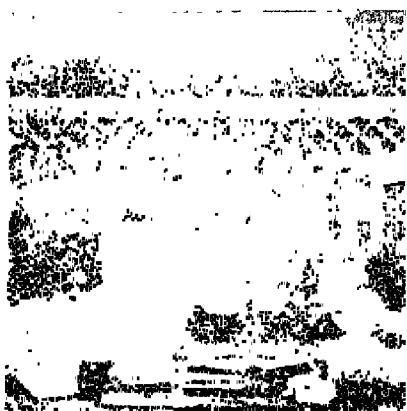
लाल जी की मृत्यु के अवसर पर इलाहाब
हर लाल नेहरू, श्री जमना लाल बजाज, र
भाई पटेल ।

गाँधीजी १६ फरवरी (१९३१) तक बराबर प्रयाग में रहे। मोतीलाल जी के बाद वही अब घर के बुजुर्ग हो गये थे। इलाहाबाद मे ही ८ से १४ फरवरी (१९३१) तक शास्त्री, सप्रू और जयकर से उनकी वार्ता होती रही। यहीं से उन्होंने वाइसराय को एक लम्बा पत्र लिखा जिसमें पुलीस के अत्याचारों का वर्णन तथा उनसे मुलाकात का अनुरोध किया गया था। लार्ड इर्विन ने गाँधीजी से मिलना स्वीकार किया, इसलिए १६ को दिल्ली चले गये। १७ को साढ़े तीन घण्टे बातचीत चलती रही। बातों का यह सिलसिला बीच-बीच में कई दिनों तक चलता रहा और ५ मार्च को इर्विन-गाँधी समझौता हो गया। सत्याग्रह के कैदी छोड़ दिये गये। कांग्रेस-संस्थाओं पर से रोक उठा ली गयी। २८ मार्च को धूमधाम से कराची कांग्रेस अधिवेशन हुआ।

समझौता होने के बावजूद पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्त, बंगाल और सयुक्त प्रान्त में शासनाधिकारी किसी-न-किसी बहाने से दमन और छेड़खानियाँ करते ही रहे। संयुक्त प्रान्त में किसानों पर भयानक संकट आया हुआ था, वे पूरा लगान देने की स्थिति में नहीं थे और बार-बार सरकार पर अपनी असमर्थता प्रकट कर रहे थे किन्तु कोई सुनवाई नही होती थी। १४ मई को गाँधीजी नये वाइसराय लार्ड विलिंगडन से शिमला में मिले।

नैनीताल में

शिमला से गाँधीजी नैनीताल आये। ५ दिन वह नैनीताल रहे और गवर्नर सर मालकम हेली से मिलकर जनता की शिकायतो के विषय में उनसे बातें करते रहे परन्तु कुछ विशेष सफलता न मिली। नैनीताल में कितने ही कांग्रेस कर्मचारियों ने उनसे भेंट की और अपनी

समस्याएँ उनके सामने रखीं। उनके निमन्त्रण पर कितने ही ताल्लुकेदार और जमींदार भी उनसे मिले और अपना पक्ष उनके सामने उपस्थित किया। २१ मई को उन्होंने संयुक्त प्रान्त के किसानों के नाम अपील प्रकाशित की।

कांग्रेस के अनुरोध पर गाँधीजी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए २९ अगस्त को विलायत को रवाना हुए। वहाँ से २८ दिसम्बर को बम्बई लौटे। उनकी अनुपस्थिति में देश की स्थिति बहुत बिगड़ गयी थी। गाँधीजी के लौटते ही बम्बई में कांग्रेस-कार्यकारिणी की बैठक रखी गयी। उसमें शरीक होने के लिए जाते हुए जवाहरलालजी और संयुक्तप्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष शेरवानी गिरफ्तार कर लिये गये। इससे बड़ी उत्तेजना फैली। किन्तु इतना सब होते हुए भी गाँधी जी ने वाइसराय से मिलकर देश और सरकार की स्थिति पर बातचीत करने की इजाजत माँगी पर वह इजाजत भी न मिली। वस्तुत सरकार ने लड़ाई की सब तैयारी पहिले से ही कर ली थी। विवश होकर कांग्रेस को पुनः सत्याग्रह आन्दोलन जारी करना पड़ा। इस बार सरकार ने बड़े वेग और कड़ाई से दमन आरम्भ किया। न केवल कांग्रेस बल्कि छात्र-संघ, स्वदेशी-संघ, खादी-भण्डार आदि राष्ट्रीय विचार की सभी संस्थाएँ गैरकानूनी करार दे दी गयीं। इतना ही नहीं उनमें से अधिकांश पर सरकार ने कब्जा कर लिया। हड़ताल की मनाही कर दी गयी, अखबारों को सत्याग्रह आन्दोलन की खबरें देने से रोक दिया गया। व्यवस्था के शासन की जगह भय और आतंक का राज्य शुरू हुआ। फिर भी आन्दोलन चलता रहा और मई १९३३ तक लगभग ६० हजार आदमी, इस सम्बन्ध में जेल गये। परन्तु दमन तथा ठीक खबरें न मिलने इत्यादि के कारण आन्दोलन की गति बाद में धीमी पड़ती गयी।

१९३१ में जब गाँधीजी गोलमेज सम्मेलन में गये थे तब अल्प-संख्यक जातियों के विशेष प्रतिनिधित्व पर बोलते हुए उन्होंने हरिजनों को अलग प्रतिनिधित्व देकर सदा के लिए उनको हिन्दुओं से अलग कर देने की नीति की जबर्दस्त टीका की और यह भी कह दिया था कि ऐसे किसी प्रयत्न का मैं प्राणों की बाजी लगाकर भी विरोध करूँगा। जेल से भी उन्होंने ११ मार्च १९३३ को भारत-सचिव को अपना निश्चय दोहराते हुए सूचना दे दी थी। अगस्त में ब्रिटिश सरकार की ओर से प्रधानमन्त्री श्री रैमज़े मैकडानल्ड का निर्णय प्रकाशित हुआ। इसमें वही सब बातें थीं। १८ अगस्त को गाँधीजी ने उन्हें लिखा कि निर्णय में परिवर्त्तन न होने की स्थिति में २१ सितम्बर से मैं आमरण अनशन करूँगा। ठीक समय पर गाँधीजी ने अपना आमरण उपवास शुरू किया। इससे बड़ा तहलका मचा। अन्त में २६ सितम्बर को उच्चवर्णीय हिन्दू नेताओं एवं अछूतों के नेताओं के बीच एक समझौता हो गया, जिसे सरकार द्वारा भी स्वीकार कर लिया गया और गाँधीजी का उपवास समाप्त हुआ। उच्चवर्ण के हिन्दू नेताओं ने अस्पृश्यता का कलंक दूर करने की जिम्मेदारी ली थी, इसलिए दिल्ली में अस्पृश्यता-निवारण संघ (बाद में हरिजन-सेवक संघ) की स्थापना की गयी और इस दिशा में काफी काम भी हुआ किन्तु गाँधीजी को ऐसा प्रतीत हुआ कि आन्दोलन पूर्ण सच्चाई और पवित्रता के साथ नहीं चल रहा है। सवर्ण हिन्दुओं का दिल जैसा बदलना चाहिए, नहीं बदला है। इससे उन्हें दुःख हुआ और इसे अपनी ही आत्मिक अपूर्णता मानकर उन्होंने बिना किसी शर्त के ८ मई १९३३ से २१ दिन का उपवास करने की घोषणा की। पिछले उपवास में ६ दिनों में ही उनकी हालत बड़ी खराब हो गयी थी इसलिए न सरकार, न जनता को यह आशा थी कि वह २१ दिन का उपवास पूरा कर सकेंगे। सरकार ने उन्हें रिहा

कर दिया किन्तु छूटने के बाद भी पूना (पर्णकुटी) में रहकर उन्होने अपना उपवास जारी रखा। प्रभु की कृपा से उपवास पूरा हुआ।

उनके उपवास से सारे देश का ध्यान उधर ही खिंच गया। १४ जुलाई को सामूहिक सत्याग्रह का आन्दोलन उठा लिया गया, हाँ व्यक्तिगत सत्याग्रह की छूट रही। गाँधीजी ने साबरमती का सत्याग्रह-आश्रम तोड़ दिया और अपना यह निश्चय प्रकट किया कि १ अगस्त को आश्रम के ३२ साथियों के साथ रास स्थान की ओर प्रस्थान करेंगे, जहाँ किसानों की स्थिति बहुत खराब हो रही थी। ३१ जुलाई की रात मे उन्हें गिरफ्तार कर पूना के यरवदा जेल में भेज दिया गया। ४ अगस्त को वह इस शर्त्त के साथ छोड़ दिये गये कि पूना नगर की सीमा के बाहर न जायँ किन्तु गाँधीजी ने आज्ञा भंग की और गिरफ्तार कर लिये गये तथा उन्हें एक वर्ष की सादी कैद हुई।

जेल में हरिजन कार्यों की सुविधा न देने पर गाँधीजी ने पुन. उपवास करने का निश्चय किया। बार-बार के उपवास से उनका स्वास्थ्य काफी खराब हो गया था। २१ अगस्त को वह सासून अस्पताल ले जाये गये। उनकी हालत तेजी से बिगड़ने लगी। २३ अगस्त को जब उनकी स्थिति खतरनाक हो गयी, सरकार ने उन्हें बिना शर्त्त रिहा कर दिया। उन्होंने अस्पताल छोड़ने के पूर्व उपवास तोड़ा और पर्णकुटी में रहने लगे। छूटने पर उन्होंने अपना ध्यान हरिजन कार्य में केन्द्रित करने का इरादा जाहिर किया।

सितम्बर १६३३ में वह सत्याग्रह-आश्रम वर्धा चले गये। वहाँ ६ सप्ताह तक विश्राम करने के बाद उन्होंने अस्पृश्यता-निवारण के लिए सम्पूर्ण देश का दौरा करने का निश्चय किया। यह दौरा वर्धा से ही ७ नवम्बर १६३३ को शुरू हुआ।

: १३ :

हरिजनों के लिए उत्तर प्रदेश की यात्रा

१९३४ में भारत के विभिन्न प्रान्तों में अस्पृश्यता-निवारण कार्य के लिए दौरा करने के बाद, गाँधीजी उत्तर प्रदेश (तब संयुक्त प्रान्त) में आये और २२ जुलाई से २ अगस्त तक उन्होंने प्रमुख स्थानों और नगरों का दौरा किया। इस दौरे की एक निर्देशिका, संक्षिप्त रूप से नीचे दी जाती है :—

२२ जुलाई

कलकत्ता से कानपुर आगमन। कानपुर : नगरपालिका और जिला परिषद के मानपत्र, सार्वजनिक सभा, मानपत्र और थैली ११,००० रुपये; सायंकालीन प्रार्थना के समय धन-संग्रह ५१ रुपये १३ आने।

२३ जुलाई

कानपुर। मौन-दिवस; सायंकालीन प्रार्थना के समय धन-संग्रह ५७ रुपये ६॥ आने।

२४ जुलाई

कानपुर। तिलक-स्मारक हाल का उद्घाटन; सनातनी प्रतिनिधि-मण्डल तथा संयुक्तप्रान्तीय हरिजन-सेवक-संघों के कार्यकर्त्ताओं

से भेंट; विद्यार्थियों की सभा; सनातन धर्म कालेज
का मानपत्र तथा थैली ५११ रुपये सवा दो आने;
का मानपत्र । दिन भर का कुल धन-संग्रह ३,२४
पन्द्रह आने ।

लखनऊ कां

२५ जुलाई

कानपुर से लखनऊ प्रस्थान और वापसी रेल
स्टेशन पर थैली तथा फुटकर २८२ रुपये साढ़े बारह
महिला-सभा तथा थैली १,१७६ रुपये सवा छः आ
में १०१ रुपये; सार्वजनिक सभा, सनातनियों तथ
मानपत्र तथा थैली और फुटकर संग्रह ३,६४५ रुपये पौ
कानपुर : जिला-हरिजन-सेवक-संघों के प्रतिनिधियों
इटावा की थैली ७३२ रुपये फर्रुखाबाद की थैल

मुरादाबाद की थैली ३२२ रुपये आठ आने; जालौन की थैली ६०१ रुपये; बाल्मीकि-सुधार-सभा, आगरा की थैली ६ रुपये साढ़े पाँच आने; सीतापुर की थैली ३०१ रुपये सवा नौ आने; बाँदा की थैली १८५ रुपये दो आने; संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मानपत्र तथा थैली १३७ रुपये; हरिजन-बस्तियों का निरीक्षण; गुजरातियों का मानपत्र तथा थैली १,१३१ रुपये चार आने; गुजराती स्कूल के बच्चों की थैली १२ रुपये तीन आने; संध्या की प्रार्थना के समय धन-संग्रह ८२ रुपये आठ आने साढ़े दस पाई। दिन भर का कुल धन-संग्रह १०,६४३ रुपये साढ़े सात पाई।

२६ जुलाई

कानपुर: कांग्रेसजनों, कानपुर जिले के हरिजन कार्यकर्त्ताओं और संयुक्तप्रान्त के खादी-विक्रेताओं से भेंट; सेठ कमलापति सिंहानिया-द्वारा दान १,५४१ रुपये; महिलाओं की सभा, मानपत्र तथा धन-संग्रह ७४३ रुपये साढ़े दस आने; हरिजन-बस्तियों का निरीक्षण; संध्याकालीन प्रार्थना के समय धन-संग्रह २२० रुपये सवा तीन आने। दिन भर का कुल धन-संग्रह ३,५९२ रुपये तेरह आने। कानपुर से काशी के लिए प्रस्थान।

२७ जुलाई

काशी। सार्वजनिक कार्य; सायंकालीन प्रार्थना के समय धन-संग्रह १२२ रुपये छः आने ग्यारह पाई।

२८ जुलाई

काशी। सार्वजनिक कार्य; गोरखपुर जिले की थैली ९५१

२ अगस्त

काशी। हरिजन-बस्तियों तथा कबीर मठ का
कबीर-मठ में थैली तथा फुटकर संग्रह १२९ रुपये पौने
काशी की पण्डित-मण्डली का मानपत्र, महिलाओं की स
२,७८८ रुपये।

कानपुर

गाँधीजी का स्वास्थ्य इन दिनों बहुत गिरा हुआ
सब स्थानों पर जाना न पड़े और उन पर बोझ कम पड़े इ
प्रान्त के हरिजन-प्रवास को दो मुख्य केन्द्रों में बाँट
पश्चिमी जिलों के लिए कानपुर तथा पूर्वी जिलों
प्रबन्ध यह किया गया था कि उस क्षेत्र के विभिन्न जिलों
इन प्रमुख केन्द्रों में ही अपनी संस्थाओं के मानपत्र या जि
गाँधीजी को भेंट करेंगे। इससे उन्हें यात्रा का बहुत
पड़ेगा।

नगरपालिका

२२ जुलाई को कानपुर नगरपालिका और जि
ही जगह अपने-अपने मानपत्र गाँधीजी को दिये।
डा० जवाहरलाल रोहतगी के बँगले पर, जहाँ गाँधीजी
थे, दिये गये। नगरपालिका की विवरणी से ज्ञात हु
प्रशंसनीय हरिजन-सेवा की है। १९३२ के पूर्व ही उस
रुपये खर्च करके हरिजन कर्मचारियों के लिए कुछ
दिये थे। डा० ब्रजेन्द्रस्वरूप के अध्यक्ष चुने जाने के बा

त

ाशी। हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का मानपत्र औ
,७६६ रुपये पन्द्रह आने आठ पाई; फैजाबाद की थैली २०३
हरिजन कार्यकर्त्ताओं की बैठक; हरिजनों की सभा; अछूतो
मिति, राजभर एवं रैदास सभा के मानपत्र, धन-संग्रह ३९
ौ आने चार पाई; कांग्रेसजनों की बैठक; सायंकालीन
के समय धन-संग्रह ५५ रुपये सवा आना।

गाँधीजी ट्रेन द्वारा इलाहाबाद जाते

२ अगस्त

काशी। हरिजन-बस्तियों तथा कबीर मठ का निरीक्षण; कबीर-मठ में थैली तथा फुटकर संग्रह १२६ रुपये पौने तीन आने; काशी की पण्डित-मण्डली का मानपत्र, महिलाओं की सभा तथा थैली २,७८८ रुपये।

कानपुर

गाँधीजी का स्वास्थ्य इन दिनों बहुत गिरा हुआ था। उनको सब स्थानों पर जाना न पड़े और उन पर बोझ कम पड़े इसलिए संयुक्त-प्रान्त के हरिजन-प्रवास को दो मुख्य केन्द्रों में बाँट दिया गया था : पश्चिमी जिलों के लिए कानपुर तथा पूर्वी जिलों के लिए काशी। प्रबन्ध यह किया गया था कि उस क्षेत्र के विभिन्न जिलों के कार्यकर्त्ता इन प्रमुख केन्द्रों में ही अपनी संस्थाओं के मानपत्र या जिलों की थैलियाँ गाँधीजी को भेंट करेंगे। इससे उन्हें यात्रा का बहुत बोझ न उठाना पड़ेगा।

नगरपालिका

२२ जुलाई को कानपुर नगरपालिका और जिलाबोर्ड ने एक ही जगह अपने-अपने मानपत्र गाँधीजी को दिये। ये मानपत्र भी डा० जवाहरलाल रोहतगी के बँगले पर, जहाँ गाँधीजी ठहराये गये थे, दिये गये। नगरपालिका की विवरणी से ज्ञात हुआ कि उसने प्रशंसनीय हरिजन-सेवा की है। १६३२ के पूर्व ही उसने पन्द्रह हजार रुपये खर्च करके हरिजन कर्मचारियों के लिए कुछ मकान बनवा दिये थे। बा० ब्रजेन्द्रस्वरूप के अध्यक्ष चुने जाने के बाद से इस दिशा

भी प्रगति हुई। एक साल के अन्दर ही नगरप
० रुपये मूल्य के १८८ अच्छे हवादार और साफ-सुथ
स्था अपने हरिजन कर्मचारियों के लिए कर दी।

कमला नेहरू अस्पताल के शिलान्यास

परिषद्

कानपुर की जिला परिषद् ने यह निश्चय किय
के विद्यार्थियों की तरह हरिजन विद्यार्थी भी
मे भरती किये जायँ, और जो अध्यापक इस निश्च
उन्हें अर्थदण्ड दिया जाय। प्राइमरी पाठशालाओं

लड़कों से कोई फीस नहीं ली जाती। लड़कियों को सूत कातना सिखाया जाता है।

जिला परिषद् की कन्याशालाओं में सूत कताई सिखाने की बात की चर्चा करते हुए गाँधीजी ने कहा—"खादी में मेरा आज भी वैसा ही अटल विश्वास है। हरिजनों से तो खादी का बहुत अधिक सम्बन्ध है। सैकड़ों-हजारों हरिजन स्त्रियों और जुलाहों की इससे सेवा हो रही है। कातने या बुनने का काम अगर हम इन्हें न देते, तो ये भूखों मर जाते क्योंकि अन्य धन्धों के रास्ते तो उनके लिए बिल्कुल ही बन्द हैं। इसी तरह खादी से कितने ही मुसलमानों का भी काम चल रहा है।...... हजारों अधभूखे भारतीयों की कुछ-न-कुछ सहायता तो चर्खा कर ही रहा है। दरिद्रनारायण की सेवा बिना खादी के हो ही नहीं सकती।........."

सार्वजनिक सभा में

२२ जुलाई को सार्वजनिक सभा हुई। इसमें गाँधीजी को नागरिकों की ओर से मानपत्र और ग्यारह हजार की थैली भेंट की गयी। गाँधीजी ने इस अवसर पर भाषण करते हुए कहा—

"आपने मुझे जो यह ११,००० की थैली दी है उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।.........कानपुर में कुछ लोग ऐसे हैं जो मेरी हरिजन प्रवृत्ति को पाप-कार्य समझते हैं। इनकी ओर से जनता में बहुत से पर्चे बाँटे गये हैं जो सरासर असत्य से भरे हुए हैं। बड़े दुःख की बात है कि सनातन धर्म के नाम पर मिथ्या बातों का प्रचार किया जा रहा है। मैं सनातनियों से प्रार्थना करता हूँ कि वे मिथ्या-प्रचार की इस हीन प्रवृत्ति को रोकें।

"आपने यदि इस हरिजन-प्रवृत्ति का महत्व समझा होता

तो मुझे हजारों की जगह लाखों रुपये दिये होते। परन्तु धन तो अस्पृश्यता का अन्त नहीं कर सकता। वह तो तभी हो सकता है जब सवर्ण हिन्दुओं के हृदय पिघल जायँ। दाताओं ने यदि अनुभव कर लिया है कि अस्पृश्यता धर्म पर एक कलंक है तो उनके दान का महत्व सैकड़ों गुना बढ़ जाता है। यह तो आत्म-शुद्धि की प्रवृत्ति है। संख्या से इस प्रवृत्ति का कोई सम्बन्ध नहीं। ·········धर्म के नाम पर अपने पाँच करोड़ भाइयों के प्रति हम जो अत्याचार कर रहे हैं उसके लिए यदि दुनिया हमसे और हमारे धर्म से घृणा करे तो यह उचित ही है। यदि कोई शुद्ध रीति से शास्त्रों को, गीता को और वेदों को पढ़े तो उन धर्मग्रन्थों में उसे कहीं अस्पृश्यता नहीं मिलेगी। आज तो हम हिन्दू धर्म को भूल बैठे हैं।

"·········काली झण्डियाँ दिखानेवालों का मुझे उतना ही खयाल है जितना सुधारकों का·····पर सत्य के अनुकूल आचरण करना मैं अपना धर्म समझता हूँ। धर्म को कैसे छोड़ दूँ? ईश्वर क्या कहेगा? सवर्ण हिन्दू मेरा निरादर करें, मुझ पर पत्थर फेंकें या बम या रिवाल्वर चलावें, ऐसी बातों में मैं डिगने का नहीं। ·····जो सनातनी धर्म का इजारा लेकर बैठ गये हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि जिन शास्त्रों को वे मानते हैं मैं भी उन्हीं को मानता हूँ परन्तु हमारा मतभेद तो शास्त्रों का अर्थ लगाने में है।

"·····हरिजन आन्दोलन ऊँच-नीच के भाव तक ही सीमित है, रोटी-बेटी-सम्बन्ध से इसका कोई वास्ता नहीं। ····· मन्दिर-प्रवेश के विषय में यह बात है कि जब तक किसी मन्दिर में पूजा करनेवाले सवर्ण हिन्दुओं का काफी बहुमत उसके पक्ष में न हो तब तक वह हरिजनों के लिए न खोला जाय। मन्दिर तो हमारे प्रायश्चित्त-स्वरूप ही खुलने चाहिएँ·····।"

तिलक हाल का उद्‌घाटन

२४ जुलाई को कानपुर में तिलक हाल का उद्‌घाटन करते हुए गाँधीजी ने कहा—"……जब मैं पहली बार कानपुर आया था तब मेरी यहाँ किसी से जान-पहिचान नहीं थी। कानपुर आकर मैं गणेशशंकर विद्यार्थी को कैसे भूल सकता हूँ? उन्होंने ही मुझे अपने यहाँ टिकाया था। उस समय किसी और में यह हिम्मत नहीं थी। …सद्‌भाग्य से तिलक महाराज भी उसी दिन इस नगर में आये थे। उनको उस ज़माने में अपने घर टिकाना आसान काम न था। निर्भीक युवक गणेशशंकर से ही वह सम्भव था। इस नगर के साथ उनकी स्मृति हमारे हृदय में जुड़ी हुई है। …उन्होंने वीर मृत्यु पायी। उनको इस अवसर पर मैं कैसे भूल सकता हूँ?

"……तिलक महाराज ने अपना सारा ही जीवन भारत की उन्नति के लिए दे दिया। …यदि वह हिन्दू धर्म को नहीं जानते थे तो उसे कोई नहीं जानता। …परन्तु उन्होंने कभी ख्याल नहीं किया कि हम उच्च हैं और वे नीच हैं। उनके साथ मैंने इस विषय पर काफी बहस की थी।……
… उनकी विद्वत्ता उनकी आत्मशुद्धि और उनका संयम तो जबतक हिन्दुस्तान जीवित रहेगा, सारी दुनिया में अमर रहेगा। …तिलक महाराज का यह स्मारक अमर रहे, ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है।"

हरिजन कार्यकर्त्ताओं में

२४ जुलाई को कानपुर में प्रान्त के विविध स्थानों से आये हरिजन कार्यकर्त्ताओं को लगभग तीन घण्टे का समय गाँधीजी ने दिया और कार्य करने की पद्धति तथा उनकी कठिनाइयों के सम्बन्ध में उन्हें उपयुक्त परामर्श दिया।

विद्यार्थियों एवं हरिजनों की सभा में

शाम को विद्यार्थियों एवं हरिजनों की एक संयुक्त सभा में भाषण करते हुए गांधीजी ने कहा—" ...यदि हिन्दुस्तान के विद्यार्थी अपने अवकाश का समय हरिजन-सेवा में लगा दें तो अस्पृश्यता-निवारण की गति दसगुनी तेज हो जाय। अपने भाइयों की सेवा करना ही तो शिक्षा का श्रेष्ठ अंश है। मेहतरों के मानपत्र का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—"आप लोग समाज की जो सेवा करते हैं वह एक पवित्र धन्धा है। जो आपसे घृणा करते हैं, अधर्म करते हैं पर आप भी शौचादि के नियमों का पालन करें, मुर्दार मांस खाना छोड़ दें, दारू पीना और जुआ खेलना छोड़ दें।"

हरिजन बस्तियों का निरीक्षण

गांधीजी ने लगातार दो दिनों तक कानपुर नगर की हरिजन बस्तियों का निरीक्षण किया। उन्होंने फार्ब्स कम्पाउण्ड, विपत खटिक का हाता, लक्ष्मीपुरवा, हड्डी गोदाम, मीरपुर, मोतीमहल, बैरहना, केटल बैरक और ग्वालटोली की बस्तियों को बड़े ध्यान से देखा और वहाँ रहनेवाले हरिजनों से पूछताछ की। लक्ष्मीपुरवा, हड्डी गोदाम, बैरहना और ग्वालटोली की बस्तियों की दुर्दशा देखकर उन्हें बड़ा क्लेश हुआ और उन्होंने इनमें तुरन्त सुधार किये जाने की आवश्यकता की ओर नागरिकों तथा म्युनिस्पल अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया।

लखनऊ

२५ जुलाई को सुबह कुछ घण्टे गांधीजी ने लखनऊ में बिताये।

यहाँ उन्होंने दो भाषण दिये—पहिले महिलाओं
सार्वजनिक सभा में। सनातनियों का एक मानपत्र
किया। इन सभी सभाओं में उन्होंने यही कहा
धर्म पर लगा हुआ महान कलंक और मनुष्यता
तथा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही यह आवश्य
त्रुटियों का सुधार करें और प्रायश्चित्त-भावना से
गले लगायें।

काशी में

गाँधीजी २७ जुलाई को कानपुर से काशी
पुरी में ही आत्म-शुद्धि के इस प्रवास-यज्ञ की पूर्णाहु
थे। पर शुरू के कई दिन अन्य कार्यों में ही निक
को अखिल-भारतीय हरिजन-सेवक-संघ की बैठक

गाँधीजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की रजत जयंत
अवसर पर सारनाथ बुद्ध-मंदिर में।

हुए और संघ के आय-व्यय, उसके प्रबन्ध-कार्य और हरिजन-सेवकों के लिए एक प्रशिक्षण-संस्था स्थापित करने की आवश्यकता पर एक घण्टे से भी ज्यादा बोले ।

अखिल भारतीय हरिजन सेवक-संघ

२८--२९ जुलाई को काशी विद्यापीठ में हरिजन सेवक संघ के केन्द्रीय बोर्ड की बैठक हुई थी । २९ जुलाई को बैठक के अन्त में सदस्यों को सम्बोधित करते हुए गाँधीजी ने कहा :—"दो प्रश्न हैं जिनके सम्बन्ध में मुझे आप लोगों से कुछ कहना है—एक तो यह कि संघ का गठन किस प्रकार का हो, दूसरे एक ऐसी प्रशिक्षण-संस्था, जिसमें सदस्य या कार्यकर्त्ता हरिजन-सेवा की शिक्षा पा सकें ।......मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि चुनाव या जनतन्त्र-जैसी किसी चीज के लिए हमारे संघ में स्थान नहीं है । हमारी संस्था तो एक भिन्न प्रकार की है । मामूली अर्थ में वह कोई लोक-संस्था नहीं है । हम तो एक प्रकार के ट्रस्टी हैं जिन्हें हमने अपने-आप नियुक्त कर रखा है । पैसा केवल ट्रस्टी के रूप में हम अपने पास रखते हैं और केवल हरिजनों के हितार्थ उसका उपयोग करते हैं—और इस ढंग से कि वह सीधे हरिजनों की जेब में जाय । हमारे संघ का संगठन इस विचार को सामने रखकर हुआ है कि जिन भाइयों को हमने सदियों से तुच्छ मान रखा है, उनके प्रति हम अपना कर्त्तव्य-पालन करें ।......जनतन्त्रात्मक संस्था के चलाने में पैसा भी ज्यादा खर्च होगा और काम में देर भी होगी ।......कुछ लोग कहते हैं कि प्रबन्ध-कार्य में पैसा देनेवालों की भी आवाज होनी चाहिए । मेरी राय में वे भूलते हैं । मेरी दृष्टि में तो एक पाई देनेवाला और दस से पचास हजार तक देनेवाला......समान दाता है ।......घनश्यामदास के दस हजार रुपयों से भी उस एक पाई की कीमत स्यात् अधिक हो । उड़ीसा में मैंने खुद

अपनी आँखों देखा है कि वहाँ के गरीब आदमी किस प्रकार अपने फटे-पुराने चीथड़ों की गाँठ में बड़े जतन से बँधे हुए पैसे-पाई को बड़े प्रेम से हमारी झोली में डालते थे। हजारों रुपयों की अपेक्षा······मुझे तो गरीब की गाँठ की वह कौड़ी ही पाकर अधिक आशा और प्रसन्नता हुई है। आत्मशुद्धि के इस यज्ञ में गरीब की कौड़ी के बिना हजारों की थैलियाँ किसी अर्थ की नहीं। किन्तु आपके उस जनतन्त्र में उन हजारों गरीबों को तो वोट मिलेगा नहीं; प्रबन्ध में उन बेचारों की तो आवाज होगी नहीं। हम उनके नाम तक तो जानते नहीं। फिर भी हमारा उनके प्रति उतनी ही या उससे भी अधिक जवाब-देही है, जितनी हजारों की थैलियाँ देनेवाले बड़े-बड़े धनियों के प्रति। हमारी तो यह एक दातव्य संस्था है, जिसका अस्तित्व प्रामाणिक और योग्य प्रबन्ध पर निर्भर करता है।·········मेरे लिए तो यह विशुद्ध सेवा और प्रायश्चित्त का ही आन्दोलन है।·········"

इसके बाद गाँधीजी ने आजीवन हरिजन-सेवा करनेवालों का महत्व बताते हुए उनके लिए दक्षिण अफ्रीका के ट्रेपिस्ट मिशन-जैसी कोई शिक्षण-संस्था बनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

हरिजन बच्चों के बीच

३१ जुलाई को गाँधीजी विविध हरिजन शिक्षण-शालाओं के लगभग ५०० बच्चों से मिले। उन्होंने कहा—"बच्चों को देखकर हमें सन्तोष नहीं हुआ। वे ठीक तरह से साफ-सुथरे नहीं रखे जाते। हरिजन पाठशालाओं के शिक्षकों को सबसे पहिले तो सफाई पर ही ध्यान देना चाहिए। स्वच्छता ही तो धर्म का सार है।"

सार्वजनिक सभा में

३१ जुलाई को सार्वजनिक सभा हुई। सभा कई दृष्टियों से अपूर्व

थी। गाँधीजी के विरुद्ध जहर उगलनेवाले बड़े ही गन्दे पर्चे बाँटे गये थे। आशंका थी कि सभा में कहीं कोई अनिष्ट न हो परन्तु सब आशंकाएँ निर्मूल निकलीं। सभा बड़े शान्त वातावरण में हुई। काशी के विद्वान पण्डितों के मण्डल ने भी गाँधीजी को एक मानपत्र भेंट किया। एक विशेष आनन्द की बात यह थी कि वर्णाश्रम-स्वराज्य-संघ तथा भारत धर्म-महामण्डल के प्रतिनिधि-स्वरूप पं० देवनायकाचार्य भी आदरपूर्वक सभा में बुलाये गये थे। पण्डितजी के आते ही गाँधीजी ने अपना भाषण बन्द कर दिया और जनता से अनुरोध किया कि जिस आदर के साथ आप लोग मेरी बात सुन रहे हैं, उसी शिष्टता के साथ पण्डितजी की भी बातें सुनें। पं० देवनायकाचार्य जी को मुख्य शिकायत मन्दिर प्रवेश-बिल के सम्बन्ध में थी। उनके बाद मालवीयजी महाराज ने अस्पृश्यता-निवारण के समर्थन में संक्षिप्त किन्तु जोरदार भाषण दिया तथा शास्त्रों से अनेक प्रमाण देते हुए यह सिद्ध किया कि हरिजनो को भी अन्य हिन्दुओं की तरह समस्त सामाजिक और धार्मिक अधिकार मिलने चाहिए। इस सभा में भाषण देते हुए गाँधीजी ने कहा—"...हरिजन आन्दोलन धार्मिक आन्दोलन है। इसमें दुराग्रह को स्थान नहीं है। मैं कितना ही जतन क्यों न करूँ, मुझसे भी गलतियाँ हो सकती है और हुई भी हैं। ...जिस रूप में अस्पृश्यता इस समय मौजूद है, उसके लिए शास्त्र में स्थान नहीं है। अस्पृश्यता हिन्दू धर्म पर कलंक है। ... जलाशय पर एक कुत्ता भले ही चला जाय, परन्तु प्यासा हरिजन बालक वहाँ नहीं जा सकता। यदि गया तो मार खाने से बच नहीं सकता। इस समय की अस्पृश्यता मनुष्य को कुत्ते से भी हीन मानती है। ...ऐसी अस्पृश्यता को शास्त्र-सम्मत न मेरी बुद्धि मान सकती है, न मेरा हृदय। ...काशी के पण्डितों की ओर से मुझे जो स्वागत-पत्र मिला है, उसके लिए मैं आभार मानता हूँ। उसे मैं आप लोगों का आशीर्वाद समझता हूँ।"

डॉ० राधाकृष्णन के साथ वाराणसी में

हिन्दू विश्वविद्यालय में

१ अगस्त को हिन्दू विश्वविद्यालय की सभा में भाषण करते हुए गांधीजी ने कहा—"हिन्दू विश्वविद्यालय मेरे लिए कोई नयी वस्तु नहीं है। जब से यह आरम्भ हुआ, तभी से मालवीयजी महाराज ने मेरा सम्बन्ध उससे बाँध दिया है और आज तक वैसा ही बना हुआ है।...मुझे आशा है कि विद्यार्थी लोग विद्या प्राप्त करके उसका सद्व्यय करेंगे और संकुचित अर्थ में धर्म को ग्रहण नहीं करेंगे।" इसके बाद आचार्य ध्रुव के अनुरोध पर गीता द्वारा अपने जीवन पर पड़े प्रभावों का उन्होंने उल्लेख किया।

महिला-सभा में

२ अगस्त को हरिश्चन्द्र हाई स्कूल में जुड़ी महिलाओं की सभा में

भाषण करते हुए गाँधीजी बोले—"…हिन्दू धर्म में बहुत दिनों से छुआछूत का भूत दाखिल हो गया है, जिससे दया और धर्म प्रतिदिन क्षीण होते जा रहे हैं। हम सब एक ही ईश्वर के बनाये हैं। तब कोई उनमें भेद-भाव कैसे कर सकता है? …शास्त्र यही समझता है कि सबसे महान यज्ञ इस जगत् में सत्य है। आप माताओं से मेरी प्रार्थना है कि छुआछूत के भूत को भूल जायँ। ……दूसरी बात यह है कि आपको विदेशी तथा मिलों के वस्त्र को त्याग देना चाहिए और खद्दर पहनना चाहिए। तीसरी बात सब माताओं को कुछ-न-कुछ विद्याभ्यास करना चाहिए। चौथी बात यह कि आभूषणों का त्याग करें। माताओं की शोभा आभूषणों से नहीं, हृदय से है। ……हे राष्ट्र की माताओं, हे धर्म की रक्षिकाओं, तुम्हारा कल्याण हो। भगवान हमारी पवित्र भारत-भूमि का भला करें।"

हरिजन बस्तियों का निरीक्षण

२ अगस्त को गाँधीजी ने इंग्लिसिया लाइन, चेतगंज, मलदहिया और कबीरचौरा की बस्तियाँ देखीं। फिर कबीरमठ में गये। वहाँ की स्वच्छता और सादगी से तथा इस सूचना से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई कि कबीरपन्थियों में अस्पृश्यता नहीं मानी जाती।

इस प्रकार गाँधीजी का देशव्यापी हरिजन-प्रवास समाप्त हुआ। इस यात्रा में लगभग ८ लाख रुपये एकत्र हुए। करोड़ों व्यक्तियों तक अस्पृश्यता-निवारण का सन्देश पहुँचा और देश में अभूतपूर्व जागृति आयी, छुआछूत की भावना कम हुई, सैंकड़ों मन्दिरों के द्वार हरिजनों के लिए खुल गये और उनकी दुर्दशा की ओर सरकार, स्थानीय सभाओं तथा जनता का ध्यान गया।

: १४ :

ग्रामोद्योग प्रदर्शनी तथा उसके पश्चात्

२८ अक्तूबर १९३४ को बम्बई के कांग्रेस-अधिवेशन में गाँधीजी ने अपने को कांग्रेस के नेतृत्व से अलग कर लिया और ग्रामोद्योग तथा अन्य रचनात्मक कार्यों मे ही अपना अधिकांश समय लगाने का निश्चय किया। ग्रामोद्योग संघ के कार्यों में बराबर दिलचस्पी लेने लगे। इन दिनों उनका स्वास्थ्य भी गिर गया था।

लखनऊ में

अप्रैल १९३६ में कांग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में हुआ। जवाहर लालजी इसके अध्यक्ष थे। इस अवसर पर कुछ पहले से ही, चरखा-संघ तथा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग-संघ ने मिलकर एक विशाल ग्रामीण प्रदर्शनी का आयोजन किया था। २८ मार्च को गाँधीजी ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर भाषण देते हुए गाँधी जी ने कहा—

"......इस तरह की प्रदर्शनी के बारे में बरसों से अपने दिल में जो कल्पना मैं रखता आया था, उसको मैं इस प्रदर्शनी में देखता हूँ। १९२० में पहली बार हमारा ध्यान गाँवों की ओर गया। ......अहमदाबाद की कांग्रेस के साथ जो प्रदर्शनी हुई थी, उसमें मैंने इस विषय में, अपनी कुछ कल्पनाओं को मूर्त्त रूप देने की चेष्टा की थी। ......मैंने सदा ही कहा है

कि हिन्दुस्तान हमारे चन्द शहरों से नहीं, सात लाख गाँवों से बना है। ......इन देहातों की जो हालत है, उसे मैं खूब जानता हूँ। मेरा खयाल है कि हिन्दुस्तान को घूमकर जितना मैंने देखा है, उतना कांग्रेस के नेताओं में से किसी ने नहीं देखा है। ......हिन्दुस्तान के देहातों को शहरवालों ने इतना चूसा है कि उन बेचारों को अब रोटी का एक टुकड़ा भी समय पर नहीं मिलता। ......उन्हें अगर चावल मिलता है तो दाल नहीं मिलती और रोटी मिलती है तो साग-भाजी नहीं मिलती। कहीं तो सिर्फ सत्तू खाकर जीते हैं। ....खादी के अलावा दूसरे भी अनेक धन्धे हैं, जो गाँव वालों के जीवन के लिए बहुत आवश्यक और उपयोगी हैं और जिनसे उनकी हालत, एक बड़ी सीमा तक सुधारी जा सकती है। इसके लिए हमें यह देखना है कि देहातवाले कैसे रहते हैं, क्या काम करते हैं और उनके काम को कैसे तरक्की दी जा सकती है।

"......इस बार की प्रदर्शनी अपने ढंग की पहली प्रदर्शनी है। इसकी रचना के पीछे कल्पना मेरी है।......इस नुमाइश के जरिये हम दिखाना चाहते हैं कि भूख से बेहाल इस हिन्दुस्तान में भी आज ऐसे हुनर, उद्योग-धन्धे और कलाकौशल मौजूद हैं, जिनका हमें कभी खयाल भी नहीं होता। इस नुमाइश की यही विशेषता है।......इसे कुछ सीखने की दृष्टि से देखें, तमाशे की दृष्टि से नहीं। जो एक बार इस नुमाइश को देख लेगा, उसे फौरन ही पता चल जायगा कि हिन्दुस्तान के देहातों में अब भी कितनी ताकत भरी पड़ी है। देहातों की इस ताकत को पहिचान कर जो २८ करोड़ देहातियों की सेवा करता है, वही कांग्रेस का सच्चा सेवक है। जो इन करोड़ों की सेवा नहीं करता, वह कांग्रेस का सरदार या नेता हो सकता है, सेवक या बन्दा नहीं बन सकता।"

गांधीजी लगभग १५ दिन लखनऊ रहे। वह कांग्रेस अधिवेशन में शरीक नहीं हुए।

१२ अप्रैल को उन्होंने पुनः प्रदर्शनी में आयीं विभि
कलापूर्ण वस्तुओं तथा गाँवों से आये कारीगरों की ओर ल
आकर्षित करते हुए उन्हें अपना संरक्षण तथा सहायता
की तथा कहा—"मैंने जो चित्र आपके सामने खींचा है, य
दिलों को हिला नहीं सकता, और भूखों मरते देहातिय
थोड़ा-सा भी त्याग करने के लिए आपको प्रेरित नहीं क
ईश्वर ही आपका मददगार है।" उन्होंने साम्प्रदायि
लिए भी मार्मिक अपील की।

काशी में

भारत माता का मन्दिर

अक्तूबर (१९३६) के मध्य भाग में वह बा० शिव
आग्रह पर भारतमाता मन्दिर का उद्घाटन करने काशी
पिछले ५ वर्षों से गढ़ी जा रही थी। इसमें संगमरमर

गाँधीजी के हाथ का बनाया हुआ नमक।

जो बड़ी सावधानी से काट-छाँट कर तैयार किये गये थे, लगे। इस मानचित्र में तिब्बत से लेकर लंका तक, चीन की दीवार से हेरात तक का प्रदेश दिखाया गया है। धरातल भूमि के एक इंच में ६ मील ७०४ गज का प्रमाण माना गया है, अर्थात् नक्शा ३१ फुट २ इंच लम्बा तथा ३० फुट २ इंच चौड़ा बना है। ऊँचाई में एक इंच में दो हजार फुट की माप रखी गयी है। गौरीशंकर का शिखर पौने पन्द्रह इंच ऊँचे संगमरमर के एक ही टुकड़े से बनाया गया है। और इसी अनुपात से भारतीय पर्वतों के चार सौ से ऊपर शिखर बनाये गये हैं। भव्य शिखरों के साथ हिमाच्छादित कैलास की ३०० मील लम्बी तथा १५० मील चौड़ी विशाल पर्वत-श्रेणी सभी को आकर्षित करती है। यह मन्दिर कला की दृष्टि से ही नहीं ज्ञान और शिक्षण की दृष्टि से भी अनुपम है।

उद्घाटन के पूर्व चारों वेदों का चार बार पाठ और मंगल-अनुष्ठान हुआ। फिर प्रत्येक धर्म की प्रार्थना हुई। मन्दिर की भावना समझाने के लिए बा० भगवानदास जी ने एक सुन्दर भाषण दिया।

उद्घाटन करते हुए गाँधीजी ने कहा—"सेगाँव से कहीं न जाने-वाला व्यक्ति यहाँ दौड़ा आया, क्योंकि प्रेम एक विचित्र वस्तु है। ...सो यह प्रेम का धागा ही मुझे यहाँ खींच लाया है। ......सबेरे जब मैं पूर्णाहुति देने आया तो उस समय वेदमन्त्र सुनते-सुनते मुझे २० वर्ष से हम जो श्लोक अपनी प्रभात की प्रार्थना में बोलते हैं उसका स्मरण हो आया :

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

यह विष्णुपत्नी ही हमारा पोषण करती है, रक्षण करती है, हम सब उसके ऋणी हैं। उससे हमें सदा क्षमा माँगनी चाहिए। उसी का चित्र मेरे सामने खड़ा हो गया। जिस माता ने हमें जना दिया, वह तो

थोड़े ही वर्ष जीवित रहेगी, किन्तु यह माता तो सदैव है, और यदि वह नहीं है तो हम भी नहीं हैं। भारतमाता इसी माता का अंश है और उसका मानचित्र आज वेद-मन्त्रों से पुनीत हुआ है। शिवप्रसाद जी ने सबको बिना किसी प्रकार की शर्त के इस माता की आराधना के लिए निमन्त्रित किया है।......यहाँ हम सब अपने दिल का द्वेष और मैल भूलकर एकत्र हों और भारत-माता की सेवा की प्रतिज्ञा करें।"

उसी दिन उन्होंने काशी विद्यापीठ के प्रांगण में एक आम के पौधे का रोपण भी किया। काशी में रहते समय वह नागरी प्रचारिणी सभा में कला-भवन को देखने भी गये।

: १५ :

महायुद्ध-काल में

१६३६ में युरोप की स्थिति तेजी से बदल रही थी। हिटलर की अप्रत्याशित सफलताओं ने शक्ति का समस्त सन्तुलन बदल दिया था। दिन-दिन परिस्थितियाँ भयावह होती जा रही थीं। बाद में जापान के भी हिटलर की ओर युद्ध में कूद पड़ने से पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। इस समय कांग्रेस पुनः गाँधीजी के नेतृत्व में आ गयी थी और उन्होंने अपनी शर्तों पर देश का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया था। कांग्रेस ने, ब्रिटिश सरकार से कोई सन्तोषजनक समझौता न होने की अवस्था में सत्याग्रह चलाने के समस्त अधिकार गाँधीजी के हाथ में दे दिये थे।

समझौता न होना था, न हुआ। अक्तूबर १६३६ के अन्त तक विभिन्न प्रान्तों के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों ने इस्तीफा दे दिया था और सारा देश उत्सुकतापूर्वक गाँधीजी के अगले कदम की प्रतीक्षा कर रहा था।

इलाहाबाद में

मध्य नवम्बर (१६३६) में भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक इलाहाबाद में हुई। कांग्रेस कार्यसमिति तथा नेताओं की अनौपचारिक बैठक तो कई दिनों तक होती रही। गाँधीजी इनमें बराबर शामिल रहे

और कांग्रेस का मार्गदर्शन करते रहे। कार्यसमिति की गाँधीजी ने संयुक्त प्रान्त के प्रमुख कांग्रेस-कार्यकर्ताओं से उनके प्रश्नों के उत्तर दिये।

कमला नेहरू अस्पताल का शिलान्यास

१९ नवम्बर १९३९ को इलाहाबाद में गाँधीजी ने अस्पताल का शिलान्यास किया और अवसर के उपयुक्त भाषण दिया। २३ नवम्बर तक वह इलाहाबाद रहे।
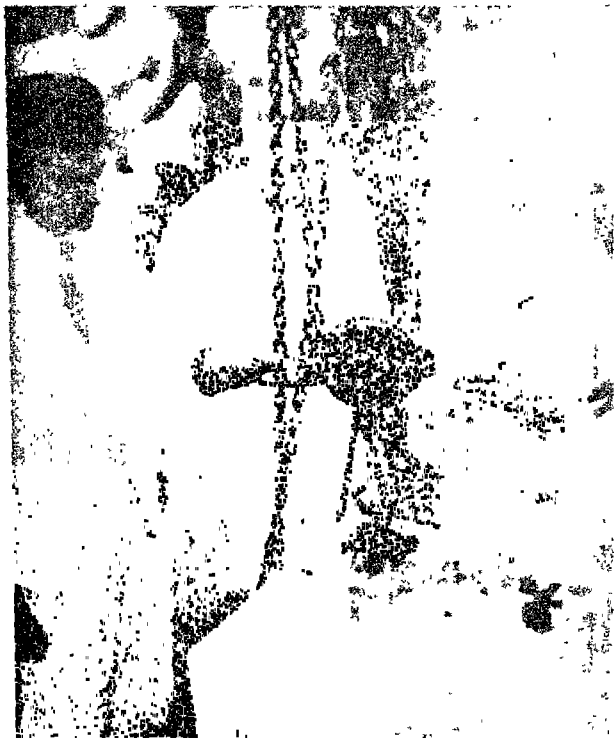
राष्ट्रपिता द्वारा कमला नेहरू अस्पताल

कमला नेहरू अस्पताल का उद्घाटन

फरवरी १९४१ में गाँधीजी पुनः इलाहाबाद आये और डेढ़ वर्ष पूर्व जिस कमला नेहरू अस्पताल का शिलान्यास किया था, उसका उद्घाटन २८ फरवरी को किया। इस अवसर पर स्व० कमला नेहरू के आत्मार्पण, देश-सेवा तथा त्याग एवं बलिदान का स्मरण करते हुए उन्होंने आशा प्रकट की कि उनकी स्मृति में बना यह अस्पताल उसी प्रेरणा से दुखी मानवता की सेवा करता रहेगा।

काशी : हिन्दू विश्वविद्यालय के जयंती-समारोह में

१९४२ की जनवरी में गाँधीजी काशी आये और २१ जनवरी को हिन्दू विश्वविद्यालय के रजत-जयन्ती-समारोह में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी में भाषण किया। मालवीयजी महाराज के सरल, स्वच्छ जीवन तथा देश-सेवा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने और उनके दीर्घजीवन की कामना करने के बाद उन्होंने कहा—
"......जब एक पर एक वक्ता मंच पर व्याख्यान देने के लिए आते तब मेरे हृदय में आता था कि कोई तो होता जो हिन्दी में, या उर्दू या हिन्दुस्तानी में, संस्कृत में, मराठी में या किसी भी भारतीय भाषा में बोलता किन्तु मेरे या आपके भाग्य में वैसा नहीं लिखा था। क्यों ? क्योंकि हम गुलाम हैं और जिन्होंने हमें गुलाम बना रखा है, उनकी भाषा से चिपटे हुए हैं। अपनी त्रुटियों के लिए अंग्रेजों को दोष देने का फैशन-सा हो गया है।......मैंने अंग्रेजी को अपनी अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में अपनाने के लिए कभी अंग्रेजों को दोष नहीं दिया है। हम स्वयं वर्ष पर वर्ष अंग्रेजों-जैसी अंग्रेजी सीखने में बिता देते हैं और जब कोई अंग्रेज धाराप्रवाह शुद्ध अंग्रेजी बोलने पर हमारी पीठ ठोंक

देता है तो हमारी छाती फूल उठती है। जरा सरल गणित लगाकर देखिए तो कि अंग्रेजी को इस प्रकार सीखने में, जैसे वह हमारी मातृ-भाषा हो, हमारे युवकों का कितना मूल्यवान समय नष्ट हो जाता है।

कमला नेहरू अस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर

"और यह सब हो रहा है उस हिन्दू विश्वविद्यालय में जिसकी प्रशंसा भारतीय संस्कृति के जीवित प्रतीक के रूप में की जा रही है। ......अध्यापक एक परम्परा की, जिसे उन्होंने विरासत में प्राप्त किया है, उपज हैं और छात्र उनसे जो कुछ मिल जाय, उसी से सन्तुष्ट हो जाते हैं।............आश्चर्य तो यह है कि वे जरा-जरा सी बात पर हड़ताल कर बैठते हैं किन्तु इस बात पर हड़ताल नहीं करते कि हम भारत की राष्ट्रभाषा में ही पढ़ेंगे।............जब मैं अंग्रेजी के भाषण सुन

। तो अपनी जनता के धैर्य तथा सहज शिष्टता को देखकर
। एक शब्द न समझने पर भी, हम पर टूट नहीं पड़ती,
रना चाहिए ।"

इसके बाद उन्होंने यह बताते हुए कि हमारे विश्वविद्यालय
ल भर हैं, उनकी अपनी कोई विशेषता नहीं है, छात्रों से
जीवन की सरलता और सादगी अपनाने की अपील की

संयुक्त प्रान्त के कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के बीच

२२ जनवरी को दूर-दूर से मिलने के लिए आये हुए संयु

आनन्द भवन इलाहाबाद का वह कमरा जहाँ गांधीज

के कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं से गाँधीजी ने भेंट की। उन्हें देश की विशेष परिस्थिति बतायी तथा आगे उत्पन्न होनेवाली परिस्थितियों में उन्हे किस प्रकार काम करना चाहिए, यह समझाया। उन्होंने यह भी कहा कि मृत्यु का खतरा तो हिंसा में भी है, अहिंसा में भी है, तब अहिंसात्मक रूप से मरण की तैयारी हम क्यों न करें ? सरकार सब जगह न पहुँच सकती है, न हमारी रक्षा कर सकती है। ऐसे समय हमें अपने पैरों पर खड़ा होना होगा।

इस यात्रा में गाँधीजी ने सारनाथ जाकर बुद्ध मन्दिर के दर्शन भी किये।

संयुक्त प्रान्त में उनके अन्तिम चरण

१९४६ के वसन्त मे शिमला में वाइसराय तथा कांग्रेस नेताओ के बीच, भारतीय स्वतन्त्रता के प्रश्न पर लम्बी चर्चाएँ होती रहीं। इन से गाँधीजी बहुत थक गये। डाक्टरों ने उन्हें गर्मियों में दो महीने किसी पहाड़ी स्थान पर रह कर विश्राम लेने को कहा। बड़ी कठिनाई से वह मई के अन्तिम सप्ताह में मसूरी पहुँचे और वहाँ लगभग पन्द्रह दिन रहे। १० जून को वह पुनः दिल्ली लौट गये।

मसूरी में वह बिड़ला हाउस में ठहरे थे। सदा की भाँति सुबह-शाम की प्रार्थना में और भी बहुत से लोग आते थे पर सब मिलाकर उनको वहाँ काफी विश्राम मिला। वहाँ की प्राकृतिक सुषमा, प्राणप्रद वायु और शान्त वातावरण का उनके मन और शरीर पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वह यहाँ ज्यादा दिन रहना चाहते थे किन्तु कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना आजाद को पग-पग पर उनसे परामर्श की आवश्यकता पड़ती थी, इसलिए उन्हें शीघ्र लौट जाना पड़ा।

ल में

. अनासक्ति आश्रम

ाँधीजी की इस प्रान्त में अन्तिम यात्रा थी।

प्रकार हम देखते हैं कि लगभग पचास वर्ष तक इस
न्बन्ध बराबर बना रहा। उनके मार्गदर्शन में हम ज
हमने स्वतन्त्रता की अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं। इस प्र
न के जागरण का अधिकांश श्रेय उन्हीं को है।

कुछ चित्र

दर, गुजरात
मे गांधीजी ने
यें : गांधीजी

)
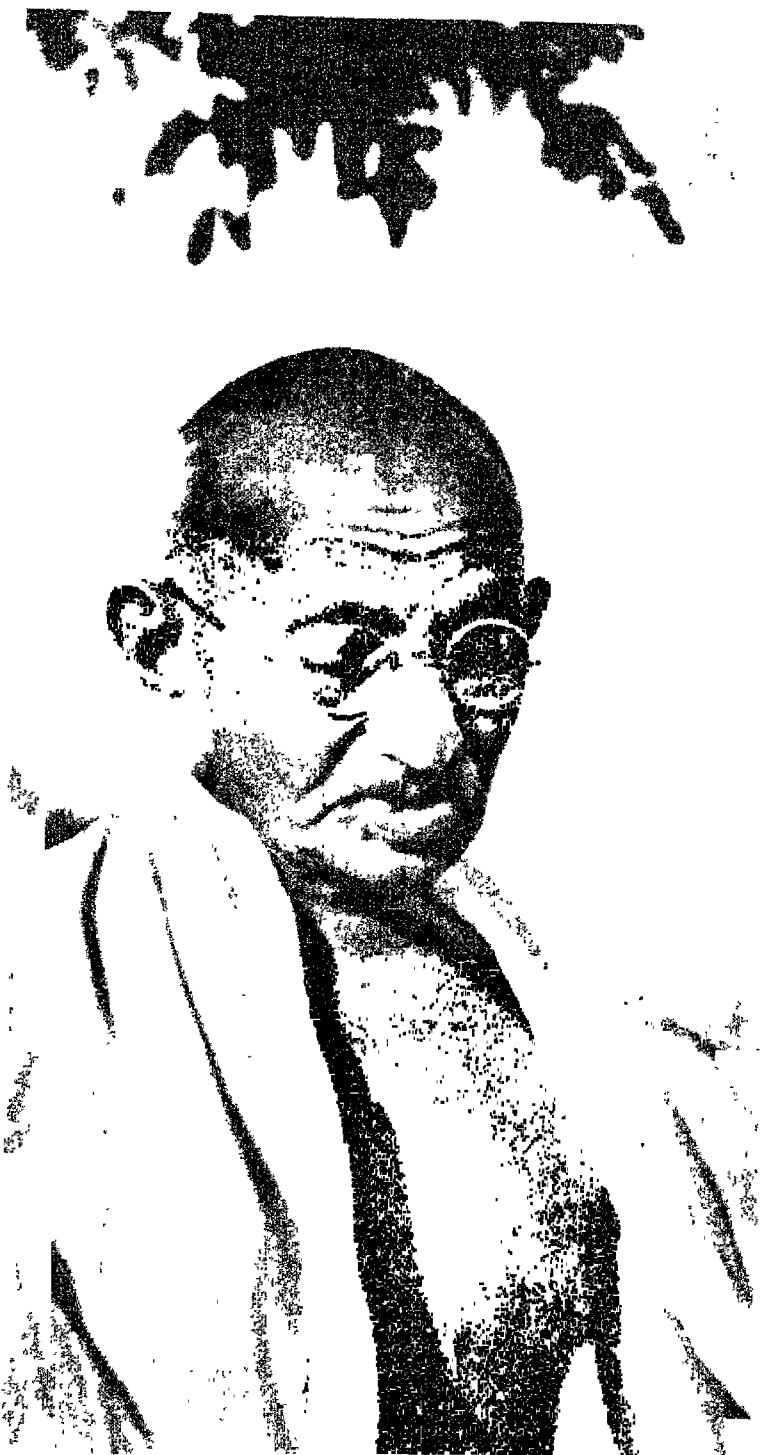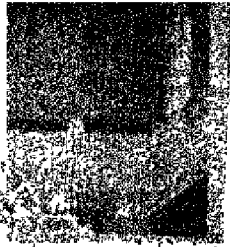
लन्दन में कानून के विद्यार्थ

बैरिस्टर के-रूप में

अफ्रीका में
मय (१९०६)
ाडी के सार्जेण्ट
ों मे : दायें :
मे सत्याग्रही
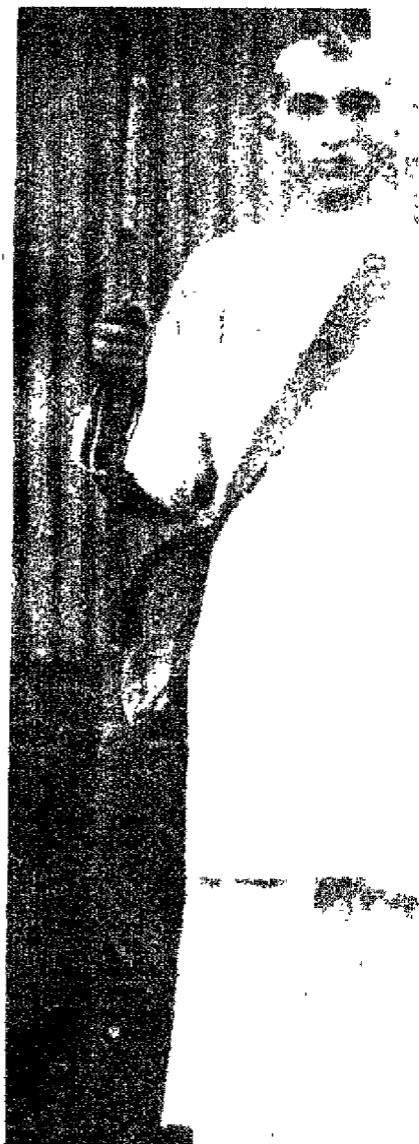
: : १९१५ में भारत
पर अहमदाबाद में हुए
स्वागत समारोह में
. १९१८ में खेड़ा
ात) सत्याग्रह के समय

: बायें : बा और बापू
अफ्रीका से वापस अ
(१९१५) : नीचे :
की बालिका इंदिरा
साथ

बरमती के सत्याग्रह आश्रम में—

गांधीजी एक विचारपूर्ण मुद्रा

गोलमेज
स पर ल

स्विटज़र
रोलां के

: ऊपर : गांधी
बापू और पण्डि
मोहन मालवीय
कांग्रेस अधिवेश
१९३४ : बाएं
सुभाष चन्द्र बो
हरिपुरा कांग्रेस

ारिणी
वर्धा–
६२

त्याग्रह के समय विनोबा भावे
देते हुए (१९४०)

व रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में बा और बापू

मार्शल च्यांग काई शेक के साथ, कलकत्ता, फरव

ने वाला

: बायें : उ
बम्बई के
“भारत-छ
करते हु
तीसरे दर्जे
हरिजनों के

हुए

१९

समय पर पहुँचने के लिये सवारी

की बैठक, वर्धा, फरवरी १९४२

ेता

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक, बम्बई १९४६

: ऊपर : नोआखाली (पूर्व
पैदल यात्रा पर (नवम्बर

भारतीय कांग्रेस कमेटी
ी जून १९४७ : दायें :
अंग्रेज वायसराय लॉर्ड
ाथ

(२५)

गांधीजी बर्मा के प्रधान मंत्री

अमर लेखनी

सेवाग्राम मे गाँ

७५ वर्ष की उम्र में

ली स्थित बख्तियार चिश्ती की दरगाह में, २७ जनवरी १९४८

ई दिल्ली में २९ जनवरी १९४८ को प्रार्थना सभा में जाते हुए